UNIVERSAL
LIBRARY
OU_186129
UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVER .Y LIBRARY

Call No H378 Accession No H3495

Author G97

Title

This book should be returned on or before the date last marked below

विषय सूची

		पृष्ठ
१	योजना	१
२	विकास	११
३	विश्वविद्यालय की स्थापना	१७
४	विस्तार	२२
५	आगे प्रगति	२८
६	बाढ़ और पुनर्निर्माण	३६
७	रजत जयन्ती	४३
८	विद्यासभा की स्थापना	४६
९	स्वतन्त्र भारत मे गुरुकुल	५८
१०	वर्तमान काल	६४
११	अन्य विभाग	७४
१२	संस्कृत सेवा	८३
१३.	सिंहावलोकन	९०
१४	स्नातको की प्रान्तवार सूचि	१०१
१५.	आय व्यय का तुलनात्मक विवरण	१०२
१६.	प्राध्यापक तथा अध्यापक	१०३
१७	पुरातत्व संग्रहालय	१०६
१८	गुरुकुल की सम्पत्ति	११३
१९	कृषि विद्यालय का प्रगति विवरण	११४
२०.	गुरुकुल के सम्बन्ध मे लोकमत	११७

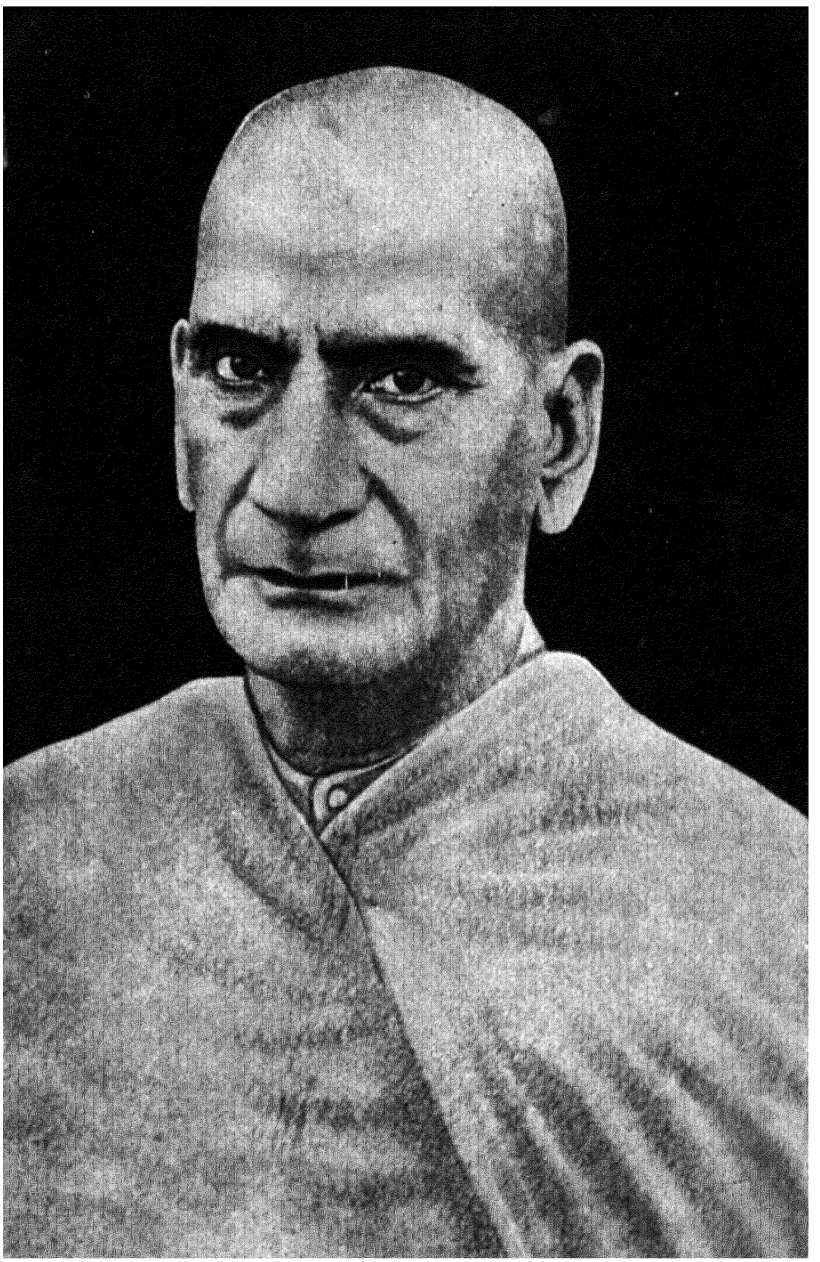

१ :

योजना

१९वी सदी मे भारत के अन्धकार पूर्ण अन्तरिक्ष मे जिन महानुभावो ने जागृति की ज्योति जगाई उनमे ऋषि दयानद का सन्देश बहुत व्यापक था, वे युग प्रवर्तक ऋषि थे, जिन्होने शिक्षा, राजनीति, समाज-सगठन आदि सब क्षेत्रो मे नये विचारो का सदेश दिया। भारत को विदेशी शासन से मुक्त हो स्वराज्य प्राप्त करना चाहिये इस बात को सब से पहले ऋषि दयानद ने ही जनता के सम्मुख रखा था। भारत मे शासन का क्या रूप हो, समाज का सगठन किस प्रकार से हो, और यह देश किस तरह अपने प्राचीन गौरव को प्राप्त कर ससार का शिरोमणि बने, इन सब बातो के सबन्ध मे ऋषि दयानद न अपने निश्चित विचार "सत्यार्थ-प्रकाश" आदि ग्रन्थो में प्रकट किये। ये विचार न केवल भारत के लिये उपयोगी है, अपितु सम्पूर्ण ससार को अशान्ति और अव्यवस्था के मार्ग से हटा कर सुख-समृद्धि के पथ पर ले जा सकते है। इन्ही विचारो और आदर्शों को क्रिया मे परिणत करने के लिये ऋषि दयानद ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

अन्य क्षेत्रो के समान शिक्षा के क्षेत्र मे भी आर्य समाज के विशेष आदर्श है। ऋषि दयानद न अपने समय मे प्रचलित शिक्षापद्धति मे अनेक दोष अनुभव कर प्राचीन आर्ष शिक्षाप्रणाली का प्रतिपादन किया। ऋषि ने उसे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का नाम दिया। उस समय भारत मे शिक्षा की मुख्यतया दो

प्रणालियाँ प्रचलित थी। एक भारत के ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रारम्भ की गई थी और दूसरी पुरानी परम्परा के अनुसार पण्डित-मण्डली में प्रचलित थी। सरकार द्वारा प्रचलित प्रणाली भारत के राष्ट्रीय तथा धार्मिक आदर्शों के प्रतिकूल थी। उसमें भारत की भाषा, धर्म, सभ्यता, साहित्य तथा संस्कृति की सर्वथा उपेक्षा की गई थी। पंडित-मण्डली की शिक्षा-पद्धति समय की आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं करती थी। उसमें वर्तमान युग के ज्ञान-विज्ञानों को कोई स्थान प्राप्त न था। चरित्र निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य, त्याग, तपस्या आदि जिन आदर्शों का पालन आवश्यक है, उनका दोनों प्रणालियों में महत्व न था। ऋषि दयानंद ने अनुभव किया कि भारत में प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार कर इन दोषों को दूर किया जाना चाहिये। इसी लिए उन्होंने शिक्षा के निम्नलिखित आदर्श और सिद्धान्त प्रतिपादित किये—

१ यह राज-नियम और जातिनियम होना चाहिये कि आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के लड़कियों को घर में न रखें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें, जो नहीं भेजे वह दण्डनीय हो।

२ लड़कों और लड़कियों के गुरुकुल पृथक् पृथक् हों।

३ विद्यार्थी लोग गुरुकुलों में ब्रह्मचर्य का पालन करें। २५ वर्ष पूर्व बालक का और १६ वर्ष से पूर्व कन्या का विवाह न हो सके।

४ गुरुकुल में सबको तुल्य वस्त्र, खान, पान, आसन दिये जावें, चाहे वह राजकुमार व राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र के सन्तान हो। सब के साथ एक जैसा व्यवहार किया जावे।

५ गुरुकुलों में गुरु और शिष्य पिता पुत्र के समान रहें।

६ विद्या पढ़ने के स्थान गुरुकुल शहर व ग्रामों से दूर एकान्त में हों।

७ शिक्षा में वेदांग तथा सत्य शास्त्रों को प्रमुख स्थान दिया जाय

साथ ही राजविद्या, सगीत, नृत्य, शिल्पविद्या, गणित, ज्योतिष, भूगोल खगोल, भृगर्भविद्या, यन्त्रकला, हस्तक्रिया, चिकित्साशास्त्र आदि का भी यथोचित रूप मे अभ्यास कराया जावे ।

नि सन्देह ऋषि दयानद के ये विचार शिक्षा के क्षत्र मे अत्यन्त क्रान्तिकारी विचार थे । आर्य समाज के सम्मुख शुरू मे ही उन्हे क्रिया मे परिणत करने की ममस्या उपस्थित थी ।

१९वी शताब्दी के अन्त मे कुछ लोगो के हृदय मे यह विचार उत्पन्न हुआ कि ऋषि दयानन्द के शिक्षा सम्बन्धी आदेशो के अनुसार गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार करना चाहिये । महात्मा मुन्शीराम इस आन्दोलन के प्रवर्तक तथा प्रमुख नेता थे । ऋषि दयानद ने आदर्श शिक्षा का जो मार्ग दिखलाया था, महात्मा मुन्शीराम उसके पहले पथिक बने । आज से ३५ वर्ष पूर्व गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का पुनरुद्धार एक असम्भव कल्पना, एक अक्रियात्मक आदर्श समझा जाता था । महात्मा मुन्शीराम के प्रयत्न से यह असम्भव कल्पना सम्भव हो गयी और शिक्षा के क्षेत्र मे एक नई क्रान्ति हुई ।

गुरुकुल के लिय पहले पहिल आन्दोलन सन् १८९७ मे प्रारम्भ हुआ । उन दिनो महात्मा मुन्शीराम जालन्धर से 'सद्धर्मप्रचारक' प्रकाशित करते थे । सद्धर्मप्रचारक मे उसके लिये प्रबल आन्दोलन किया गया 'आर्य पत्रिका' आदि अन्य सामाजिक पत्रो ने इसका पक्षपोषण किया । नवम्बर १८९८ के आर्य प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन में गुरुकुल खोलने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया । वह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया ।

गुरुकुल को खोलने का प्रस्ताव तो स्वीकृत हो गया, पर धन के बिना गुरुकुल खोलना सभव कैसे था ? धन एकत्रित करने का कार्य भी महात्मा मुन्शीराम जी ने अपने ऊपर लिया । उन्होने प्रतिज्ञा की कि जबतक

३० हजार रुपया एकत्रित नही कर लेंग अपने घर मे पैर नही रखेंगे। आजकल ३० हजार रुपये किसी सार्वजनिक कार्य के लिये एकत्रित करना बहुत कठिन नही है। पर अब से ५० वर्ष पूर्व जब कि किसी सार्वजनिक कार्य के लिये दान देने का अभ्यास जनता को नही था, ३० हजार रुपया इकट्ठा करना एक असाधारण बात थी। महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करने निकल पडे। आठ महीने लगातार घूमने के बाद ३० हजार रुपये एकत्रित हुए। महात्मा मुन्शीराम जी की यह असाधारण सफलता थी, उनके अटल विश्वास और हार्दिक धर्मप्रेम की यह अद्भुत विजय थी। इस सफलता के अभिनन्दन स्वरूप लाहौर मे उनका शानदार जलूस निकला। सर्वत्र फूलो के हारो तथा उत्साहपूर्ण जयकारो के साथ उनका स्वागत हुआ।

गुरुकुल के नियम आदि बनाने का कार्य भी महात्मा मुन्शीराम जी के सुपुर्द किया गया और २६ दिसम्बर १९०० के प्रतिनिधि सभा के साधारण अधिवेशन मे गुरुकुल के प्रथम नियम स्वीकृत किए गये थे। गुजरावाला के लाला रलाराम उन दिनो आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान थे। उनके हस्ताक्षरो से गुरुकुल की प्रथम नियमावली प्रकाशित हुई। उसमे २० पृष्ठ की भूमिका थी, जिसमे इन नियमो की व्याख्या की गई है। गुरुकुल के उद्देश्य आदि के सम्बन्ध मे यह नियमावली सभा की प्रामाणिक घोषणा है। गुरुकुल की स्थापना के समय महात्मा मुन्शीराम जी के ही नही, अपितु उस समय की आर्य प्रतिनिधि सभा के क्या विचार थे, यह जानने के लिये इस प्रथम नियमावली से बढकर और कोई साधन नही है। इसमे गुरुकुल की स्थापना के निम्नलिखित आठ कारण बताये गए है।

१. वेद आर्य समाज के प्राण हैं। विशाल सस्कृत साहित्य का मूलस्रोत वेद ही है। वेद के अध्ययन के लिये गुरुकुल की आवश्यकता है।

२ सस्कृत का अध्ययन तब तक पूर्ण नही हो सकता जब तक अगो और उपागो के साथ वेद का अध्ययन न किया जाये। अत ऐसे शिक्षणालय की आवश्यकता है, जहा सस्कृत साहित्य के साथ साथ वैदिक साहित्य का भी अध्ययन हो।

३ भारत की शिक्षा सच्चे अर्थों मे राष्ट्रीय तभी हो सकती है जब यहा के शिक्षणालयो मे सस्कृत का अध्ययन हो। ब्रिटिश सरकार ने जो कुछ भी शिक्षा प्रचलित की है, वह भारतीयो को "अग्रेज" बना रही है, वह भारतीयो मे देश-भक्ति का विनाश कर रही है। मुसलिम शासन की अनेक शताब्दिया जिन हिन्दुओ को अपना दास नही बना सकी, उन्हे दस बीस वर्षों की अग्रेजी शिक्षा दास बनाने मे समर्थ हो रही है। अत आवश्यकता इस बात की है कि हम आर्यजाति के लिये शिक्षा की एक ऐसी योजना तैयार करें जो सच्चे अर्थों मे "राष्ट्रीय" हो, जो आर्य जाति की "राष्ट्रीय शिक्षा" की आवश्यकता को पूर्ण करे। हमारा यह अभिप्राय नही है, कि विदेशी भाषा और नये ज्ञान विज्ञानो को ग्रहण न किया जाय। इनका लाभ उठाना परम आवश्यक है। हमे अग्रेजी, आधुनिक विज्ञान पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति का अध्ययन करना ही चाहिये। क्या योरोपियन लोग विदेशी भाषाओ और प्राच्य विद्याओ को नही पढते है ? वे पढते है, पर अपनी शिक्षा को विदेशी नही बना देते। इसी तरह हमे भी विदेशी ज्ञान विज्ञानो को पढ़ते हुए अपनी राष्ट्रीयता की रक्षा करनी चाहिये। गुरुकुल की स्थापना में यह तीसरा हेतु है।

४. ब्रह्मचर्य शिक्षा का मुख्य आधार है। हमारी सस्थायें ऐसी होनी चाहिये जो नगरो के दूषित प्रभावो से दूर हों और जहा ब्रह्मचर्य के नियमों का भली भाति पालन होना हो।

५. सरकारी यूनिवर्सिटियो मे परीक्षा की जो पद्धति प्रचलित है वह वास्तविक विद्वत्ता के मार्ग मे बाधक है। अत कोई ऐसी सस्था जो सरकारी यूनिवर्सिटियो की परीक्षा भी दिलाना चाहे और वैदिक पाण्डित्य भी उत्पन्न करना चाहे, कभी सफल नही हो सकती। डी० ए० वी० कालेज ने यही प्रयत्न किया है और उसे असफलता हुई। गुरुकुल इस शिक्षा पद्धति से दूर रहेगा।

६ शिक्षणालय मे शिक्षक को बालक के माता पिता का स्थान लेना चाहिये। भारत के वर्तमान शिक्षणालयो मे शिक्षक लोग माता पिता का स्थान नही लेते। गुरुकुल मे इस कमी को दूर किया जायगा।

७ शिक्षा के लिये कोई फीस नही होनी चाहिये।

८ यूरोपियन विद्वानो ने भारतीय इतिहास की जो खोज की है उसमे भारतीय इतिहास के साथ न्याय नही हुआ। उसमे जो तिथि क्रम निश्चित किया गया है, वह सर्वथा अशुद्ध है। उसका खण्डन करने के लिये भारत के प्राचीन इतिहास तथा पुरातत्व का विवेचनात्मक अध्ययन किया जाना चाहिये। यह कार्य भी गुरुकुल जैसे शिक्षणालय से ही पूर्ण किया जा सकता है।

गुरुकुल की स्थापना के हेतुओ पर किसी प्रकार की टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नही है। ये अपने आप मे सर्वथा स्पष्ट है। ऋषि दयानन्द ने शिक्षा सम्बन्धी जो आदर्श अपने ग्रन्थो मे प्रतिपादित किये थे, उनकी ये समयानुकूल व्याख्या मात्र प्रतीत होते है। इनको दृष्टि मे रखकर गुरुकुल मे पढाने के लिये जो पहली पाठविधि बनाई गई थी, उसमे सांगोपांग वेद और सस्कृत साहित्य के गभीर अध्ययन के साथ साथ अग्रेजी, गणित, रसायन (Chemistry) भौतिकविज्ञान (Physics) जीवन विज्ञान (Biology) वनस्पति शास्त्र (Botany)

भूविज्ञान (Geology) कृषि, आयुर्वेद, पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र आदि के उच्चकोटि के अध्ययन की भी व्यवस्था की गई थी। वस्तुत गुरुकुल के प्रथम प्रवर्तक आर्य जाति के लिए 'राष्ट्रीय शिक्षा' की योजना तैयार कर रहे थे। उनकी दृष्टि मे आदर्श राष्ट्रीय शिक्षा वह थी जिसमे आधुनिक ज्ञान विज्ञान के साथ सस्कृत साहित्य और सागोपाग वेद का अध्ययन होना हो।

महात्मा मुन्शीराम जी जब गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करते हुये पहले पहल लाहौर आये, तब उन्होने, सन् १९०० की जनवरी मास मे कुछ व्याख्यान गुरुकुल के सम्बन्ध मे दिये। इन सब व्याख्यानो से गुरुकुल के विषय मे बडी हलचल मची और पंजाब के शिक्षित समुदाय का ध्यान गुरुकुल की ओर आकृष्ट हुआ था। इन व्याख्यानो मे उन्होने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की निम्नलिखित विशेषताओ को प्रकट किया था।

१ ब्रह्मचर्य का पुनरुद्धार।

२. ब्रह्मचारियो और उनके गुरुओ का पुत्र और पिता के सम्बन्ध से रहना।

३ परीक्षा पद्धति के दोषो से मुक्त रहना।

४. शारीरिक उन्नति के लिए विशेष रूप से बल देना।

५. भारत की शिक्षा-प्रणाली मे सस्कृत तथा मातृभाषा हिन्दी को प्रमुख स्थान देना।

६ आधुनिक विज्ञानो तथा इगलिश भाषा को समुचित स्थान देना।

७. शिक्षा के लिए कोई फीस न लेना।

८ प्राचीन भारतीय इतिहास के अन्वेषण तथा शोध का विशेष रूप से प्रबन्ध करना।

गुरुकुल की स्थापना के समय उसके सस्थापको के सम्मुख ये विचार थे। इन्ही को दृष्टि मे रख कर गुरुकुल का प्रारम्भ किया गया।

गुरुकुल की स्थापना

गुरुकुल कहा खुले, इसके सबन्ध मे भी आर्य जनता के सम्मुख अनेक विचार थे। श्री गोविन्दपुर के लाला विशनदास ने १००० रु० और और लाला मोहनलाल न भूमि देने का वचन दिया। लूनमियानी के लाला ज्वालासहाय न अपनी एक भूमि पेश की। परन्तु महात्मा मुन्शीराम गुरुकुल को गगा के तट पर स्थापित करना चाहते थे। उनकी आखो मे वेद का यह मत्र सदैव विद्यमान रहता था —

उपह्वरे गिरीणां संगमे च नदीनाम्।
धिया विप्रो अजायत ॥ —यजुर्वेद

वे कही नदियो का सगम और पर्वतो की उपत्यका चाहते थे। उनकी दृष्टि रह रह कर हिमालय के दामन मे गगा के तट पर जाती थी महात्मा जी कई बार वहा गये और निराश लौटे। लाला रलाराम और उनके साथी पजाब मे बाहर जाने को उद्यत न थे। अन्त मे जब मुशी अमनसिह ने अपना कागडी ग्राम, जो हरिद्वार के सामने गगा के पूर्वीय तट पर स्थित था, गुरुकुल के लिये प्रतिनिधि सभा को प्रदान कर दिया, तो इस समस्या का हल हुआ। मुशी अमनसिह नजीबाबाद जिला बिजनौर के निवासी थे। आप बडे त्यागी, धर्मपरायण और सत्यनिष्ठ रईस थे। उनकी कुल सम्पत्ति कागडी ग्राम थी, जिसका क्षेत्र १४०० बीघा है। इस भूमि को गुरुकुल के लिये देकर उन्होने जो दान दिया, उसकी जितनी प्रशसा की जावे कम है। गुरुकुल के लिए कागडी की यह भूमि एक आदर्श स्थान था।

हिमालय की उपत्यका मे गगा के तट पर सघन रमणीक वनो से घिरे हुए इस प्रदेश मे बढ़ कर गुरुकुल के लिए कौन सा स्थान हो सकता था। अत यही पर गुरुकुल खोलने का निश्चय किया गया पर यह स्थान तो सन् १९०१ के अन्त मे गुरुकुल के लिए मिला। इससे पूर्व ही १६ मई सन् १९०० को गुजरावाला मे गुरुकुल की स्थापना कर दी गई थी। गुजरावाला मे सामयिक रूप से वैदिक पाठशाला तो पहले विद्यमान थी, उसके साथ ही गुरुकुल की पहली श्रेणी भी पृथक् रूप मे खोल दी गई। भक्त आनन्द स्वरूप की वाटिका मे पाच कमरो का निर्माण कर उससे आश्रम का काम लिया गया। महात्मा मुन्शीराम जी ने अपने दोनो पुत्र गुरुकुल मे प्रविष्ट कराये। उनके अतिरिक्त अन्य अनेक प्रतिष्ठित कुलो के २० बालक इस गुरुकुल मे प्रविष्ट हुये। वैदिक पाठशाला मे प० गगादत्त सस्कृत अध्यापक का कार्य करते थे। उन्हे पाठशाला से बदल कर गुरुकुल का मुख्याध्यापक नियत किया गया। उनके साथ प० विष्णुमित्र, महाशय भक्तराम तथा मा० सुन्दरसिह अध्यापक नियत हुए। दो वर्ष तक गुरुकुल गुजरावाला मे ही रहा।

इस बीच मे कागडी की भूमि गुरुकुल के लिये मिल चुकी थी। कागडी ग्राम के दक्षिण मे गगा के तट पर घने जगल को साफ कर कुछ छप्पर बनाये गये थे। ४ मार्च १९०२ को गुरुकुल गुजरावाला से कागडी ले आया गया। कुछ दिन बाद २२, २३, तथा २४ मार्च को गुरुकुल का प्रारम्भ उत्सव मनाया गया। प्रारम्भ से ही जनता को गुरुकुल से इतना प्रेम था, कि बिना किसी विशेष नोटिस के ५०० नर नारी उत्सव मे सम्मिलित हुए और ३००० रु० नकद इकट्ठा हुआ। धीरे धीरे गुरुकुल के वार्षिकोत्सव का महत्व बढ़ता गया। कुछ ही वर्षों मे यह आर्य समाज का सब से बड़ा मेला हो गया, और इसमे न केवल पजाब से अपितु सारे भारत से हजारों की सख्या में नरनारी

सम्मिलित होने लगे और उत्सव के व्याख्यानो, सम्मेलनों, उपदेशो और परिषदो द्वारा अपने ज्ञान तथा धर्म की पिपासा को शान्त करने लगे।

गुरुकुल मे प्रविष्ट होने वाले ब्रह्मचारियो की सख्या निरतर बढती रही। गुजरावाला मे कुल ३४ ब्रह्मचारी शुरू मे कागडी मे आये थे। पाचवे साल के अन्त मे ब्रह्मचारियो की सख्या बढकर १८७ हो गई पहले लोगो का विचार था कि कौन माता पिता अपने गोद के लालो को अपने से पृथक् किसी जगल मे १४ वर्ष के लिये पढ़ने को भेजेगा। पर अनुभव ने इस आशका को निर्मूल कर दिया। प्रतिवर्ष सैकडो प्रार्थनापत्र अपने बालको को गुरुकुल मे दाखिल कराने के लिये आने लगे। सबको प्रविष्ट करना सम्भव नही था, क्योकि रुपये की कमी थी और ब्रह्मचारियो के निवास के लिये प्रबन्ध पर्याप्त नही था। ब्रह्मचारियो का प्रवेश चुनाव द्वारा होता था और बहुत से माता पिताओ को निराश हो कर गुरुकुल से लौटना पडता था।

पुण्यभूमि मे गुरुकुल की प्रारभिक झोपडिया

* * *

: २ :

विकास

आन्तरिक प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से भी गुरुकुल निरन्तर उन्नति कर रहा था। धीरे धीरे फूस की झोपडियो का स्थान ईट की इमारते ले रही थी। चार वर्ष के अन्दर अन्दर २५००० रुपये की लागत से २० पढने के कमरे और ब्रह्मचारियो के निवास के लिये पृथक् आश्रम बना लिया गया था। इसके अतिरिक्त भोजन भण्डार हस्पताल, यज्ञशाला, धर्मशाला और अध्यापको के निवास के लिये भी मकान बन गए थे। दो कूए भी तैयार हो गए थे। पर गुरुकुल के सचालक इतने से सतुष्ट नही थे। वे पाच लाख की लागत से ६०० विद्यार्थियो के निवास तथा पढने योग्य पक्की सुन्दर इमारत बनवाने का स्वप्न ले रहे थे। पटियाला स्टेट के मुख्य इन्जीनियर लाला गगाराम से उन्होंने उत्कृष्ट इमारत का नक्शा तैयार कराया था और उसके लिये भी अपील की थी। सन् १९०७ मे महात्मा मुंशीराम जी ने लिखा था कि गुरुकुल के लिये पक्की इमारतो का निर्माण परमावश्यक है। इसी के अनुसार सन् १९०८ मे कालेज की पक्की शानदार इमारत बननी आरम्भ हो गई थी।

गुरुकुल के पहले आचार्य प० गगादत्त जी थे। महात्मा मुंशीराम जी उस समय मुख्याधिष्ठाता थे। प० गगादत्त जी व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित थे। उनके साथ प० काशीनाथ शास्त्री, प० भीमसेन

शर्मा, प० दौलतराम शास्त्री, प० पद्मसिंह, प० विष्णु मित्र आदि अनेक विद्वान् काम करते थे। अंग्रेजी तथा गणित आदि पढ़ाने का कार्य मा० गोवर्धन बी० ए०, मा० विनायक साठे आदि द्वारा होता था। भोजन भण्डार का प्रबन्ध जालन्धर के लाला शालिग्राम के हाथ में था। लाला जी गुरुकुल के अनन्य भक्त थे। उन्होंने अपना तन मन धन गुरुकुल के लिये अर्पित कर रखा था। इन महानुभावों के सहयोग से गुरुकुल दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करता रहा।

१९०२ में गुरुकुल कांगड़ी में आ गया था। १९०६ तक उसमें सात श्रेणियां हो चुकी थीं। अब गुरुकुल में उच्च पढ़ाइयों की समस्या उपस्थित हुई। इसके पूर्व केवल ६ श्रेणियां ही थीं, जिसमें प्रधानतया संस्कृत साहित्य और व्याकरण की तथा सामान्यतया अंग्रेजी तथा प्रारम्भिक विषयों की शिक्षा दी जाती थी। अब उच्च कक्षाओं के खुलने पर यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि विज्ञान गणित आदि आधुनिक विषयों की क्या व्यवस्था की जाय। इसी समय मा० रामदेव जी गुरुकुल में कार्य करने आये, वे एक ट्रेन्ड ग्रेजुएट थे और जालन्धर स्कूल के सफल हेडमास्टर रहे थे। उनका विचार था कि कि आधुनिक विज्ञान शिक्षा का आवश्यक अंग है और गुरुकुल में उसकी यथोचित व्यवस्था होनी चाहिये। साथही वे शिक्षा संबन्धी नियन्त्रण के पक्षपाती थे। गुरुकुल अपनी प्रारंभिक दशा को पार कर रहा था। अब वे चाहते थे कि यहां पढ़ाई का नियमित समयविभाग बने और सब कार्य व्यवस्थित रूप में हो। यह स्वाभाविक भी था, क्योंकि शुरू से ही गुरुकुल को एक पुराने ढंग की पाठशाला बनाना अभिप्रेत नहीं था। गुरुकुल की प्रारंभिक स्कीम में आधुनिक ज्ञान, विज्ञान को यथोचित स्थान दिया गया था। इस प्रवृत्ति के विपक्ष में आचार्य गंगादत्त जी का मौलिक मत भेद था जो नीति से संबन्ध

रखता था। परिणाम यह हुआ की उन्होने गुरुकुल से त्याग पत्र दे दिया और कुछ समय बाद ज्वालापुर के निकट एक पृथक् गुरुकुल की स्थापना की। यह गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

आचार्य गगादत्त जी के बाद महात्मा मुन्शीराम ही गुरुकुल के आचार्य नियत हुए। शिक्षा विषयक प्रबन्ध मे इनकी सहायता मा० रामदेव जी करते थे, जो उस समय मुख्याध्यापक के पद पर नियुक्त थे।

महाविद्यालय का प्रारम्भ

सन् १९०७ मे गुरुकुल मे महाविद्यालय कालेज विभाग का प्रारम्भ हुआ था। तीन विद्यार्थी ९ साल तक विद्यालय विभाग मे रह कर अधिकारी परीक्षा उत्तीर्ण कर महाविद्यालय मे आये। महाविद्यालय विभाग के शुरू होने पर गुरुकुल मे अनेक उच्चकोटि के विद्वान अध्यापन के लिये नियुक्त किये गये। गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग के इन प्रारम्भिक शिक्षको का नाम देना यहाँ अनुचित न होगा।

१. महात्मा मुन्शीराम जी आचार्य।

२. आचार्य रामदेव जी बी० ए०, एम० आर० ए० एस० उपाचार्य तथा उपाध्याय पाश्चात्य दर्शन।

३. प० काशीनाथ शास्त्री—उपाध्याय प्राच्यदर्शन।

४. प० शिवशकर काव्यतीर्थ—उपाध्याय वेद।

५. श्री बाल कृष्ण एम० ए०—उपाध्याय इतिहास, अर्थशास्त्र।

६. श्री विनायक गणेश साठे एम० ए०—उपाध्याय रसायनशास्त्र।

७. श्री महेशचरणसिंह एम० एस० सी०—उपाध्याय वनस्पतिशास्त्र।

८. श्री घनश्यामसिंह गुप्त बी० ए० एल० बी०—उपाध्याय विज्ञान।

९. श्री सेवाराम एम० ए०—उपाध्याय आँग्ल भाषा।

१०. श्री लक्ष्मीनारायण बी० ए०—उपाध्याय आँग्ल भाषा।

११. श्री लक्ष्मणदास बी० ए०—उपाध्याय गणित।

महाविद्यालय खुलने के साथ ही आ० रामदेव जी उपाचार्य के पद पर नियत हो गये थे और उनके स्थान पर मुख्याध्यापक मा० गोवर्धन बी० ए० बने थे। शिक्षा के क्षेत्र मे इस समय गुरुकुल बडी तत्परता से कार्य कर रहा था। गुरुकुल मे सब विषयो की शिक्षा मातृभाषा हिन्दी के माध्यम द्वारा दी जाती थी। विज्ञान, गणित पाश्चात्य दर्शन आदि विषय भी हिन्दी मे ही पढाये जाते थे। जब महाविद्यालय विभाग खुला तो उसमे भी हिन्दी को ही माध्यम रखा गया। उस समय हिन्दी मे उच्च शिक्षा देना एक असम्भव बात समझी जाती थी। गुरुकुल ने इसे कार्य रूप मे परिणत करके दिखा दिया। उस समय आधुनिक विज्ञानो की पुस्तके हिन्दी मे बिलकुल न थी। गुरुकुल के उपाध्यायो ने पहिले पहल इस क्षेत्र मे काम किया और गुरुकुल से अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ प्रकाशित हुए प्रो० महेशचरणसिंह की 'हिन्दी केमिस्ट्री', प्रो० माठे का 'विकासवाद' श्रीयुत गोवर्धन की 'भौतिकी' और 'रसायन', प्रो० रामशरणदास सक्सेना का 'गुणात्मक विश्लेषण', प्रो० सिन्हा का 'वनस्पतिशास्त्र' प्रो० प्राणनाथ का 'अर्थशास्त्र', 'राष्ट्रीय आय-व्यय शास्त्र' और 'राजनीति शास्त्र" प्रो० बालकृष्ण का 'अर्थशास्त्र' और 'राजनीति शास्त्र' और प्रो० सुधाकर का 'मनोविज्ञान' हिन्दी मे अपने अपने विषय के पहले ग्रन्थ हैं। यह इतना महत्वपूर्ण कार्य गुरुकुल द्वारा किया गया। हिन्दी मे वैज्ञानिक ग्रन्थो की रचना ही गुरुकुल द्वारा प्रारम्भ हुई। इन वैज्ञानिक ग्रन्थो के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से उच्चकोटि के ग्रन्थ गुरुकुल द्वारा प्रकाशित हुए। प्रो० रामदेव ने भारतीय

इतिहास के सबन्ध मे मौलिक अनुसधान कर अपना प्रसिद्ध 'भारतवर्ष का इतिहास' प्रकाशित किया । महात्मा मुन्शीराम जी ने विविध धर्मों का तुलनात्मक अध्ययन कर पारसी आदि अनेक धर्मों पर मौलिक ग्रन्थ लिखे । गुरुकुल की साहित्य परिषद् ने दो दर्जन से अधिक ग्रन्थ प्रकाशित किये । ये सभी ग्रन्थ किन्ही नये विषयो पर निबन्ध के रूप मे थे । साहित्य परिषद् की ओर से गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर सरस्वती सम्मेलन किये जाते थे, जिन मे विविध विषयो पर मौलिक निबन्ध पढे जाते थे । उस समय के शिक्षित समुदाय मे इन निबन्धो की बडी धूम थी । गुरुकुल ने छोटे बालको के लिये पाठ्य पुस्तके तैयार करने के लिये भी बडा काम किया सस्कृत की पहली रीडरे गुरुकुल ने ही प्रकाशित की । सब श्रेणियो के लिये हिन्दी सस्कृत विज्ञान आदि की बहुत सी पाठ्य पुस्तके गुरुकुल मे तैयार हुई । बाहर के भी अनेक शिक्षणालयो ने इनको अपनाया ।

सन् १९०७ मे "वैदिक मैगजीन" का भी पुनरुद्धार किया गया इस पत्रिका के सस्थापक पण्डित गुरुदत्त थे । उनके देहान्त के साथ साथ इस पत्रिका भी अन्त हो गया था । वैदिक मैगजीन अग्रेजी मे निकलती थी । पाश्चात्य ससार को वैदिक धर्म का संदेश सुनाने तथा आर्य समाज के दृष्टिकोण से प्राच्य विद्याओ का अनुशीलन करने के लिये इस पत्रिका का बड़ा उपयोग था । अब उसका पुनर्जीवन किया गया और मा० रामदेव जी उसके सम्पादक बने । सन् १९०७ से १९३२ तक २५ वर्ष निरतर यह पत्रिका गुरुकुल से प्रकाशित होती रही । शिक्षक समाज मे इस पत्रिका को बड़ी आदर की दृष्टि से देखा जाता था ।

'सद्धर्मप्रचारक' पहले जालन्धर से प्रकाशित होता था महात्मा

मुन्शीराम जी का 'सद्धर्मप्रचारक' प्रेस भी जालन्धर मे ही था। १९०८ मे उसे गुरुकुल ले आया गया। तब से 'सद्धर्मप्रचारक' नियत रूप से गुरुकुल से ही प्रकाशित होने लगा। गुरुकुल का प्रचार करने मे इस पत्र से बडी सहायता मिली। सद्धर्मप्रचारक पत्र और "सद्धर्मप्रचारक प्रेस" गुरुकुल को साहित्यिक जीवन का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बनाने मे अत्यन्त सफल हुए।

फलनिष्पत्ति

१९२२ मे गुरुकुल से दो ब्रह्मचारी हरिश्चन्द्र और इन्द्र अपनी शिक्षा पूर्ण कर स्नातक हुए। वार्षिकोत्सव के अवसर पर बडे समारोह के साथ इनका दीक्षान्त सस्कार हुआ। गुरुकुल का यह वार्षिकोत्सव अद्वितीय था। जनता के उत्साह की कोई सीमा न थी। नव स्नातको के दीक्षान्त सस्कार का दृश्य आज भी एक अद्‌भुत आकर्षण रखता है सन् १९१२ मे आज से २४ वर्ष पर्व गुरुकुल का जब पहिला दीक्षान्त सस्कार हुआ तब उसका कितना प्रभाव जनता पर हुआ होगा इसकी कल्पना सहज मे ही की जा सकती है।

पुण्य भूमि मे गुरुकुल के भवन

* * *

गुरुकुल जिनका ऋणी है

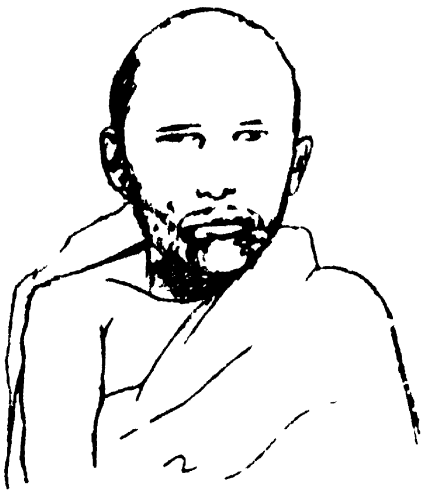

गुरुवर प० काशीनाथ जी

मुंशी अमनसिंह जी

स्वामी सत्यानन्द जी

प० गंगादत्त जी

आचार्य रामदेव जी

प० विश्वम्भरनाथ जी

ला० लाजपत राय जी

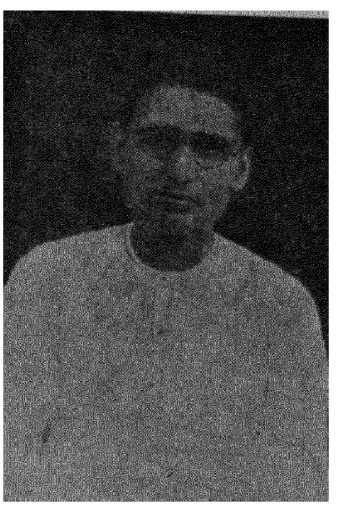

पं० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार

३ :

विश्वविद्यालय की स्थापना

गुरुकुल और ब्रिटिश सरकार

गुरुकुल निरन्तर लोक-प्रिय होता जारहा था । जनता गुरुकुल मे आकर सतयुग का दृश्य देखती थी । शहरो के कोलाहल से दूर, गगा पार, हिमालय की उपत्यका मे यह तपोवन स्थापित था । चारो ओर सघन वन थे । यहा ३०० के लगभग ब्रह्मचारी अपने गुरुवर्ग के के साथ ब्रह्मचर्य और विद्या की साधना मे तत्पर थे । यहां अमीर गरीब वा ऊच-नीच का कोई भेद न था । गौड ब्राह्मण, और अछूत मेघ के पुत्र एक साथ रहते थे, एक साथ भोजन करते थे सबके एकसे वस्त्र, एकसा खानपान और एकसा रहन सहन था । सब एक दूसरे को भाई भाई समझते थे । यदि किसी के पिता अपने ब्रह्मचारी के लिये कोई मिष्ठान्न लाते, तो वह सब को बाँट कर उसे खाता था । ऋषि दयानद ने शिक्षा के सम्बन्ध मे जो आदर्श रखे थे, वे यहा मूर्त रूप से दृष्टिगोचर होते थे । यही कारण था कि गुरुकुल मे एक विशेष आकर्षण था, एक अद्भुत जादू था । जो भी गुरुकुल मे आता वह वहाँ के जीवन से प्रभावित हुए बिना न रहता ।

केवल भारतीय जनता ही नही, अनेक विदेशियों को भी गुरुकुल ने अपनी ओर आकृष्ट किया । शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुल एक नई

क्रान्ति था । इसे देखने के लिये बहुत से विदेशी विद्वान गुरुकुल पधारने लगे । अमेरिका के प्रसिद्ध शिक्षा विशारद श्रीयुत मायरन फेल्प्स सन् १९२८ मे गुरुकुल आये । उन्होने कई महीने गुरुकुल मे रह कर इसके प्रत्येक विभाग का सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण किया । गुरुकुल मे रह कर जो कुछ देखा उसके सबन्ध मे एक विस्तृत लेख माला उन्होने इलाहाबाद के प्रसिद्ध ऐग्लो इन्डियन पत्र "पायोनियर' मे लिखी । इस लेखमाला मे बहुत से शिक्षाविशारदो का ध्यान गुरुकुल की ओर आकृष्ट हुआ, और गुरुकुल मे विदेशी यात्रियो की सख्या निरतर बढने लगी । कुछ समय बाद श्रीयुत सी०एफ० एड्रूज अपने मित्र श्रीयुत पियर्सन के साथ आकर गुरुकुल मे रहे । गुरुकुल के जीवन तथा शिक्षा का उनपर बडा प्रभाव पडा उन्होने भी गुरुकुल के सबन्ध मे अनेक लेख लिखे । परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल भारत से बाहर यूरोप और अमेरिका मे भी प्रसिद्ध हो गया । इन देशो से जो यात्री भारत आते वे गुरुकुल देखे बिना वापिस न लौटते । ब्रिटिश ट्रेड यनियन आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता श्रीयुत सिडनी वैब गुरुकुल आये और इस सस्था को देख कर अत्यन्त प्रभावित हुए । सन् १९१४ मे लेबर पार्टी के प्रसिद्ध नेता और ग्रेट ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधान मत्री श्री रेम्जे मैक्डानल्ड गुरुकुल पधारे । उन्होने गुरुकुल के सबन्ध मे एक लेख मे लिखा-'मैकाले के बाद भारत मे शिक्षा के क्षेत्र मे जो सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक प्रयत्न हुआ, वह गुरुकुल है ।'

यह असम्भव था कि ब्रिटिश शासको की दृष्टि गुरुकुल की ओर आकृष्ट न होती । श्रीयुत रैम्जे मैक्डानल्ड के शब्दो मे सरकारी आफिसरो के लिये गुरुकुल एक पहेली है । गुरुकुल के शिक्षक वर्ग में एक भी अग्रेज नही है । यहां शिक्षा का माध्यम अग्रेजी नही है

पजाब यूनिवर्सिटी मे इगलिश साहित्य पढने के लिये जो पुस्तके प्रयोग मे आ सकती है, गुरुकुल उन्हे अपनी पाठ्य पुस्तके नही बनाता। यहा एक भी विद्यार्थी सरकारी यूनिवर्सीटियो की परीक्षा देने नही जाता। गुरुकुल अपनी पृथक् उपाधि 'डिग्री' प्रदान करता है। सचमुच यह सरकार की भारी अवज्ञा है। यह स्वाभाविक है कि घबडाये हुए सरकारी आफीसर के मुख से पहिली बात इसके लिये यही निकले कि यह "राजद्रोही है"।

निसदेह पहले पहल सरकार ने गुरुकुल को राजद्रोही सस्था समझा। सरकारी यूनिवर्सिटियो मे सर्वथा स्वतत्र सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा के लिये किया गया वह अद्भुत प्रयत्न था। गुरुकुल राजद्रोही है, सरकार का यह विचार तब तक दूर नही हुआ, जब तक सयुक्तप्रान्त के लेफ्टिनेन्ट गवर्नर श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन इस सस्था को अपनी आखो से नही देख गये। श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन गुरुकुल मे चार बार आये, उनकी गुरुकुल यात्रा का उद्देश्य यही था कि वे स्वय गुरुकुल का अवलोकन कर इस बात का निर्णय करे कि सरकारी अफसरो मे गुरुकुल के राजद्रोही होने का जो विचार फैला हुआ है, वह कहाँ तक ठीक है। ६ मार्च १९१३ को श्रीयुत सर जेम्स मेस्टन पहली बार आये। अभिनन्दन पत्र का उत्तर देते हुए अपने भाषण मे उन्होने कहा—"न केवल सयुक्त प्रान्त अपितु सम्पूर्ण भारत मे शिक्षा के क्षेत्र मे जो परीक्षण किये गये हैं, गुरुकुल उसमे सबसे अधिक मौलिक और महत्वपूर्ण है"।

सरकारी कागजात मे गुरुकुल को एक शाश्वत भयकर और अज्ञात खतरे का मूल बनाया जाता रहा था। इसका सबसे उत्तम जवाब सर जेम्स मेस्टन ने दिया। गुरुकुल को देख कर वे इतने प्रभावित हुए कि अपनी दूसरी यात्रा में (१९ फरवरी १९१४) उन्होंने

गुरुकुल के सबन्ध मे यह सम्मति दी–

"This is my idea of an ideal university"

दो वर्ष के बाद भारत के वायसराय तथा गवर्नर जनरल लार्ड चेम्सफोर्ड भी गुरुकुल पधारे और इस अद्वितीय सस्था का अवलोकन कर अत्यन्त प्रभावित हुए, ब्रह्मचारियो के स्वस्थ और सुदृढ शरीरो की वायसराय महोदय ने बहुत प्रशसा की और इस सस्था के सबन्ध मे अपनी हितैषिता को प्रकट किया ।

भारतीय सरकार के इन उच्च राजकर्मचारियो का स्वागत करते हुए भी गुरुकुल ने अपनी विशेषता को नही छोडा । गुरुकुल आर्य-जाति की एकमात्र राष्ट्रीय सस्था है उसे किसी भी दशा मे भारतीयता और राष्ट्रीयता को नही छोडना चाहिए । यही कारण है कि कि वायसराय महोदय का अभिनन्दन सस्कृत के श्लोको द्वारा किया गया । उनके भोजन के लिये तुलसी की चाय, फल, पकौडे और भारतीय मिठाइयो का आयोजन किया गया । गुरुकुल मे जो भी विदेशी यात्री आते थे वे ब्रह्मचारियो के साथ भोजनभडार मे आसन पर बैठकर भारतीय ढग से भोजन करते थे । गुरुकुल आकर उन्हे गुरुकुलीय बनना होता था । गुरुकुल की कुछ अपनी विशेषताये हैं गुरुकुल वैदिक धर्म, भारतीय सभ्यता और आर्य सस्कृति के पुनरुज्जीवन के लिये खोला गया है । बडे से बडे राजपदाधिकारी के लिए गुरुकुल ने अपनी राष्ट्रीय सस्कृति का परित्याग नही किया ।

गुरुकुल राजद्रोही न था । गुरुकुल को राजद्रोही समझना सरकार की भूल थी । पर इस मे भी सदेह नही, कि गुरुकुल भारत के राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन और राजद्रोह को एक ही बात नही समझता था यही कारण है कि जब कभी धर्म, जाति व देश के लिये किसी

सेवा का त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल सबसे आगे रहा। १९०७ के व्यापक दुर्भिक्ष, १९०८ के दक्षिण हैदराबाद के जल विप्लव और १९११ के गुजरात दुर्भिक्ष के अवसर पर गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने अपने भोजन मे कमी कर के पीडितो की सहायता के लिये दान दिया। दक्षिण अफ्रीका मे भारतीयो के साथ दासो का सा व्यवहार होता था। इसके विरुद्ध महात्मा गांधी के नेतृत्व मे सत्याग्रह सग्राम प्रारम्भ किया गया। भारत मे श्रीयुत गोखले ने इस सत्याग्रह सग्राम के लिए सहायता की अपील की। गुरुकुल के विद्यार्थियो ने अपना घी दूध छोड कर और मजदूरी करके इस फण्ड मे सहायता की। उन दिनो हरिद्वार के ऊपर गगा का एक बडा बाध बाधा जा रहा था, जो दूधिया बन्ध के नाम से प्रसिद्ध है। गुरुकुल के विद्यार्थी वहां साधारण मजदूरो की तरह टोकरी ढो कर मजदूरी प्राप्त करते थे, और उसे दक्षिणी अफ्रिका के सत्याग्राहियो के लिये भेजते थे। इस प्रकार गुरुकुल के ब्रह्मचारियो ने मजदूरी द्वारा काम करके और अपने घी दूध मे कमी करके जो धन बचाया उससे १५०० रु० दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह के लिए प्रदान किया। महात्मा गाधी गुरुकुल के ब्रह्मचारियो की इस भावना और त्याग से बडे प्रभावित हुए। यही कारण है कि जब महात्मा गांधी अपने सत्याग्रह आश्रम के विद्यार्थियो के साथ भारत आए तो अहमदाबाद मे प्रथक् आश्रम खुलने तक अपने विद्यार्थियों के लिये सर्वोत्तम स्थान उन्होंने गुरुकुल को ही समझा और उनके विद्यार्थी कई मास तक गुरुकुल में रहे। गुरुकुल के विद्यार्थी राष्ट्रीय पुनरुज्जीवन और सेवा के जिस वातावरण में रहते थे, उस में इस भावना का उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था।

* * *

: ४ :

विस्तार

गुरुकुल की ख्याति खूब बढ़ती जाती थी। शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल एक नई क्रान्ति के रूप में था। जनता में इसका आकर्षण निरन्तर बढ़ रहा था। यही कारण है कि गुरुकुल स्थापित होने के कुछ ही वर्षों बाद इसकी शाखायें पंजाब के भिन्न भिन्न स्थानों पर खुलनी प्रारम्भ होगईं। गुरुकुल—शिक्षा की माग बहुत अधिक थी। एक गुरुकुल कांगड़ी इस माग को पूरा करने में असमर्थ था इसी लिए अन्य स्थानों पर शाखा—गुरुकुल खुलने प्रारम्भ हुए। सबसे पहली शाखा मुलतान में खुली। मुलतान शहर से तीन मील की दूरी पर तारांकुण्ड के समीप एक रमणीय स्थान पर यह गुरुकुल स्थापित है। इस की स्थापना २३ फरवरी सन् १९०९ को हुई थी। तब से गुरुकुल निरन्तर उन्नति करता गया और धीरे धीरे इसमें दस श्रेणियां हो गईं। गुरुकुल कांगड़ी की अधिकारी परीक्षा पास कर के इसके विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिये गुरुकुल कांगड़ी महाविद्यालय में प्रविष्ट होने लगे।

मुलतान के दो वर्ष बाद गुरुकुल की दूसरी शाखा कुरुक्षेत्र में खुली। सन् १९१० में थानेश्वर शहर के सुप्रसिद्ध रईस लाला ज्योतिप्रसाद जी के मन में यह शुभ विचार उत्पन्न हुआ कि वे भी गुरुकुल कांगड़ी की शाखा अपने यहां खुलवायें। इन्होंने अपने विचार महात्मा मुन्शीराम जी के सामने रखे। लाला ज्योतिप्रसाद ने प्रारम्भ

में १० हजार रुपया नगद और १०४८ बीघा भूमि गुरुकुल के लिये अर्पण की। सन् १९११ मे थानेश्वर के समीप महाभारत काल की प्रसिद्ध युद्धभूमि कुरुक्षेत्र मे गुरुकुल की स्थापना हो गई। गुरुकुल की आधारशिला रखते हुए महात्मा मुन्शीराम जी ने अपने भाषण में कहा था—"आज से ५००० वर्ष पूर्व इसी कुरुक्षेत्र भूमि मे आर्यावर्त के विनाश का बीज बोया गया था आज इसी भूमि मे आर्यावर्त की उन्नति के लिये यह बीज बोया गया है"।

सन् १९१२ मे देहली के सुप्रसिद्ध सेठ रघूमल जी ने एक लाख रुपया इस निमित्त दिया कि इस से देहली के समीप गुरुकुल की एक शाखा खोली जाय। इस के फलस्वरूप देहली से १० मील की दूरी पर गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की स्थापना हुई।

सन् १९१५ मे हरियाणा प्रान्त मे श्री चौधरी पीरूसिंह जी आदि उत्साही सज्जनो द्वारा जिला रोहतक के मटिन्डू ग्राम के समीप यमुना की एक छोटी नहर के किनारे अत्यन्त रमणीक स्थान पर गुरुकुल की एक और शाखा खोली गई, जो "गुरुकुल मटिण्डू" के नाम से प्रसिद्ध है। कुछ समय बाद सूपा (गुजरात) मे तथा हरियाना के भैंसवाल, झज्झर आदि स्थानो पर भी शाखा गुरुकुल खुले।

इस प्रकार गुरुकुल रूपी वृक्ष निरन्तर फलता फूलता जा रहा था। सन् १९०२ मे जिस गुरुकुल का बीजारोपण किया गया था वह १५ वर्ष के थोड़े से समय मे ही एक ऐसे विशाल वृक्ष के रूप मे परिवर्तित हो गया था, जिसकी छाया के नीचे सैकड़ो विद्यार्थी विद्याभ्यास कर रहे थे। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली निरन्तर लोकप्रिय होती जाती थी। गुरुकुल कांगड़ी और उसकी शाखाओ के अतिरिक्त अन्य गुरुकुल भी खुलने लगे।

महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल की स्थापना के समय से ही उसके

प्रधान संचालक रहे । गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना आर्य प्रतिनिधि पंजाब द्वारा हुई थी । संयुक्तप्रान्त, बिहार, बम्बई आदि अन्य प्रान्तों में भी आर्य प्रतिनिधि सभाएं विद्यमान थीं। इन्होंने भी गुरुकुल खोलना प्रारम्भ किया। संयुक्तप्रान्त की प्रतिनिधि सभा ने वृन्दावन में गुरुकुल स्थापित किया । बिहार और बंगाल की प्रतिनिधिसभा ने वैद्यनाथ धाम में गुरुकुल खोला । मध्यप्रदेश में होशंगाबाद में गुरुकुल की स्थापना की गई । इसी प्रकार शान्ताकुंज, हरप्रसाद, बेट मोहनी आदि कितने ही स्थानों पर नये नये गुरुकुल खुले ।

गुरुकुल प्रणाली को केवल आर्य समाज ने ही नहीं अपनाया अपितु सनातनी, जैन आदि अन्य धर्मावलम्बियों ने भी ऋषि दयानंद के शिक्षा सम्बन्धी आदर्शों को स्वीकार कर गुरुकुल के ढंग के शिक्षणालय खोलने शुरू किये । जैनियों ने गुजरांवाला 'पंचकूला' आदि अनेक स्थानों पर गुरुकुल खोले । सनातनी विचार के लोगों ने हरिद्वार में "ऋषिकुल" की स्थापना की । इसी तरह की संस्थाएं अन्य भी अनेक स्थानों पर स्थापित की गई । बीसवीं सदी का प्रथम चतुर्थांश गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की विजय का काल था । ब्रिटिश शासकों द्वारा प्रचारित की गई शिक्षाप्रणाली से असंतुष्ट देशसेवक लोग जिन नये स्वतन्त्र शिक्षणालयों को खोलने का उद्योग करते थे, उनमें ऋषि दयानन्द के शिक्षा संबन्धी मन्तव्यों को सम्मुख रखा जाता था । उस युग में राष्ट्रीय शिक्षा की केवल एक ही कल्पना जनता के सन्मुख थी, वह थी गुरुकुल शिक्षाप्रणाली । इसमें संदेह नहीं कि आर्यसमाज और गुरुकुल की भारी यह विजय थी।

सन् १९१२ में गुरुकुल की शिक्षा समाप्त करके दो स्नातक विद्यालंकार की उपाधि से विभूषित किये गये । इस प्रकार गुरुकुल ने विश्वविद्यालय का रूप धारण किया।

मुन्शीराम से श्रद्धानंद

महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल की स्थापना के समय से ही उसके प्रधान सचालक रहे । महात्मा जी जालन्धर के निवासी थे। वे वहा के सफल व समृद्ध वकील थे । पर उनकी प्रतिभा व शक्ति केवल वकालत तक ही सीमित न थी । इन्हे आर्य समाज से असाधारण प्रेम था । ऋषि दयानद के उपदेशो से प्रभावित होकर उन्होंने अपना जीवन आर्य समाज के अर्पण करने का निश्चय कर लिया था। जालन्धर आर्यसमाज के वे ही प्राण थे । पर उनकी अपूर्व प्रतिभा और कार्य शक्ति जालन्धर के सकुचित क्षेत्र तक सीमित नही रह सकती थी । कुछ ही वर्षों मे वे पजाब भर के सब से बडे आर्य नेता हो गये । आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने उन्हे अपना प्रधान निर्वाचित किया । महात्मा मुन्शीराम जी न केवल कुशल प्रबन्धक थे, वह साथ ही प्रभावशाली प्रचारक भी थे अछूतोद्धार, शुद्धि, समाज सगठन आदि विविध क्षेत्रो मे उन्होने अद्भुत योग्यता व कार्य क्षमता प्रदर्शित की। और कुछ ही समय मे उनका यश भारत के कोने कोने मे व्याप्त होगया ।

आर्य समाज का कार्य करते हुये महात्मा मुन्शीराम जी का ध्यान ऋषि दयानद के शिक्षा सम्बन्धी सिद्धान्तो की तरफ आकृष्ट हुआ। उन्होने अनुभव किया की देश मे प्रचलित शिक्षा प्रणाली दूषित है । देश का उद्धार तभी हो सकता है, जब बच्चो को ब्रह्मचर्य, तपस्या व सादगी के वातावरण मे रख कर शिक्षा दी जाय । ऋषि दयानन्द की गुरुकुल की कल्पना को पूर्ण रूप देने का उन्होंने सकल्प किया । गुरुकुल की स्थापना का मुख्य श्रेय उन्ही को प्राप्त है । उन्होंने अपना तन मन धन, और सर्वस्व गुरुकुल के लिये

अर्पण किया । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर उन्हे अटल विश्वास था, इसी लिये जहा उन्होने अपने दोनो पुत्र गुरुकुल को अर्पित किये, वहा साथ ही सम्पत्ति भी गुरुकुल को दान करदी । उनके पास जो कोठी, प्रेस, तथा अन्य सम्पत्ति थी वह गुरुकुल के अर्पण कर दी । महात्मा जी का यह 'सर्वमेध यज्ञ' वस्तुत अद्वितीय था । गुरुकुल के स्थापना काल से सन् १९१७ तक निरन्तर १५ वर्ष महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे । इस बीच मे गुरुकुल ने जो उन्नति की, उसकी कथा हम ऊपर लिख चुके है ।

१५ वर्ष तक गुरुकुल का सचालन कर सन् १९१७ मे महात्मा मुन्शीराम जी ने सन्यासाश्रम मे प्रवेश किया । वैदिक आश्रम की मर्यादा अनुसार महात्मा जी के लिये सन्यास लेना आवश्यक था । गुरुकुल निवास महात्मा जी का वानप्रस्थ आश्रम था । सन् १९१७ के बाद उन्होने सन्यास धारण किया और "मुन्शीराम से श्रद्धानन्द" हो गये । सन्यासी हो कर महात्मा जी अधिक विस्तृत क्षेत्र मे प्रविष्ट हुए और गुरुकुल के निवासियो ने भरे हृदय से अपने कुलपिता को विदा दी ।

सन् १९१७ मे महात्मा मुन्शीराम जी के विदा होते समय गुरुकुल की क्या दशा थी, इस पर सक्षिप्त रूप से प्रकाश डालना उपयोगी है । सन् १९१७ में गुरुकुल कागडी मे विद्यार्थियो की कुलसख्या ३४० थी, जिनमे से २७६ विद्यालय विभाग मे और ६४ महाविद्यालय विभाग मे शिक्षा प्राप्त करते थे । महाविद्यालय विभाग मे वेद दर्शन सस्कृत साहित्य और आग्लभाषा का पढना प्रत्येक विद्यार्थी के लिये अनिवार्य था । इसके अतिरिक्त विस्तृत वैदिक साहित्य, आर्यसिद्धान्त रसायन, इतिहास, अर्थशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन, कृषि और गणित ये सात ऐच्छिक विषय थे जिनमे से कोई एक विषय विद्यार्थियो को लेना

होता था। जो विद्यार्थी विस्तृत वैदिक साहित्य का ऐच्छिक विषय के रूप मे ले, उसे स्नातक होने पर वेदालंकार की, आर्य सिद्धान्त लेने वाले को सिद्धान्तालंकार की और शेष को विद्यालंकार की उपाधि दी जाती थी। महाविद्यालय विभाग मे इन विविध विषयो को पढाने के लिये ५ अध्यापक नियत थे। मुख्याध्यापक के पद पर गुरुकुल के स्नातक प० यज्ञदत्त विद्यालंकार नियत थे, जो बडी योग्यता से विद्यालय विभाग का सचालन करते थे। ब्रह्मचारियो की चिकित्सा के लिये गुरुकुल का अपना हास्पिटल था। उसके मुख्य चिकित्सक डा० सुखदेव जी थे। डा० सुखदेव जी बडी ही लगन और सेवा वृत्ति के चिकित्सक थे। उनका सारा समय ब्रह्मचारियो के स्वास्थ्य की उन्नति मे लगता था। गुरुकुल का आन्तरिक प्रबन्ध लाला नन्दलाल जी के हाथ मे था। लाला जी अत्यन्त योग्य प्रबन्ध कर्त्ता थे वे सहायक मुख्यधिष्ठाता के पद पर नियत थे, और गुरुकुल के आन्तरिक प्रबन्ध को व्यवस्थित करने के लिये बहुत प्रयत्नशील थे। गुरुकुल कार्यालय लाला मुरारी लाल जी के हाथ मे था। जो दिन रात एक कर गुरुकुल की सेवा मे तत्पर रहते थे। आश्रम के अध्यक्ष मा० सुखराम जी थे, जो अपना जीवन गुरुकुल के लिये अर्पण कर त्याग का अनुपम आदर्श विद्यार्थियो के सम्मुख रख रहे थे। अभिप्राय यह है कि महात्मा मुन्शीराम जी के गुरुकुल से विदा होने के समय गुरुकुल ऐसी अवस्था मे पहुच चुका था जब उसका प्रत्येक विभाग अत्यन्त योग्य हाथो मे था, और सब लोग मिल कर गुरुकुल की उन्नति के लिये तत्पर थे।

* * *

अर्पण किया । गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर उन्हे अटल विश्वास था, इसी लिये जहा उन्होने अपने दोनो पुत्र गुरुकुल को अर्पित किये, वहा साथ ही सम्पत्ति भी गुरुकुल को दान करदी । उनके पास जो कोठी, प्रेस, तथा अन्य सम्पत्ति थी वह गुरुकुल के अर्पण कर दी । महात्मा जी का यह 'सर्वमेध यज्ञ' वस्तुत अद्वितीय था । गुरुकुल के स्थापना काल से सन् १९१७ तक निरन्तर १५ वर्ष महात्मा मुन्शीराम जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता रहे । इस बीच मे गुरुकुल ने जो उन्नति की, उसकी कथा हम ऊपर लिख चुके है ।

१५ वर्ष तक गुरुकुल का सचालन कर सन् १९१७ मे महात्मा मुन्शीराम जी ने सन्यासाश्रम मे प्रवेश किया । वैदिक आश्रम की मर्यादा अनुसार महात्मा जी के लिये सन्यास लेना आवश्यक था । गुरुकुल निवास महात्मा जी का वानप्रस्थ आश्रम था । सन् १९१७ के बाद उन्होने सन्यास धारण किया और "मुन्शीराम से श्रद्धानन्द" हो गये । सन्यासी हो कर महात्मा जी अधिक विस्तृत क्षेत्र मे प्रविष्ट हुए और गुरुकुल के निवासियो ने भरे हृदय से अपने कुलपिता को विदा दी ।

सन् १९१७ मे महात्मा मुन्शीराम जी के विदा होते समय गुरुकुल की क्या दशा थी, इस पर सक्षिप्त रूप मे प्रकाश डालना उपयोगी है । सन् १९१७ मे गुरुकुल कागडी मे विद्यार्थियो की कुलसख्या ३४० थी, जिनमे से २७९ विद्यालय विभाग मे और ६४ महाविद्यालय विभाग मे शिक्षा प्राप्त करते थे । महाविद्यालय विभाग मे वेद दर्शन सस्कृत साहित्य और आग्लभाषा का पढना प्रत्येक विद्यार्थी के लिये अनिवार्य था । इसके अतिरिक्त विस्तृत वैदिक साहित्य, आर्यसिद्धान्त रसायन, इतिहास, अर्थशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन, कृषि और गणित ये साथ ऐच्छिक विषय थे जिनमे से कोई एक विषय विद्यार्थियो को लेना

होता था। जो विद्यार्थी विस्तृत वैदिक साहित्य का ऐच्छिक विषय के रूप मे ले, उसे स्नातक होने पर वेदालंकार की, आर्य सिद्धान्त लेने वाले को सिद्धान्तालंकार की और शेष को विद्यालंकार की उपाधि दी जाती थी। महाविद्यालय विभाग मे इन विविध विषयो को पढाने के लिये ५ अध्यापक नियत थे। मुख्याध्यापक के पद पर गुरुकुल के स्नातक प० यज्ञदत्त विद्यालंकार नियत थे, जो बडी योग्यता से विद्यालय विभाग का सचालन करते थे। ब्रह्मचारियो की चिकित्सा के लिये गुरुकुल का अपना हास्पिटल था। उसके मुख्य चिकित्सक डा० सुखदेव जी थे। डा० सुखदेव जी बडी ही लगन और सेवा वृत्ति के चिकित्सक थे। उनका सारा समय ब्रह्मचारियो के स्वास्थ्य की उन्नति मे लगता था। गुरुकुल का आन्तरिक प्रबन्ध लाला नन्दलाल जी के हाथ मे था। लाला जी अत्यन्त योग्य प्रबन्ध कर्त्ता थे वे सहायक मुख्यधिष्ठाता के पद पर नियत थे, और गुरुकुल के आन्तरिक प्रबन्ध को व्यवस्थित करने के लिये बहुत प्रयत्नशील थे। गुरुकुल कार्यालय लाला मुरारी लाल जी के हाथ मे था। जो दिन रात एक कर गुरुकुल की सेवा मे तत्पर रहते थे। आश्रम के अध्यक्ष मा० सुखराम जी थे, जो अपना जीवन गुरुकुल के लिये अर्पण कर त्याग का अनुपम आदर्श विद्यार्थियो के सम्मुख रख रहे थे। अभिप्राय यह है कि महात्मा मुन्शीराम जी के गुरुकुल से विदा होने के समय गुरुकुल ऐसी अवस्था मे पहुच चुका था जब उसका प्रत्येक विभाग अत्यन्त योग्य हाथो मे था, और सब लोग मिल कर गुरुकुल की उन्नति के लिये तत्पर थे।

* * *

५ :

आगे प्रगति

सन् १९१७ मे महात्मा मुन्शीराम जी सन्यास लेकर गुरुकुल से विदा हुए थे। उनके बाद आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामकृष्ण जी गुरुकुल मुख्याधिष्ठाता नियत हुए। वे जालन्धर रह कर ही गुरुकुल का प्रबन्ध करते थे और उनके प्रतिनिधि रूप मे प्रो० सुधाकर जी गुरुकुल मे रह कर कार्य करते थे। आचार्य का काम प्रो० रामदेव जी को दिया गया। प्रो० रामदेव जी सन् १९०५ मे गुरुकुल मे आये थे, और कुछ वर्ष मुख्याध्यापक का कार्य करने के अनन्तर जब गुरुकुल मे महाविद्यालय खुला, तो उपाचार्य के पद पर नियत हुए थे। गुरुकुल मे कार्य करते हुए उन्हे ग्यारह वर्ष हो चुके थे और यहा का उन्हे अच्छा अनुभव था। इस समय सभा के प्रधान, पण्डित विश्वम्भरनाथ जी बने जो बहुत समय से उप प्रधान का कार्य करते रहे थे। गुरुकुल का यह प्रबन्ध १९२० तक रहा। इस बीच भी मे गुरुकुल की निरतर उन्नति हुई। सन् १९१९ मे लुधियाना जिले के रायकोट नामक स्थान पर गुरुकुल की एक शाखा खोली गई। इसके सस्थापक श्री स्वामी गगागिरी जी महाराज है। गुरुकुल रायकोट की आधारशिला श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज द्वारा रक्खी गई थी।

आन्तरिक दृष्टि से भी इस काल मे गुरुकुल की अच्छी उन्नति

हुई । सन् १९१८ मे गुरुकुल मे राष्ट्र प्रतिनिधि सभा 'मौक पार्लियामैन्ट, का सूत्रपात हुआ । इस सभा मे ब्रह्मचारियो के मन्त्रिमण्डल 'केबिनेट" द्वारा किसी गम्भीर विषय पर मस्विदा पेश किया जाता है, और उस पर बाकायदा पार्लियामेन्टरी ढग से वाद-विवाद होता है । सन् १९१८ से बराबर राष्ट्र प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन प्रतिवर्ष होते रहे, और इन अधिवेशनो मे अनेक बार देश के नेता भी सम्मिलित हो चुके है ।

इसी काल मे कलकत्ता यूनिवर्सिटी कमीशन के प्रधान डा० सैडलस, सर आशुतोष मुकर्जी के साथ गुरुकुल पधारे । गुरुकुल का अवलोकन करके वे बहुत प्रभावित हुए । उन्होने अपने एक पत्र मे गुरुकुल के सबन्ध मे विचार प्रगट किये थे—"मैं समझता हू कि जिस शिक्षा विधि मे मातृभाषा को प्रथम और सबसे प्रमुख स्थान दिया जावे, वही यह सभव है कि मन का स्वतन्त्र विकास होकर मानसिक वृत्तियो तथा भावो पर प्रभुत्व प्राप्त हो सके ।—मेरी हार्दिक इच्छा है कि गुरुकुल का विकास राज्य द्वारा स्वीकृत एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के रूप मे हो सके" ।

डा० सैडलर के अतिरिक्त भूतपूर्व भारत सचिव मिस्टर मान्टेग्यू महोदय के प्राइवेट सेक्रेटरी श्रीयुत किश और राइट आनरेबल श्री श्रीनिवास शास्त्री महोदय गुरुकुल आये । श्रीयुत किश न गुरुकुल के सबन्ध मे लिखा था—"प्रबन्ध के साधनो की पूर्णता, कार्यकर्त्ताओं के विश्वास और ब्रह्मचारियो की प्रत्यक्ष प्रसन्नता ने मुझ पर इतना प्रभाव डाला है कि मैं उसका इन थोडी सी पक्तियो मे वर्णन नहीं कर सकता ।"

श्री श्रीनिवास शास्त्री ने अपने एक भाषण मे ये विचार प्रकट

किये थे---'शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी रहे या भारतीय भाषायें, इस प्रश्न पर बहुत वाद-विवाद है । मेरा अपना विचार यह रहा है कि विद्यालय विभाग मे शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाऐ ही रहनी चाहिये, परन्तु महाविद्यालय विभाग की पढाई अंग्रेजी के माध्यम द्वारा होनी चाहिय । परन्तु अब गुरुकुल को देख कर मै अपने इस विचार से परे हट रहा हू ।"

यह सचमुच गौरव की बात है, कि गुरुकुल ने श्री श्रीनिवास शास्त्री जी जैसे गम्भीर विचारक को भी अपने मन्तव्यो पर पुन विचार करने के लिये बाधित किया ।

सन्यासी होने के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ने आर्य समाज का एक प्रमाणिक इतिहास लिखने का विचार किया । इस कार्य को वे गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे बैठ कर करना चाहते थे । पर प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी और गुरुकुल के आचार्य श्री रामदेव जी के आग्रह तथा अन्तरग सभा की प्रार्थना पर स्वामी जी ने गुरुकुल कांगडी मे ही बैठकर इतिहास लिखने का निश्चय किया। इतिहास के लिये स्वामी जी ने बहुत सी सामग्री एकत्रित की । पर इस बीच मे गढ़वाल प्रान्त मे भयकर दुर्भिक्ष पडा । यह प्रदेश गुरुकुल के समीप ही था अत सभव नही था कि गुरुकुलवासी इसकी उपेक्षा कर सके । स्वामी श्रद्धानन्द जी ने दुर्भिक्ष निवारण के लिए एक अपील समाचार पत्रो मे प्रकाशित की और स्वय गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के साथ गढवाल प्रस्थान किया । स्वामी जी की अपील पर ७० हजार के लगभग रुपया एकत्रित हुआ था । गुरुकुल के विद्यार्थियो को जनता की क्रियात्मक सेवा करने का यह बहुत उत्तम अवसर मिला था। उन्होने इसका पूर्ण उपयोग किया और १९१८ की ग्रीष्मऋतु

मे गढवाल मे खूब काम किया ।

पर स्वामी जी बहुत देर तक गुरुकुल नही रह सके । सन् १९१९ मे भारत मे रौलट एक्ट के विरुद्ध आन्दोलन शुरू हुआ । महात्मा गाधी ने सत्याग्रह की घोषणा की । अनेक स्थानो पर सरकार और जनता का सघर्ष हुआ । अमृतसर मे जलियानवाला बाग का हत्याकाण्ड इसी समय हुआ । स्वामी जी भी इस आन्दोलन मे सम्मिलित हुए सितम्बर सन् १९८९ मे जब काग्रेस का अधिवेशन अमृतसर मे हुआ तो स्वामी जी उसकी स्वागत समिति के अध्यक्ष निर्वाचित हुए, यह समय देश मे तीव्र राजनीतिक आन्दोलन का था । सर्वत्र भारत मे ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भावना प्रबल हो रही थी । ऐसी स्थिति मे लोग राष्ट्रीय शिक्षा की आवश्यकता को भलीभाँति अनुभव करने लगे थे और गुरुकुल का महत्व जनता की दृष्टि मे बढ रहा था । ऐसे समय मे गुरुकुल को एक अत्यन्त प्रभावशाली नेता की आवश्यकता थी । विस्तृत राजनैतिक क्षेत्र मे पदार्पण करने के बाद भी स्वामी जी से फिर गुरुकुल के हित की सदा चिंता रहती थी तब गुरुकुल प्रेमी बार बार स्वामी जी से फिर गुरुकुल सभालने का अनुरोध करने लगे, तो फरवरी १९२० मे स्वमी जी फिर गुरुकुल लौट आये, और पहिले की तरह मुख्यधिष्ठाता तथा आचार्य दोनो पदो चार्ज ले लिया ।

विश्वविद्यालय की नई व्यवस्था

गुरुकुल के इतिहास मे सन् १९२१ का बडा महत्व है । गुरुकुल का स्वरूप क्या हो, इस विषय मे प्रतिनिधि सभा के नेताओ में देर से मतभेद चला आता था । गुरुकुल का विकास एक स्वतन्त्र विश्वविद्यालय के रूप मे हो रहा था । उसके सस्थापकों ने भारत में

प्रचलित शिक्षा को दूषित समझ कर ऋषि दयानन्द के शिक्षा सबन्धी आदर्शों को क्रिया मे प्ररिणत करने के लिये गुरुकुल की स्थापना की थी । पर कई लोगो का यह विचार था कि गुरुकुल केवल एक धार्मिक विद्यालय 'डिविनिटी कालेज' है । सामान्य शिक्षा देना गुरुकुल का काम नही है । अब सन् १९२१ मे इस वाद विवाद और मत भेद का अन्त कर गुरुकुल के स्वरूप को सर्वसम्मत रूप से निर्णीत करने का प्रयत्न किया गया और इसी के अनुसार २२ मार्च १९२१ को आर्य प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल के सम्बन्ध मे निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत किया ।

१. शिक्षा सबन्धी क्षमता को बढाने के लिये आवश्यकता होती है कि वर्तमान गुरुकुल को ऐसे विश्वविद्यालय के रूप मे प्ररिणत किया जाय, जिससे भिन्न २ विषयो मे शिक्षा दी जा सके । इस लिये निश्चय हुआ कि इस विश्वविद्यालय के साथ निम्नलिखित महाविद्यालय सबन्धित होगे ।

(क) वेद महाविद्यालय ।
(ख) साधारण महाविद्यालय ।
(ग) आयुर्वेद महाविद्यालय ।
(घ) कृषि महाविद्यालय ।

२. स० (क), (ख) का गुरुकुल मे पहिले से परस्पर सम्बन्ध अधिक रहा है, अब वह उचित परिवर्तन के पश्चात् कांगडी में पृथक् २ चलाये जावें । उनका वार्षिक व्यय विद्यालय के ऊपर लगभग बराबर हुआ करे । अब तक का एकत्रित धन व सम्पति या जो आगे को प्राप्त हो, इन्हीं के अर्पित रहे । जिसका नाम गुरुकुल धन होगा सिवाय उसके जो किसी विशेष कार्य के लिये प्राप्त हो ।

सारनाथ में धमेक स्तूप

पं० जवाहरलाल नेहरू संग्रहालय में

वेद महाविद्यालय

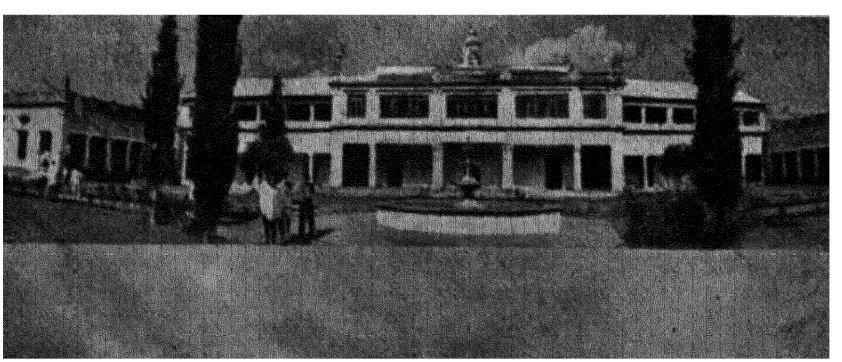

३. सं० ग, घ, ङ, महाविद्यालय उनके सम्बन्धी उचित धन प्राप्त होने पर तब प्रारम्भ किये जायेंगे, जब यह सभा सचित धन और स्थानादि का विचार करके आज्ञा दे ।

४ सब विद्यालय जो सभा की ओर से या सभा की आज्ञानुसार गुरुकुलो के नाम खोले हुये हो या खोले जाये स० (ख) महाविद्यालय से सबन्धित हो ।

५. ग, घ, ङ, महाविद्यालय कागडी से बाहर खोले जाय और उनमे गुरुकुल विद्यालय और अन्य विद्यालयो के छात्र अन्तरग सभा के बनाये नियमानुसार प्रविष्ट होगे ।

६ आयुर्वेदिक और कृषि महाविद्यालयो के पृथक् २ खुलने तक इन विषयो की जो पढाई अब होती है, वह केवल विशेष विषय के रूप मे ही साधारण महाविद्यालय मे ही होती रहेगी परन्तु आवश्यक विषयो मे इन विद्यार्थियो की योग्यता न्यून न हो। और उन्हे कोई पृथक् प्रमाण पत्र नही दिया जायगा, और इन विषयो पर वही धन व्यय होगा जो इनके लिये प्राप्त हो। गुरुकुल धन से जो वार्षिक व्यय अब होता है, वह १० वर्ष मे १० प्रतिशत के हिसाब से कम करके बन्द किया जायगा ।

७. इन सब की पाठविधि और नियम अन्तरग सभा बनायेगी ।

८. इस विश्वविद्यालय के प्रबन्ध के लिये एक विद्यासभा बनाई जावे। इसके बनाने तक अन्तरग सभा कार्य करेगी ।

गुरुकुल का क्या उद्देश्य है ? गुरुकुल का क्या स्वरूप है ? क्या गुरुकुल केवल धार्मिक विद्यालय है ? आदि सभी विषयों का निर्णय आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन में स्वीकृत हुवे इस प्रस्ताव से हो जाता है । गुरुकुल एक विश्वविद्यालय है, जिनमें भिन्न भिन्न विषयो की शिक्षा दी जाती है और शिक्षा सबन्धी क्षमता को बढ़ाने

के लिये सदा प्रयत्न किया जाता है। यह बात इस प्रस्ताव द्वारा बिलकुल स्पष्ट हो गई है। साथ ही इस प्रस्ताव मे यह भी निश्चय किया गया है कि गुरुकुल का सचालन करने के लिये एक पृथक् विद्यासभा का निर्माण किया जाय। यह निर्णय आगे चलकर किस प्रकार कार्य मे परिणत हुआ, इस पर यथा स्थान प्रकाश डालेगे।

स्वामी श्रद्धानन्द जी फरवरी १९२० से अक्तूबर १९२१ तक लगभग डेढ़ वर्ष गुरुकुल मे रहे। इस काल मे अनेक नवीन बाते गुरुकुल मे शुरू हुई। "सद्धर्म प्रचारक" के बन्द हो जाने के बाद गुरुकुल का कोई मुखपत्र नही था। अब "श्रद्धा" नामक नये साप्ताहिक पत्र का प्रारम्भ किया गया। श्रद्धा के सम्पादक स्वामी जी महाराज स्वय थे। न केवल आर्यजगत मे, अपितु बाहर भी "श्रद्धा" की खूब प्रसिद्धि हुई गुरुकुल को लोकप्रिय बनाने मे इस पत्र से बडी सहायता मिली। वेद सबन्धी अन्वेषण का कार्य गुरुकुल मे प्रारम्भ करने का विचार तो बहुत दिनो से था। पर उसे क्रिया मे परिणत नही किया जा सका था। अब सन् १९२० मे गुरुकुल मे बाकायदा "अनुसधान विभाग" खोल दिया गया। एक योग्य स्नातक को वैदिककोष तैयार करने को नियत किया गया और श्री पण्डित देवशर्मा जी वैदिक खोज के लिये विशेष रूप से रखे गये थे। यह भी यत्न किया गया कि विविध गुरुकुलो को एक सूत्र मे बाधा जाय। गुरुकुल वृन्दावन के कार्यकर्त्ताओ से इस विषय मे बातचीत भी प्रारम्भ हुई।

पर स्वामी जी देर तक गुरुकुल मे न रह सके। इस समय देश में प्रबल असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ हो रहा था। महात्मा गाधी ने ६ मास मे स्वराज्य प्राप्त करने का प्रोग्राम देश के सम्मुख रखा था सारे देश मे एक नई जागृति, नई चेतना उत्पन्न हो रही थी। यद्यपि स्वामी जी के महात्मा गाधी से अनेक विषयो मे मत भेद थे,

पर इस जागृति के काल मे वह स्वराज्य आन्दोलन से अपने को पृथक् नही रख सके। प्रधान रामकृष्ण जी को एक पत्र मे उन्होने लिखा था—"इस समय मे मेरी सम्मति मे "असहयोग" की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृभूमि का भविष्य निर्भर है। यदि आन्दोलन अकृतकार्य हुआ और महात्मा गाधी को सहायता न मिली, तो देश की स्वतन्त्रता का प्रश्न ५० वर्ष पीछे जा पडेगा। यह जाति के जीवन या मरण का प्रश्न हो गया है, इसलिये मै इस काम मे शीघ्र ही लग जाऊगा।"

असहयोग आन्दोलन मे कार्य करने की हार्दिक प्रेरणा ही थी जो स्वामी श्रद्धानन्द जी को गुरुकुल से बाहर ले गयी। यदि स्वामी जी कुछ समय तक और गुरुकुल के कर्णधार रहते, तो अपने अनेक प्रसिद्ध स्वप्नो को पूर्ण कर सकते थे। स्वामी जी गुरुकुल मे आयुर्वेदिक कृषि और व्यवसाय महाविद्यालय स्थापित करना चाहते थे। आयुर्वेद और कृषि की श्रेणिया तो खोल भी दी गई थी। इनमे से आयुर्वेद की श्रेणी इस समय एक पृथक् महाविद्यालय के रूप मे परिवर्तित भी हो चुकी है। पर कृषि और व्यवसाय के महाविद्यालय अब तक गुरुकुल मे नही खुल सके थे। स्वामी जी श्रद्धा के पृष्ठो मे बार बार अपनी यह इच्छा प्रकट की थी, कि गुरुकुल मे व्यवसाय महाविद्यालय (Industrial College) शीघ्र खुल जाना चाहिये। कला भवन के लिये वह बार बार अपील कर चुके थे। अपने बलिदान से दो ढाई मास पूर्व स्वामी जी ने "माई स्पेशल अपील" शीर्षक से एक लेख अपने अग्रेजी सप्ताहिक पत्र "लिबरेटर" मे लिखा था। इसमे उन्होने शिल्प व व्यवसाय महाविद्यालय के लिये धन की विशेष रूप से अपील की थी।

* * *

: ६ :

बाढ़ और पुनर्निर्माण

पं० विश्वम्भरनाथ जी

१९२१ मे स्वामी श्रद्धानन्द जी के चले जाने पर प० विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता नियत हुए । पण्डित जी आर्यसमाज के पुराने कार्यकर्त्ता थे । गुरुकुल की स्थापना के समय से ही आप गुरुकुल की स्वामिनी सभा के सदस्य थे और अनेक बार कोषाध्यक्ष तथा उप प्रधान के पद पर नियुक्त हो चुके थे । महात्मा मुन्शीराम जी के सन्यास लेने पर दो वर्ष के लिये वे सभा के प्रधान भी रहे प० जी सभा के ठोस कार्यकर्त्ता थे और महात्मा मुन्शीराम जी को इन पर दृढ विश्वास था । जिस समय महात्मा जी सन्यास लेने लगे, तो पण्डित जी को गुरुकुल मे आ कर कार्य सम्भालने के लिये प्रेरणा करते हुए उन्होंने लिखा था कि "उस उद्देश्य की पूर्ति के लिये जो मेरे और तुम्हारे लिये इतना प्रिय रहा, तुम्हे साहस पूर्वक बाहर निकल आना चाहिये ।" अब १९२१ मे पण्डित जी ने गुरुकुल का कार्य सम्भाला । आर्य समाज के वीतराग सन्यासी स्वामी सत्यानन्द जी आचार्य नियत हुये और शिक्षा सबन्धी कार्य उपाचार्य के रूप मे प्रो० रामदेव जी के हाथ मे रहा । १९२४ मे स्वामी सत्यानन्द जी के त्याग पत्र दे देने पर प्रो० रामदेव जी आचार्य बने

और उपाचार्य का काम प० विश्वनाथ जी विद्यालकार के हाथ मे आया ।

प० विश्वम्भरनाथ जी १९२१ से १९२७ तक गुरुकुल मे मुख्याधिष्ठाता रहे। यह काल गुरुकुल के इतिहास मे बडा घटना पूर्ण है । आन्तरिक प्रबन्ध और व्यवस्था की दृष्टि से इस समय मे गुरुकुल की बहुत उन्नति हुई प० विश्वम्भरनाथ जी आर्थिक प्रबन्ध मे बहुत दक्ष थे। उन्होने गुरुकुल के बजट को नये ढग से व्यवस्थित किया और गुरुकुल के व्यय को ब्रह्मचारियो के भरणपोषण और शिक्षा—इन दो विभागो मे नियमित रूप से विभक्त कर दिया और यह नियम बनादिया कि एक का धन दूसरे विभाग मे व्यय न हो । भरण पोषण के लिये केवल वह रुपया व्यय हो जो सरक्षको से फीस द्वारा या छात्रवृत्ति की आमदनी से प्राप्त होता है । शिक्षा के लिये व्यय, दान तथा उपाध्याय वृत्तियो से सूद का धन ही हो। साथ ही खर्चे को कम करने के लिये और गुरुकुल की आय तथा व्यय को बराबर करने के लिये बहुत उद्योग किया गया ।

गुरुकुल को बाकायदा विश्वविद्यालय के रूप मे परिवर्तित करने का प्रस्ताव सन् १९२१ मे पास किया जा चुका था। अब सन् १९२३ मे शिक्षा विषयक प्रबन्ध के लिये पृथक् शिक्षापटल (Board of Education) की स्थापना की गई। शिक्षा पटल मे गुरुकुल के अध्यापको के अतिरिक्त तीन अन्य तत्वो का समावेश किया गया—

१ अन्तरग सभा के प्रतिनिधि

२ स्नातक मण्डल के प्रतिनिधि

३ बाहर के विद्वान ।

शिक्षापटल का निर्माण निम्नलिखित प्रकार से करने की व्यवस्था की

गई ।

१-आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रधान ।

१-गुरुकुल कागडी का मुख्याधिष्ठाता ।

१-गुरुकुल कागडी के प्रत्येक महाविद्यालय का अध्यक्ष ।

१-गुरुकुल कांगडी का आचार्य ।

६-अन्तरग सभा द्वारा निर्वाचित ६ महानुभाव जिनमे से न्यून से न्यून ३ सज्जन शिक्षा कला मे प्रवीण होगे ।

३-सबन्धित महाविद्यालयो के उपाध्यायो की ओर से निर्वाचित तीन प्रतिनिधि ।

१-दयानन्द सेवासदन के सदस्यो और गुरुकुल के स्थिर सेवको का निर्वाचित एक प्रतिनिधि ।

२-गुरुकुल के स्नातको की ओर से निर्वाचित एक प्रतिनिधि ।

गुरुकुल विश्वविद्यालय का मुख्याधिष्ठाता पदाधिकार से शिक्षापटल का प्रधान और प्रस्तोता मन्त्री होता है । कार्यारम्भ के लिये ७ की उपस्थिति आवश्यक है । शिक्षापटल के बन जाने से गुरुकुल मे शिक्षा विषयक क्षमता बढाने मे बहुत सहायता मिली । पटल ने पहिले मत्री (प्रस्तोता) गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक प० महानन्द जी सिद्धान्तालकार नियत किये ।

कन्या गुरुकुल व अन्य नये शाखा गुरुकुल

इस काल मे गुरुकुल की अनेक नई शाखाये खुली । १९२३ मे दिवाली के दिन देहली नगर के दरियागज मुहल्ले मे एक बडी कोठी किराये पर ले कर कन्या गुरुकुल की स्थापना की गई । १९२१ मे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कागडी की वार्षिकोत्सव के अवसर पर यह घोषणा की थी, कि दिल्ली निवासी सेठ रघुमल जी कन्या

गुरुकुल के लिये एक लाख रुपया दान देने को उद्यत है। सेठ रघुमल जी गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के अनन्य भक्त थे। इससे पूर्व १९१२ मे वे दिल्ली के समीप गुरुकुल की शाखा खोलने के लिये एक लाख का दान दे चुके थे। अब उन्होने ही कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिये भी आर्य प्रतिनिधि सभा को प्रोत्साहित किया। गुरुकुल काँगडी की स्थापना के समय मे ही कन्याओ के लिए पृथक् गुरुकुल को खोलने का विचार आता था। महात्मा मुन्शीराम जी देर मे इसके लिये आन्दोलन कर रहे थे। सद्धर्मप्रचारक मे उन्होने अनेक बार आर्य जनता का ध्यान इस ओर आकृष्ट किया था। इसीलिये गुरुकुल कागडी की नियमावली मे यह टिप्पणी देर से प्रकाशित हो रही थी, कि साधन जुट जाने पर कन्याओ की शिक्षा के लिये भी पृथक् गुरुकुल की स्थापना कर दी जायगी। अब सेठ रघुमल जी के दान से सन् १९२३ मे इस विचार को क्रिया मे परिणत होने का अवसर मिला।

चार साल तक कन्या गुरुकुल दिल्ली मे रहा। पहली ५ श्रेणिया वहा शुरु मे ही खोलदी गई थी। धीरे धीरे आठ श्रेणियो का विद्यालय विभाग और तीन उच्च कक्षाओ का महाविद्यालय विभाग भी स्थापित किया गया।

पर दिल्ली नगर मे कन्या गुरुकुल के लिये उपयुक्त स्थान नही मिला अत चार वर्ष बाद उसे देहरादून ले जाया गया। प्रारम्भ मे दो कोठिया किराये पर ले कर इस सस्था को वहा स्थापित किया गया पर कोठियो के कमरे गुरुकुल के लिये पर्याप्त नही थे। इसलिये टीन के शैड बनवा कर उसमे काम चलाया गया १९३० मे देहरादून मे राजपुर रोड पर दो बडी कोठिया कन्या गुरुकुल के लिये क्रय कर ली गयी। इन कोठियो के साथ जमीन पर्याप्त थी। धीरे धीरे इनमें

नई इमारत बनाई गई। इस समय देहरादून मे कन्या गुरुकुल की भूसम्पत्ति कई लाख कीमत की है, और यह सस्था बहुत उन्नति कर चुकी है।

गुजरात प्रान्त के निवासियो की चिरकाल से इच्छा थी, कि गुरुकुल कागडी की एक शाखा उनके प्रान्त मे भी खोली जावे। श्री प० ईश्वरदत्त विद्यालकार, श्री दयाल जी लल्लू भाई और श्री झीगा भाई देवा भाई के अनथक परिश्रम से सन् १९२३ मे गुरुकुल के लिये २५ हजार रुपये नकद जमा हुये और गुजरात मे गुरुकुल सभा का निर्माण हुआ। सूरत जिले की बादोली तहसील मे पूर्णा नदी के सुरम्य तट पर १८ फरवरी सन् १९२४ को गुरुकुल की एक शाखा स्थापित की गई। सूपा ग्राम के निकट होने के कारण इसका नाम 'गुरुकुल सूपा' रखा गया। गुरुकुल की आधार शिला श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के कर कमलो द्वारा रखी गई थी। गुरुकुल सूपा की उन्नति बडी तेजी से हुई। अब इसमे १० श्रेणिया हैं और प्रतिवर्ष इसके विद्यार्थी गुरुकुल कागडी की अधिकारी परीक्षा पास कर महाविद्यालय विभाग मे प्रविष्ट होते हैं।

१९२४ मे ही हरियाणा प्रान्त मे झज्झर नामक स्थान पर गुरुकुल की एक शाखा स्थापित हुई। इसकी स्थापना मे महाशय विश्वम्भरनाथ जी, स्वामी परमानन्द जी और स्वामी ब्रह्मनन्द जी ने बडा पुरुषार्थ किया।

सन् १९२४ मे गुरुकुल कागडी की एक शाखा भटिडा मे खुली इसकी भी आधार शिला श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा रखी गई।

इस प्रकार गुरुकुल की चार नई शाखाये १९२३-२४ मे स्थापित हुई। गुरुकुल के विस्तार की दृष्टि मे ये वर्ष बडे महत्व के हैं।

सन् १९२४ मे जहा गुरुकुल का इतना विस्तार हुआ, वहा गुरुकुल पर सबसे बडी विपत्ति भी आई । गुरुकुल गगा के तट पर स्थित था सितम्बर १९२४ मे असाधारण वर्षा के कारण गगा मे भयकर बाढ़ आई और गुरुकुल की बहुत इमारतें नष्ट हो गयी । उन दिनो गुरुकुल मे बडी छुट्टिया थी । विद्यार्थी प्राय बाहर गये हुए थे जो व्यक्ति वहा थे उनकी बडी कठिनता से रक्षा हुई । इमारतो का एक लाख से ऊपर का नुकसान हुआ इस भयकर बाढ के कारण गुरुकुल के स्थान परिवर्तन का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण हो गया । प्रतिनिधि सभा मे इस विषय मे अनेक पक्ष थे । कुछ लोग गुरुकुल को पजाब मे ले जाना चाहते थे । कईयो का मत दिल्ली के समीप गुरुकुल बनाने का था । अनेक महानुभाव कागडी ग्राम के समीप ही दूसरी जगह पर गुरुकुल की नई इमारत बनाना चाहते थे । पर विश्वम्भरनाथ जी का पक्ष गगा के पश्चिमी तट पर सुरक्षित स्थान पर गुरुकुल रखने का था । प० जी का पक्ष बहुमत से पास हो गया और गगा की नहर के साथ गुरुकुल के लिये नई भूमि खरीदी गई । अब तक इस नई भूमि पर १५ लाख से ऊपर की लागत की इमारतें बन चुकी हैं और अनेक इमारतें अभी अवशिष्ट हैं ।

१९२५ मे गुरुकुल मे "व्रताभ्यास" की परिपाटी डाली गई । इसका उद्देश्य यह है कि ब्रह्मचारी अपने वैयक्तिक और सामाजिक कर्त्तव्यो को दण्ड के भय से नही, किन्तु उनकी उपयोगिता और महत्व समझ कर पूरा करें । प्रत्येक ब्रह्मचारी के पास एक व्रताभ्यास पजिका रहती है जिसमे प्रतिदिन वह स्वय लिखता है कि किन किन नियमो का उसने पालन किया, किन किन का नही किया । जिन नियमो का पालन न किया हो उनके सबन्ध मे कारण देना होता है । मास के अन्त में

इस पजिका के आधार पर अंक भी दिये जाते है शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुल का यह मौलिक परीक्षण है । अखिल एशियाटिक शिक्षा परिषद् मे इस पद्धति को बहुत पसन्द किया गया और इसे सर्वत्र प्रारम्भ करने की सिफारिश भी की गई ।

शिवालक का दृश्य

७ :

रजत जयन्ती

१९२७ मे गुरुकुल को स्थापित हुए पूरे २५ वर्ष हो गये थे। अत इस वर्ष का वार्षिकोन्सव रजतजयन्ती (सिलवर जुबली) के रूप मे बडी धूमधाम के साथ मनाया गया। इसमे ५० हजार से अधिक यात्री विविध प्रान्तो से सम्मिलित हुए। इन मे महात्मा गाधी, प० मदनमोहन मालवीय, श्री निवास आयगर, बाबू राजेन्द्र प्रसाद, सेठ जमुना लाल बजाज, डा० मुन्जे और श्री शकरलाल बैकर के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इनके अतिरिक्त प्रिन्सीपल ध्रुव साधुवर वास्वानी, डा० अविनाशचन्द्र जी दास, श्रीयुत पीयूषकान्ति घोष आदि अनेक प्रसिद्ध लेखक भी जयन्ती महोत्सव मे पधारे थे। आर्य समाज के तो प्राय सभी नेता, सन्यासी और विद्वान इस अवसर पर उपस्थित थे। गुरुकुल के २५ सालो के उत्सव मे यह पहला ही उत्सव था, जब इस सस्था के सस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानद जी महाराज उपस्थित नही थे। जयन्ती महोत्सव के लगभग ३ मास पूर्व २३ सितम्बर १९२६ को दिल्ली मे उनका बलिदान हुआ था। इस बलिदान के कारण जयन्ती महोत्सव के आनन्द पूर्ण समारोह मे एक गभीर वेदना सी मिली हुई थी। जयन्ती महोत्सव बडी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। उस अवसर पर १५३०००) रु० नकद प्राप्त हुवे और १३००००) रु० की प्रतिज्ञाऐ हुई। इन प्रतिज्ञाओ का प्राय साराधन

पीछे से प्राप्त हो गया था।

जयन्ती को सफलता के साथ पूर्ण करवा कर श्री पण्डित विश्वम्भरनाथ जी गुरुकुल से विदा हो गये। पण्डित जी का यह सिद्धान्त था कि किसी व्यक्ति को एक सस्था मे ५ वर्ष से अधिक सचालक रूप मे नही रहना चाहिये। इसके अनुसार उन्होने त्याग पत्र दे दिया और श्री आचार्य रामदेव जी उनके स्थान पर मुख्यधिष्ठाता नियत हुये।

आचार्य रामदेव जी

आचार्य रामदेव जी सन् १९०५ मे गुरुकुल आये थे। उन्होने गुरुकुल का कार्य अग्रेजी के अध्यापक के रूप मे प्रारम्भ किया था। पर वे लगन के पक्के थे। और गुरुकुल के लिये रात दिन एक कर कार्य करने मे उन्हे आनन्द आता था। इसी का परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल के सचालन मे उनका हाथ निरन्तर बढ़ता ही गया। वे अध्यापक से मुख्याध्यापक, फिर उपाचार्य फिर आचार्य और अब १९२७ मे मुख्याधिष्ठाता के पद पर अधिष्ठित हुए। इन २२ वर्षों मे वे शिक्षाविषयक प्रबन्ध के प्राय कर्त्ता धर्त्ता ही रहे। यही नही, गुरुकुल के सचालन मे भी उनका प्रमुख भाग रहा। धन एकत्रित करने मे वे महात्मा मुन्शीराम जी के दायें हाथ थे। उनके व्याख्यानो की समाज मे धूम थी। उनमे एक प्रकार की अद्भुतशक्ति थी, जो अटल विश्वास, त्याग और लगन से मनुष्य मे विकसित होती है।

सन् १९२७ से १९३३ तक आचार्य रामदेव जी गुरुकुल मे मुख्याधिष्ठाता रहे। इस काल मे गुरुकुल की नई इमारत के लिये धन एकत्रित किया गया आचार्य रामदेव जी के प्रयत्न से लाखो रुपया गुरुकुल को दान में मिला। नई भूमि का क्रय कर उसपर इमारतें बननी शुरू हुई। सन् १९३० मे गुरुकुल अपनी पुरानी भूमि को सदा के लिये नमस्कार कर नये स्थान पर आ गया। गगा के तट वाली उस

पुरानी भूमि का कुलवासियो के हृदय मे एक विशेष आकर्षण था। उस स्थान पर तपस्वी मुन्शीराम ने अपने तप को सिद्ध किया था। भरे हृदयो से कुलवासियो ने उस स्थान का परित्याग किया और एक बृहद् यज्ञ के साथ नवीन भूमि मे निवास का आरम्भ हुआ।

बीस लाख के लगभग मूल्य की इमारतो को तैयार करने के लिये धन एकत्रित करना साधारण बात न थी। आचार्य रामदेव जी ने इसके लिये अनथक परिश्रम किया उन्ही के प्रभाव व श्रम का यह परिणाम था, कि आर्य जनता ने गुरुकुल की नई इमारतो के लिये दिल खोलकर दान दिया। गुरुकुल के अध्यापको व अन्य गुरुकुल प्रेमियो ने भी धन एकत्रित करने में आचार्य जी को सहयोग दिया। इसी प्रकार अन्य भी अनेक महानुभावो ने अत्यन्त उदारता पूर्वक इस समय गुरुकुल की नई इमारतो के लिये दान दिया। उन्ही प्रयत्नो से भयकर जल-प्रवाह बाढ द्वारा हुआ नुकसान पूरा हो सका।

सत्याग्रह आन्दोलन और गुरुकुल

सन् १९३० मे महात्मा गाधी के नेतृत्व मे सत्याग्रह सग्राम का प्रारम्भ हुआ। सारे भारत मे एक आग सी धधक उठी। हजारो की सख्या मे देशभक्त लोग सत्याग्रह आन्दोलन मे कैद होने लगे। सरकारी स्कूल और कालेज तक इसके प्रभाव से न बच सके इस दशा मे यह कैसे सभव था कि गुरुकुल पर इस देश व्यापी आन्दोलन का प्रभाव न होता गुरुकुल एक राष्ट्रीय सस्था है। जब कभी देश, जाति व धर्म के लिये त्याग की आवश्यकता हुई, गुरुकुल कभी पीछे नही रहा। । १९३० का सत्याग्रह सग्राम नवयुवको को त्याग और तपस्या के लिये आवाहन कर रहा था। गुरुकुल के विद्यार्थी ऐसे समय मे शान्त नही रह सके। उन दिनो ब्र० सर्वमित्र १४वी श्रेणी मे पढ़ते थे। वह एक अत्यन्त होनहार

विद्यार्थी थे। इनके नेतृत्व मे गुरुकुल के विद्यार्थियो ने देश के प्रति अपने कर्त्तव्यपालन का निश्चय किया। गुरुकुल के अधिकारी इसके लिये अनुमति नही दे सकते थे, क्योकि गुरुकुल का एक सस्था के रूप मे सत्याग्रह सग्राम में भाग लेना सभव नही था अत अधिकारियो से अनुमति प्राप्त न होने पर भी विद्यार्थियो ने स्वराज्य सग्राम मे भाग लिया और विवश हो कर कुछ महीनो के लिये गुरुकुल के लिये महाविद्यालय विभाग मे अवकाश करना पडा। बहुत से विद्यार्थी और उपाध्याय भी कैद हो गये और ब्र० सर्वमित्र तथा उनके साथी ब्र० सत्यभूषण देहातो मे काम करते हुए बीमार पडे और स्वर्ग सिधारे। विपत्तियो और प्रचण्ड महामारी की परवाह न कर जिस ढग से इन ब्रह्मचारियो ने अपने प्राणो को मातृभूमि के लिये स्वाहा किया, उसे हम बलिदान कहे तो अनुचित न होगा।

कुछ मास के असाधारण अवकाश के बाद गुरुकुल तो खुल गया, परन्तु अनेक विद्यार्थी सत्याग्रह सग्राम मे लगे रहे। सत्याग्रह के स्थगित होने पर ये फिर गुरुकुल मे प्रविष्ट हुए और अपनी पढाई को पूर्ण किया।

प्रबन्ध समिति

सन् १९३२ मे आचार्य रामदेव जी भी सत्याग्रह मे कार्य करने के लिये गुरुकुल से चले गये। उनके बाद प्रतिनिधि सभा ने किन्ही एक महानुभाव को गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता नियत नहीं किया, अपितु गुरुकुल का प्रबन्ध एक समिति के सुपुर्द किया। श्रीयुत देवराज जी सेठी उन दिनो गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता थे। उन्हे उप समिति का मत्री बनाया गया उनके अतिरिक्त श्री पडित चमूपति जी एम० ए० और श्री प० देवशर्मा जी विद्यालकार इसमे और रखे गये। उप-समिति का प्रधान पद श्री चमूपति जी को दिया गया। एक मुख्याधिष्ठाता के स्थान पर तीन

महानुभावो की उप-समिति नियत करना गुरुकुल के इतिहास मे एक नया परीक्षण था। यह सफल न हो सका। कारण यह था कि समिति के तीनो सदस्यो के विचार एक सदृश नही थे उन मे मतभेद था इस समस्या का अन्त तब हुआ जब श्री प० देवशर्मा जी और श्री देवराज जी सेठी त्यागपत्र देकर विस्तृत क्षेत्र मे सेवा के लिये बाहर चले गये। अब प० चमूपति जी मुख्याधिष्ठाता और आचार्य दोनो पदो का कार्य करने लगे। आचार्य रामदेव जी के जाने पर गुरुकुल के कार्य का सचालन करने के लिये जो उप-समिति बनी थी वह पूरा एक वर्ष भी कार्य न कर सकी और सन् १९३४ के अन्तिम दिनो मे गुरुकुल का सचालन भार श्री प० चमूपति जी के पास आ गया।

श्री प चमूपति जी आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान और प्रचारक थे। गुरुकुल से सबन्ध बहुत पुराना था। अब से लगभग २० वर्ष पूर्व वे गुरुकुल मुलतान के मुख्याधिष्ठाता बने थे और उस गुरुकुल का सचालन करने मे उन्हे बडी सफलता मिली थी। आचार्य रामदेव जी उनके गुणो पर मुग्ध होकर उन्हे लाहौर ले आये थे। और उन्हे दयानन्द सेवासदन का आजीवन सदस्य बनाने के लिये तैयार किया था। अनेक वर्षों तक प० जी ने लाहौर मे 'आर्य' पत्र का सम्पादन किया। वक्ता और लेखक के रूप मे आर्यसमाज मे उनकी खूब ख्याति हुई। पहले वे आर्य सिद्धान्त के प्रोफेसर नियत हो कर आये और 'वैदिक मैगजीन" के सपादन मे भी आचार्य रामदेव जी की सहायता करते रहे। रामदेव जी के जेल जाने पर गुरुकुल के सचालन का कार्य उनके सुपुर्द किया गया और उन्होने योग्यता से इस कार्य को निभाया।

इन वर्षों मे भी गुरुकुल खूब उन्नति हुई। हिन्दू यूनिवर्सिटी काशी मे प्रतिवर्ष हिन्दी और सस्कृत मे वाद विवाद होते हैं। इनमे विविध

यूनिवर्सिटिया के प्रतिनिधि सम्मिलित हो कर किसी पूर्व निश्चित विषय पर वाद विवाद करते है । सर्वोत्तम वक्ताओ को पुरस्कार प्रदान किये जाते है । और जिस शिक्षणालय के विद्यार्थी सबसे अधिक अक प्राप्त करते है उन्हे विजयोपहार प्रदान किया जाता है । सन् १९३१ से १९३४ तक गुरुकुल के विद्यार्थी इन अन्तर्विश्वविद्यालय वाद विवादो मे सम्मिलित हुए और निरतर विजयी रहे । केवल बनारस मे ही नही अपितु मेरठ, दिल्ली आदि कई शिक्षा केन्द्रो मे इस प्रकार के वाद विवादो मे गुरुकुल के विद्यार्थी "विजयोपहार" जीतकर लाये ।

सन् १९३१ मे गुरुकुल अधिक सर्वप्रिय बनाने के साधनो की सिफारिश करने के लिये महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता मे एक कमीशन आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त हुआ । दो वर्ष तक परिश्रम कर इस कमीशन ने एक रिपोर्ट तैयार की ।

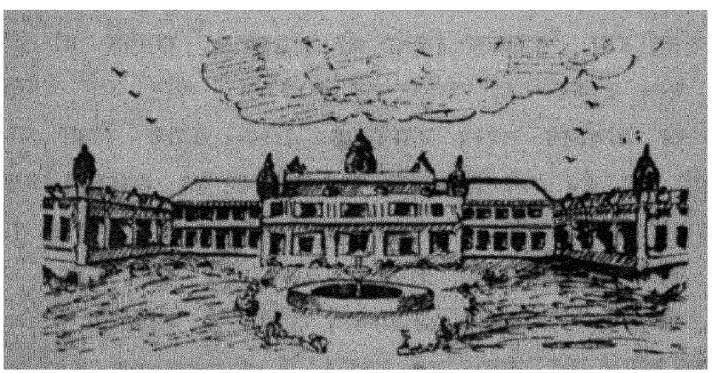

वेद महाविद्यालय

* * *

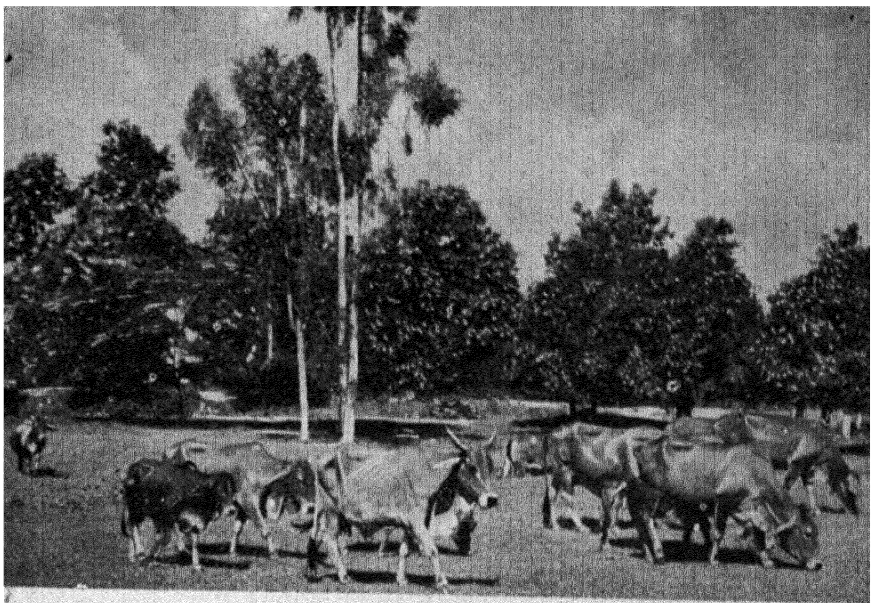

गुरुकुल का गोधन

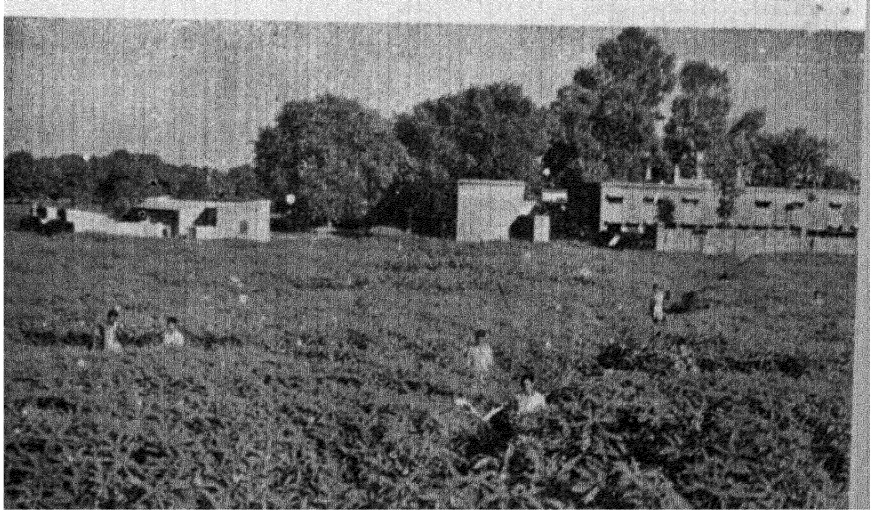

लहलहाती कृषि

यूनिवर्सिटियों के प्रतिनिधि सम्मिलित हो कर किसी पूर्व निश्चित विषय पर वाद विवाद करते हैं । सर्वोत्तम वक्ताओ को पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। और जिस शिक्षणालय के विद्यार्थी सबसे अधिक अक प्राप्त करते हैं उन्हे विजयोपहार प्रदान किया जाता है । सन् १९३१ से १९३४ तक गुरुकुल के विद्यार्थी इन अन्तर्विश्वविद्यालय वाद विवादो मे सम्मिलित हुए और निरतर विजयी रहे। केवल बनारस मे ही नही अपितु मेरठ, दिल्ली आदि कई शिक्षा केन्द्रो मे इस प्रकार के वाद विवादो मे गुरुकुल के विद्यार्थी "विजयोपहार" जीतकर लाये।

सन् १९३१ मे गुरुकुल अधिक सर्वप्रिय बनाने के साधनो की सिफारिश करने के लिये महात्मा नारायण स्वामी जी की अध्यक्षता मे एक कमीशन आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा नियुक्त हुआ । दो वर्ष तक परिश्रम कर इस कमीशन ने एक रिपोर्ट तैयार की।

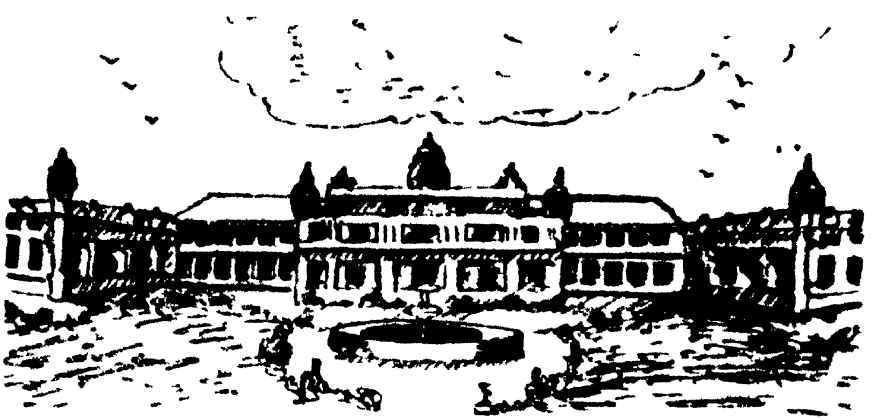

वेद महाविद्यालय

डॉ० मदनमोहन उत्सव पर भाषण करते हुए

चिन्तामणि द्वारकानाथ दशपुत्र संग्रहालय में एक प्राचीन मुद्रा को ध्यान से देखते हुए

८ :

विद्या सभा की स्थापना

सन् १९३५ मे गुरुकुल के प्रबन्ध के सबन्ध मे बहुत से महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए, गुरुकुल के लिये पृथक् विद्यासभा स्थापित करने का विचार बहुत पुराना है । महात्मा मुन्शीराम जी ने इसके लिये सन् १९१० से ही आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया था । १९२१ मे जिस प्रस्ताव द्वारा प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल को एक विश्वविद्यालय के रूप में परिवर्तित किया उसमे ही यह भी सिद्धान्त रूप में स्वीकृत कर लिया कि गुरुकुल के लिये विद्यासभा का पृथक् रूप से निर्माण होना चाहिये । १९२४ मे विद्यासभा के सगठन का खाका तैयार हुआ और प्रतिनिधि सभा मे यह स्वीकृत हो गया । पर कुछ कारणों से उसे क्रिया मे परिणत नही किया जा सका । १९३५ मे विद्यासभा की स्थापना के लिने फिर प्रबल आदोलन हुआ । आर्य प्रतिनिधि सभा का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत हो गया था कि एक कार्यकारिणी समिति (अन्तरंग सभा) सब विषयो पर यथोचित ध्यान नहीं दे सकती थी । साथ ही गुरुकुल अब एक अच्छे बडे विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हो गया था । उस के लिये एक ऐसी सभा की आवश्यकता थी जिसका मुख्य कार्य गुरुकुल का ही संचालन हो । स्नातक मण्डल ने इसके लिये बड़ा प्रबल आन्दोलन किया । सन् १९३५ आर्य प्रतिनिधि सभा के नये निर्वाचन का साल था । इसका लाभ उठा कर

विद्यासभा के पक्षपाती लोग बडी सख्या मे प्रतिनिधि निर्वाचित होकर आये। परिणाम यह हुआ कि १९३५ के प्रतिनिधि सभा के अधिवेशन मे गुरुकुल के लिये पृथक् विद्यासभा स्थापित कर ली गई। गुरुकुल के इतिहास मे यह बात बहुत महत्व की हुई।

विद्यासभा की रचना निम्नलिखित प्रकार से करने की व्यवस्था की गई—

१. विद्यासभा के कुल सदस्यो की सख्या २७ हो।

२. इन २७ सदस्यो मे से न्यून से न्यून १८ आर्य प्रतिनिधि सभा के सभासद् हो–

३. आर्यप्रतिनिधि सभा के निम्नलिखित पदाधिकारी अपने पद के कारण विद्यासभा के सदस्य हो।

(क) आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान
(ख) ,, के तीनो उप प्रधान
(ग) ,, के मत्री
(घ) ,, के कोषाध्यक्ष

४. इन छः पदाधिकारियो के अतिरिक्त कम से कम १२ व्यक्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब द्वारा विद्यासभा के लिये निर्वाचित किये जावें इन सदस्यों को निर्वाचित करते हुए यह ध्यान रखा जावे, कि ये सदस्य विद्या आदि विशेष गुणों मे सम्पन्न हो।

५. साथ ही गुरुकुल के निम्नलिखित पदाधिकारी भी अपने पद के कारण विद्या सभा के सदस्य हो।

(क) गुरुकुल कांगडी का मुख्याधिष्ठाता।
(ख) गुरुकुल कांगड़ी का आचार्य।
(ग) कन्या गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता।

(घ) कन्या गुरुकुल की आचार्या ।

६ इनके अतिरिक्त शेष पांच सदस्यो की नियुक्ति निम्नलिखित प्रकार से की जाय—

(क) गुरुकुल के विद्यार्थी व विद्यार्थिनियो के सरक्षको मे से एक ।

(ख) गुरुकुल के स्नातको व स्नातिकाओ मे से तीन, जिनमे एक अवश्य स्नातिका हो ।

(ग) गुरुकुल के उपाध्याय वर्ग मे से एक ।

विद्यासभा के सदस्य केवल वही बन सकें, जिन्हे गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से वास्तविक प्रेम हो, और जो स्वय अपने बालको को व बालिकाओ को गुरुकुल मे पढ़ाने के लिये उद्यत होकर गुरुकुल प्रेम का साक्षात् प्रमाण देने को उद्यत हो ।

विद्यासभा के बन जाने से गुरुकुल का प्रबन्ध व सचालन आर्य प्रतिनिधि सभा के 'वेद प्रचार विभाग' से पृथक् हो गया । इससे गुरुकुल की समस्याओ पर अधिक ध्यान दे सकना व इस सस्था की उन्नति के लिये प्रयत्न कर सकना अधिक सभव हो गया ।

परिवर्तन

१९३५ के अप्रैल मास में प० वसूपति जी ने गुरुकुल से त्याग पत्र दे दिया था । नव निर्मित विद्या सभा ने उनके स्थान पर पं० सत्यव्रत सिद्धान्तालकार को मुख्याष्ठिाता और प० देवशर्मा विद्यालकार को आचार्य पद पर नियत किया । प० सत्यव्रत जी गुरुकुल के सुयोग्य स्नातक हैं और सन् १९२३ से गुरुकुल में कार्य कर रहे थे । अनेक वर्षों तक वे गुरुकुल के प्रस्तोता (रजिस्ट्रार) रहे थे । अत: शिक्षा

विषयक प्रबन्ध मे उनका देर से हाथ था। अच्छे वक्ता और लेखक होने के कारण न केवल आर्य सामाजिक क्षेत्र मे अपितु बाहर भी उनकी अच्छी ख्याति थी। प० देवशर्मा जी भी गुरुकुल के स्नातक है और सन् १९२१ से कार्यकर्त्ता के रूप मे भी गुरुकुल से उनका सबन्ध था। अनेक बार पहिले भी वे उपाचार्य व 'सामायिक आचार्य' का कार्य कर चुके थे।सादगी और देश सेवा के लिये उनकी प्रसिद्धि थी। सदाचार और तपस्या के लिये महात्मा गाधी भी उनकी प्रतिष्ठा करते थे।

प० सत्यव्रत जी ने गुरुकुल की उन्नति के लिये विशेष उद्योग किया। चन्दा करके धन एकत्र करना कितना कठिन है, इस बात का उन्हे अच्छी तरह अनुभव था। वे इस प्रयत्न मे थे, कि आर्थिक दृष्टि से गुरुकुल को स्वावलम्बी बनाया जाय, और खर्च चलाने के लिये केवल चन्दे पर आश्रित रहने की आवश्यकता न रहे। उन्होने यह विचार किया कि यदि गुरुकुल मे व्यवसाय विभाग को भलीभांति उन्नत किया जाय, तो इतनी आमदनी की जा सकती है कि गुरुकुल बहुत कुछ आत्मनिर्भर हो जाय। गुरुकुल मे आयुर्वेदिक फार्मेसी कई सालो से स्थापित थी। साथ ही पुस्तक प्रकाशन विभाग और प्रेस भी विद्यामान थे रसायन विज्ञान के प्रो० श्री फकीरचन्द त्रेहन को व्यवसायिक रसायन का क्रियात्मक अनुभव था, और वे स्याही, फिनाइल आदि तैयार करने के लिये सदा उत्सुक रहते थे। प० सत्यव्रत जी ने यह अनुभव किया कि यदि इन विभागो का भलीभाति ध्यान दे कर उन्हें उन्नत किया जाय तो गुरुकुल आर्थिक चिन्ताओ से मुक्त हो सकता है। इसलिये उन्होने "व्यवसाय पटल" का सगठन किया और स्वय आयुर्वेदिक फार्मेसी आदि के विकास मे विशेष दिलचस्पी लेनी शुरू की। परिणाम यह

हुआ की गुरुकुल के इस विभाग ने बहुत उन्नति की और कुछ ही समय में गुरुकुल को अच्छी धन राशि प्राप्त होने लगी।

प्रो० फकीर चन्द जी की अध्यक्षता मे व्यवसायिक 'रसायन विभाग की पृथक् रूप से स्थापना की गई। इस विभाग द्वारा सब प्रकार की स्याहिया साबुन और फिनाइल तैयार किये जाने लगे। जनता ने इसका उत्साह पूर्वक स्वागत किया। अनेक म्यूनिसिपैलिटियो, बैंको व व्यापारिक सस्थाओ ने इन वस्तुओ की अपनी अवश्यकताओ को गुरुकुल से पूरा करना शुरू किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों मे यह विभाग भी आमदनी का अच्छा साधन बन गया।

प्रेस की उन्नति और पुस्तको के प्रकाशन पर भी इस समय विशेष ध्यान दिया गया। जब शुरू शुरू मे गुरुकुल मे महाविद्यालय विभाग की स्थापना हुई थी, तो अनेक प्रोफेसरो ने हिन्दी मे उच्चकोटि के ग्रन्थ लिखे थे। इनका प्रकाशन भी गुरुकुल की ओर से हुआ था। प्रो० साठे जी, प्रो० महेशचरण सिन्हा व प्रो० गोवर्धन जी आदि के इन ग्रन्थो का उल्लेख पहिले किया जा चुका है। बाद में भी गुरुकुल के अनेक प्रोफेसरो ने हिन्दी ग्रन्थ लिखे, पर इनका प्रकाशन गुरुकुल की ओर से नही हुआ। इस समय अनेक उच्चकोटि के ग्रन्थ गुरुकुल द्वारा प्रकाशित किये गये। जिनमे विशेष रूप से उल्लेखनीय प० चन्द्रगुप्त विद्यालकार द्वारा लिखित "वृहत्तर भारत" है। भारतीय सभ्यता व सस्कृति किस प्रकार भारत से बाहर विदेशो मे फैली, उत्तर भारत के महत्वाकांक्षी राजपुत्रो ने किस प्रकार सुदूर पूर्व उत्तर पश्चिमी एशिया में अपने नये उपनिवेश स्थापित किये इस सब का वृत्तात बडे सुन्दर रूप में इस ग्रन्थ मे दिया गया है

कुछ समय पूर्व "गुरुकुल स्वाध्याय मजरी" नाम से एक ग्रन्थमाला

का प्रारम्भ किया गया था, जिसमें वैदिक स्वाध्याय सबन्धी एक पुस्तक प्रतिवर्ष प्रकाशित करने की व्यवस्था की गई है। अब तक सन् १९६० तक इस मजरी में अठारह पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'श्रद्धानन्द स्मारक निधि' के सदस्यो को ये पुस्तके भेंट रूप मे दी जाती है। इस निधि को भलीभाति सगठित करते हुए इस समय यह प्रयत्न किया गया, कि गुरुकुल आर्थिक दृष्टि से निश्चित हो सके और उसे ऐसे दानियो का सहयोग प्राप्त हो जाय जो प्रतिनिधि कम से कम दस रुपया गुरुकुल को दान देते रहे।

गुरुकुल की नई भूमि मे अब तक बहुत सी इमारते तैयार हो चुकी थी। प० सत्यव्रत जी ने यह व्यवस्था भी विशेष रूप से की कि गुरुकुल भूमि सुन्दर व रमणीक हो। उन्होने सडको के दोनो ओर छाया-वृक्ष लगवाने, आम आदि फलो की वाटिकाये लगवाने और फव्वारो व पार्कों द्वारा गुरुकुल को सुशोभित करने को बहुत महत्व व बल दिया। इस कार्य नीति का यह परिणाम हुआ कि आज हरिद्वार के क्षेत्र मे गुरुकुल सबसे सुन्दर व रमणीक स्थान है। इसकी शोभा मन को आकृष्ट करने वाली है।

इस समय आचार्य के पद पर प० देवशर्मा कार्य कर रहे थे। पडित जी के त्याग और तपस्यामय जीवन का ब्रह्मचारियो पर बहुत प्रभाव रहा उनके उदाहरण को सन्मुख रख कर अनेक विद्यार्थी देश और धर्म की सेवा के लिये तत्पर हुए। "व्रताभ्यास" की पद्धति का गुरुकुल मे सूत्रपात सन् १९२५ मे हो चुका था। प० देवशर्मा जी ने मानसिक शिक्षा की अपेक्षा 'व्रत-शिक्षा' को अधिक महत्व देकर विशेष बल दिया। वे इस बात में विश्वास रखते थे कि सदाचार, सयम और ब्रह्मचर्य का जीवन अक्षराभ्यास मात्र वाली शिक्षा की अपेक्षा अधिक आवश्यक व उपयोगी है। उनके प्रयत्न से गुरुकुल मे सदाचार के वातावरण को विकसित करने मे बहुत सहायता मिली।

दो वर्ष आचार्य के रूप मे कार्य करके प० देवशर्मा जी गुरुकुल से चले गये। उन्होने सन्यास ग्रहण कर लिया और स्वामी अभयदेव बन गये। उनके बाद प० सत्यव्रत जी ने मुख्याधिष्ठाता पद के साथ साथ आचार्य पद भी ग्रहण किया। एक वर्ष बाद स्वामी अभयदेव जी पुन गुरुकुल लौट आये और आचार्य पद को सम्भाल लिया।

गुरुकुल के प्रबन्ध की नई व्यवस्था

स्वास्थ्य खराब रहने के कारण प० सत्यव्रत जी ने सन् १९४२ ई० मे मुख्याधिष्ठाता पद से त्यागपत्र दे दिया। विद्यासभा के सन्मुख यह प्रश्न था कि उनके स्थान की किस महानुभाव द्वारा पूर्ति की जाय। अब तक गुरुकुल के प्रबन्ध, नियन्त्रण व सचालन के लिये दो प्रधान अधिकारी नियत होते थे। मुख्याधिष्ठाता और आचार्य। पर अब विद्यासभा ने एक नई व्यवस्था का सूत्रपात किया। जो इस प्रकार थी—

सभा की ओर से गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की शिक्षा तथा उसके अन्य समस्त प्रबन्ध के निरीक्षण, नियन्त्रण तथा निर्देशन के लिये एक मुख्याधिष्ठाता हो जिसकी नियुक्ति विद्यासभा द्वारा की जाये।

गुरुकुल काँगडी विश्वविद्यालय में शिक्षा तथा ब्रह्मचारियो के पालन-पोषण, रहन-सहन, आचार-व्यवहार के नियन्त्रण तथा गुरुकुल के शिक्षक वर्ग और ब्रह्मचारियो सम्बन्धी अन्तरीय रीति-नीति व व्यवस्था के लिये एक आचार्य हो जिस की नियुक्ति विद्यासभा द्वारा की जावे। गुरुकुल विश्वविद्यालय से सम्बधित समस्त शाखाओ और गुरुकुलों की शिक्षा का निरीक्षण तथा निर्देशन भी आचार्य के अधीन रहे।

आचार्य के सपुर्द जो काम दिये गये हैं उनके अतिरिक्त गुरुकुल जायदाद, व्यवसाय तथा अन्य प्रबन्ध आदि के लिये आवश्यकतानुसार एक

या एक से अधिक प्रबन्धक नियत किये जायें जो मुख्याधिष्ठाता के आधीन कार्य करें ।

इस व्यवस्था के अनुसार प० इन्द्र विद्यावाचस्पति को मुख्याधिष्ठाता नियत किया गया । आचार्य के पद पर स्वामी अभयदेव जी रहे । प० इन्द्र जी गुरुकुल मे अधिक समय तक नही रह सकते थे और नई योजना के अनुसार शिक्षा प्रबन्ध आदि का प्रधान अधिकारी भी आचार्य को बना दिया गया था अत स्वामी अभयदेव जी के हाथो मे अब गुरुकुल का सचालन क्रियात्मक रूप मे आ गया । पर इस नई स्थिति मे स्वामी अभयदेव जी ने देर तक कार्य नही किया । नवम्बर १९४२ मे उन्होने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और प० बुद्धदेव जी विद्यालकार गुरुकुल के नये आचार्य नियुक्त हुए । गुरुकुल को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने की उनमे उत्कट आकाक्षा थी पर अनेक कारणो से मई १९४३ मे उन्होने आचार्य पद से त्याग पत्र दे दिया और उन के स्थान पर प० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति को आचार्य नियुक्त किया गया ।

प्रबन्ध सम्बन्धी नवीन व्यवस्था के कायम होने के समय से ही मुख्याधिष्ठाता का कार्य श्री प० इन्द्र विद्यावाचस्पति के अधीन सपन्न होता है । गुरुकुल के कार्य की वृद्धि और उसके विकास के कारण प्रबन्ध कार्य के अधिक विस्तार हो जाने से श्री मुख्याधिष्ठाता जी की सहायतार्थ अप्रेल १९५३ ई० मे श्री प० धर्मपाल विद्यालकार को सहायक मुख्याधिष्ठाता पद पर नियुक्त किया गया जो इस समय कार्य कर रहे हैं ।

अगस्त १९४३ ई० से वर्तमान समय तक प० प्रियव्रत जी गुरुकुल के आचार्य पद पर कार्य करते रहे हैं । प० प्रियव्रत जी वेदों के गम्भीर विद्वान हैं । अनेक वर्षों तक उन्होने आर्यप्रतिनिधि

सभा पजाब के अधीन वेद प्रचार का कार्य किया है, कुछ वर्षों तक उपदेशक विद्यालय के आचार्य भी रहे हैं, उत्कृष्ट वक्ता हैं, और चरित्र बल भी उन मे बहुत है इस लिये परस्पर सहयोग से गुरुकुल का कार्य सतोषजनक रीति से चल रहा है और यह विश्वविद्यालय उन्नति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर हो रहा है।

वेद मन्दिर

* * *

: ६ :

स्वतन्त्र भारत में गुरुकुल

१५ अगस्त १९४७ को भारत ब्रिटिश शासन से मुक्त हुआ। ऋषि दयानन्द ने स्वराज्य का जो आदर्श जनता के सम्मुख रखा था, अन्त मे उसे प्राप्त करने मे भारतीय सफल हुए। गुरुकुल का विकास एक स्वतन्त्र शिक्षणालय के रूप मे हुआ था। इसके सचालक विदेशी सरकार से किसी प्रकार का सबन्ध नही रखना चाहते थे। जिन आदर्शों को सम्मुख रख कर गुरुकुल की स्थापना की गई थी वे विदेशी सरकार के नियन्त्रण मे इस सस्था को रख कर पूरे नही किये जा सकते थे। अत यह सर्वथा उचित था, कि गुरुकुल सरकार से व उसके द्वारा सचालित विश्वविद्यालयो से किसी भी प्रकार का सबन्ध न रखे।

पर स्वराज्य प्राप्ति के बाद परिस्थिति बदल गयी। अब भारत की सरकार भारतीयो के हाथ मे आ गई। अत इस बात की आवश्यकता नही रही कि सरकार से किसी प्रकार का सपर्क न रखा जावे। इसलिये १९४७ मे गुरुकुल की ओर से यह उद्योग प्रारम्भ हुआ कि इस राष्ट्रीय विश्वविद्यालय द्वारा दी गई विविध उपाधियो को भारतीय व प्रान्तीय सरकारे स्वीकृत करे, व अन्य विश्वविद्यालय भी यहा की डिग्रीयो को स्वीकृत कर इसे अपने समकक्ष मान ले। इस कार्य मे गुरुकुल को पूरी सफलता मिली। यह सर्वथा उचित भी था, क्योकि यहां शिक्षा का स्तर ब्रिटिश युग के सरकारी विश्वविद्यालयो के

मुकाबले मे किसी भी प्रकार कम न था।

१५-३-४८ को हिमाचल प्रदेश की सरकार ने गुरुकुल की उपाधियो को इस प्रकार स्वीकृत किया —

विद्याधिकारी हाई स्कूल या मैट्रिकुलेट के बराबर।
अलकार बी०ए० के बराबर।
वाचस्पति — एम० ए० के बराबर।

२८ मई १९४८ को बिहार की प्रान्तीय सरकार ने भी १९४७ तक जिन व्यक्तियो ने गुरुकुल विश्वविद्यालय से विविध डिग्रियां प्राप्त की, उनकी अधिकारी डिग्री को मैट्रिकुलेशन के, अलकार डिग्री को बी०ए० के और वाचस्पति डिग्री को एम०ए० के बराबर स्वीकृत किया।

५ जुलाई १९४८ को उत्तर प्रदेश यू०पी० व सयुक्त प्रान्त की सरकार ने गुरुकुल की अलकार डिग्री को बी०ए० के बराबर स्वीकृत कर लिया।

६ मई १९४९ को भारत के केन्द्रीय सरकार ने सामयिक रूप से गुरुकुल के स्नातको को सरकारी विश्वविद्यालय के ग्रेजुएट के समकक्ष मान लिया।

१३ अक्टूबर १९४९ को पजाब की सरकार ने भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की अलकार डिग्री को बी०ए० के बराबर स्वीकृत कर लिया है।

१५ दिसम्बर, १९४९ को बम्बई प्रान्त की सरकार ने गुरुकुल की अलकार डिग्री को बी०ए० के बराबर मान लिया है।

अब भारत की विविध सरकारें गुरुकुल के अलकार उपाधि से विभूषित स्नातको को अपनी विविध नौकरियो के लिये वही अवसर देने को उद्यत है जो सरकारी विश्वविद्यालय के ग्रेजुएटो को प्राप्त हैं। यह

गुरुकुल की भारी विजय है।

अनेक विश्वविद्यालयो ने भी गुरुकुल की डिग्री को अपनी डिग्री के समकक्ष मानना स्वीकार किया। आगरा यूनिवर्सिटी ने २६ जुलाई १९४८ को एक प्रस्ताव द्वारा यह स्वीकार किया, कि गुरुकुल की अलंकार परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थी बी०ए० परीक्षा उत्तीर्ण किये बिना ही सस्कृत हिन्दी, पाश्चात्य दर्शन, अर्थशास्त्र और राजनीति विषयो मे एम० ए० परीक्षा मे बैठ सकते है यही बात हिन्दू विश्वविद्यालय काशी ने सस्कृत और हिन्दी विषयो के लिये स्वीकार की। अन्य विविध यूनिवर्सीटिया भी इस प्रश्न पर विचार कर रही है। इसमे सन्देह नही, कि अब वह समय आगया है, जब गुरुकुल को शिक्षा के क्षेत्र मे अपना समुचित स्थान प्राप्त हो जावेगा।

गुरुकुल और विदेशी विश्वविद्यालय

भारत मे विदेशी सरकार होने के कारण यहा की ब्रिटिश सरकार ने और सरकार द्वारा स्थापित व स्वीकृत विश्वविद्यालयो ने गुरुकुल की डिग्री को स्वीकृत नही किया था। ब्रिटिश साम्राज्य मे विद्यमान विदेशी विश्वविद्यालय भी यहा की डिग्री को मान नही देते थे। पर ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर फ्रास, जर्मनी, आस्ट्रिया, इटली आदि देशो के विश्वविद्यालयो ने गुरुकुल को यथोचित मान दिया और यहा की डिग्री को स्वीकृत किया। गुरुकुल के अनेको स्नातक उच्च शिक्षा के लिये विदेशो मे गये। वहा उन्हे सीधा डाक्टरेट परीक्षा के लिये दाखिल कर लिया गया। पेरिस, बर्लिन आदि के विश्वविद्यालय ब्रिटिश साम्राज्य मे विद्यमान किसी भी विश्वविद्यालय की अपेक्षा अधिक विशाल व सम्माननीय शिक्षाकेन्द्र है। विद्वत्ता के अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे उनका स्थान किसी भी प्रकार आक्सफोर्ड, कैम्ब्रिज, लण्डन आदि ब्रिटिश विश्वविद्यालयो से कम नही है। उन्होने गुरुकुल के स्नातको का स्वागत किया, और

अनेक स्नातक उन से उच्चतम डिग्रीया ले कर भारत लौटे। इन स्नातको के नाम निम्नलिखित है—

१ डा० प्राणनाथ विद्यालकार इन्होन विएना यनिवर्सिटी से पी०एच० डी० की परीक्षा उत्तीर्ण की ।

२ डा० ईश्वरदत्त विद्यालकार इन्होने म्यूनिच यनिवर्सिटी से पी० एच० डी० किया ।

३. श्री विनायक राव विद्यालकार ने इगलैण्ड मे बार-एट-ला पदवी प्राप्त की ।

४ डा० सत्यकेतु विद्यालकार इन्होने पेरिस यूनिवर्सिटी से डी० लिट् की डिग्री समम्मान प्राप्त की ।

५ डा० धीरेन्द्र विद्यालकार—इन्होने म्यूनिच स पी०एच०डी० की डिग्री प्राप्त की ।

६ डा० सुरशचन्द्र विद्यालकार—इन्होने पेरिस यूनिवर्सिटी से डी० लिट् की डिग्री प्राप्त की ।

७ डा० बलराम आयुर्वेदालकार—इन्होन म्यूनिच यूनिवर्सिटी से एम०डी० की डिग्री प्राप्त की ।

८ डा० नारायणदत्त आयुर्वेदालकार इन्होन म्यूनिच यूनिवर्सिटी मे एम० डी० की डिग्री प्राप्त की ।

९ डा० धर्मानन्द आयुर्वेदालकार—इन्होने रोम और म्यूनिच यूनिवर्सिटी मे एम० डी० की डिग्रीया प्राप्त की ।

१० श्री नरदेव विद्यालकार ने भी म्यूनिच मे फोटोग्राफी मे डिप्लोमा प्राप्त किया ।

११ श्री राजेश्वर आयुर्वेदालकार ने म्यूनिच मे एम०डी० की उपाधि प्राप्त की ।

प्रसन्नता की बात है कि, अब भारत के स्वतन्त्र हो जाने पर भारत की

विविध सरकारों तथा अनेक विश्वविद्यालयों ने भी गुरुकुल की उपाधियों को स्वीकार कर लिया है ।

देश का विभाजन और गुरुकुल

अगस्त १९४७ में भारत को दो भागों में विभक्त कर के पाकिस्तान के पृथक् राज्य का निर्माण किया गया । पाकिस्तान का निर्माण धर्म के आधार पर हुआ था । मुस्लिमलीग चाहती थी, कि मुसलमानों का अपना पृथक् राज्य हो जिसमें शासन मुस्लिम धर्म के अनुसार रहे । इसके लिये बहुत से मुसलमान नेता यह भी चाहते थे कि पाकिस्तान में हिन्दू व सिख न रहें । परिणाम यह हुआ कि पश्चिमी पंजाब, सिन्ध, सीमाप्रान्त और बलोचिस्तान से लाखों की संख्या में हिन्दुओं को भारत आना पड़ा । इस समय जो हिन्दू व सिक्ख पश्चिमी पाकिस्तान से भारत आये, उनकी संख्या ६० लाख के लगभग है । इसके अतिरिक्त लाखों हिन्दू व सिक्ख धर्मान्ध मुसलमानों द्वारा कत्ल किये गये । सम्पत्ति का जो नाश इस समय हुआ, उसका तो अन्दाज कर सकना भी सभव नहीं है ।

पश्चिमी पाकिस्तान में सैकड़ों आर्य समाजें थीं । इस प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की करोड़ों की सम्पत्ति थी । वह सब पाकिस्तान में ही रह गई । गुरुकुल कांगड़ी की भी बहुत सी सम्पत्ति इस प्रदेश में थी । जिनमें से मुख्य निम्नलिखित है—

१	शीश महल की भूमि लाहौर में मूल्य	१६,१०,००० रु०
२	नौलखा भूमि लाहौर में मूल्य	४,१०,००० रु०
३	शेखूपुरा	५,००० रु०
		२०,२५,००० रु०

इस भूसम्पत्ति मे आर्यप्रतिनिधि सभा पजाब व गुरुकुल का रुपया सम्मिलित रूप से लगा हुआ था। बीस लाख से अधिक सम्पत्ति मे आधे के लगभग रुपया गुरुकुल का था। भारत के विभाजन से गुरुकुल को दस लाख रुपये से अधिक की क्षति उठानी पडी।

इसके अतिरिक्त गुरुकुल की एक महत्वपूर्ण शाखा पश्चिमी पाकिस्तान के क्षेत्र मे थी। मुलतान गुरुकुल बहुत सम्पन्न तथा समृद्ध दशा मे था इस गुरुकुल के पास कुल मिलाकर २६६ बीघा भूमि थी, और इमारत की कीमत भी लाख से ऊपर थी।

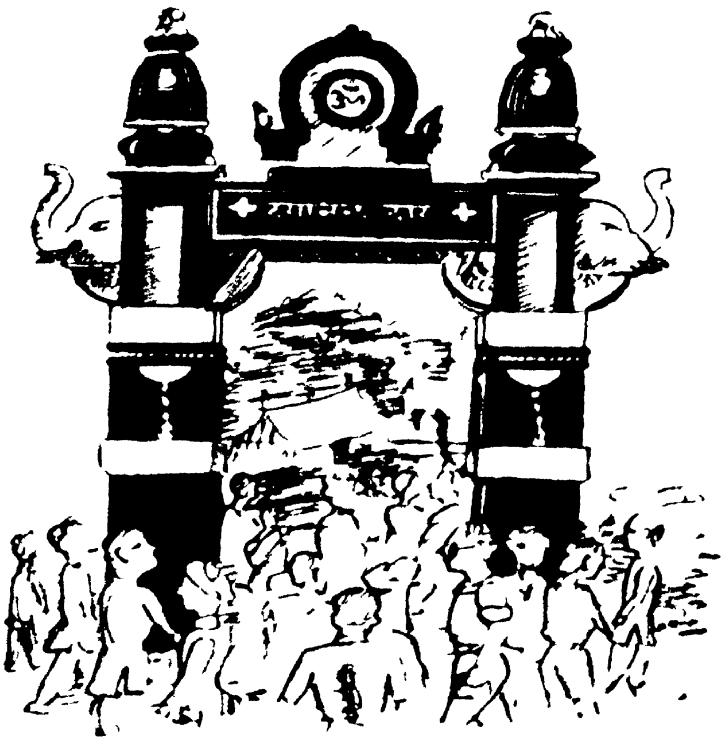

दयानन्द द्वार

* * *

१० :

वर्तमान काल

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव

महामान्य राष्ट्रपति का आगमन

गुरुकुल का स्वर्णजयन्ती महोत्सव ता० २८ फरवरी १, २, ३, ४, ५ और ६ मार्च सन् १९५०, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और रविवार को समारोह से मनाया गया। सहस्त्रों नरनारी सम्मिलित हुए। उत्सव उपस्थिति तथा धन आदि की प्रत्येक दृष्टि से सफल रहा। दीक्षान्त भाषण स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति श्री डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने दिया था। इस महोत्सव पर आये हुए प्रतिष्ठित नेताओं में उत्तर प्रदेश के अन्नमन्त्री श्री चन्द्रभानु जी गुप्त, भारत सरकार के मंत्री श्री नरहरि-विष्णु गाडगिल मध्यप्रान्तीय विधान सभा के अध्यक्ष श्री घनश्यामसिंह गुप्त तथा राजाधिराज श्री उम्मेदसिंह जी शाहपुराधीश के नाम उल्लेखनीय है। इसके अतिरिक्त श्री प० रामनारायण जी मिश्र, श्री स्वामी मोहनानन्द जी, श्री प० सूर्यकान्त जी, श्री प० जयदेव जी वेदभाष्यकार, रायबहादुर दीवान बद्रीदास जी, श्री प० ठाकुरदत्त जी शर्मा, श्री म० कृष्ण जी, श्री पं० नरदेव जी शास्त्री, श्री डा० मंगलदेव जी शास्त्री, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, श्री स्वामी अभेदानन्द जी, श्री स्वामी आत्मानन्द जी महाराज, श्री वासुदेवशरण जी अग्रवाल, श्री राजगुरु धुरेन्द्र जी शास्त्री, श्री प० बुद्धदेव जी, श्री प० सत्यव्रत जी, कुंवर चान्दकरण जी शारदा, आदि महानुभावों

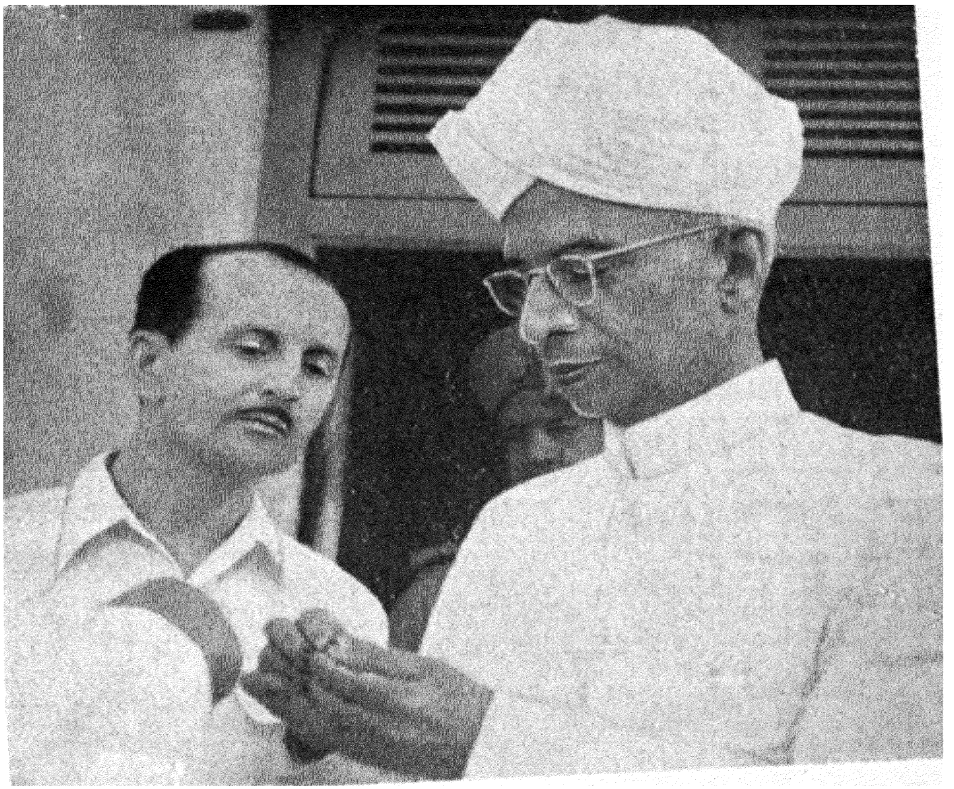

डॉ० राधाकृष्णन् संग्रहालय में एक सिक्के को देखते हुए

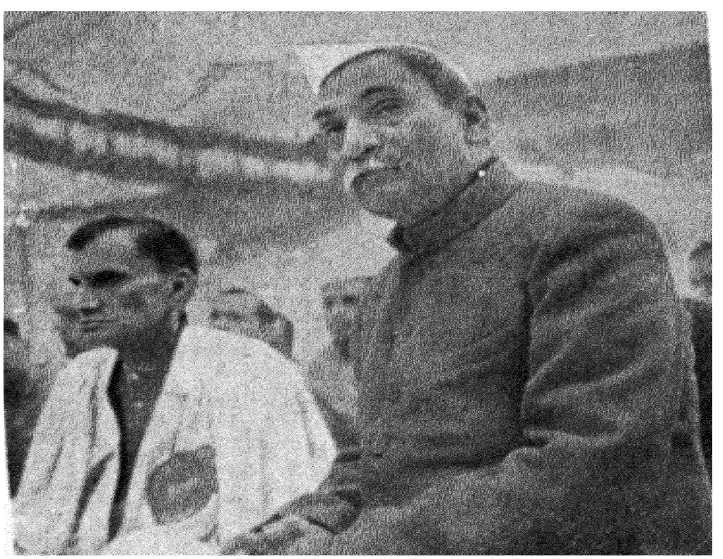

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद दीक्षान्त के अवसर पर

राजेन्द्र प्रसाद

ने भी इस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव में भाग लिया। इस वर्ष कुल दान ३५२७२३) रु० सुनाया गया। एक लाख रुपये की दान की राष्ट्रपति ने भारत सरकार की ओर से घोषणा की और ५२०००) रुपये उत्तर प्रदेश की ओर से सहायता प्राप्त हुई तथा २५०००) सेठ रघुमल जी चैरिटी ट्रस्ट कलकत्ता से मिले। और भी अनेक राशियां प्राप्त हुई थीं। अनेक सम्मान हुए और उनमें प्रत्येक सफल रहा।

सरकार से अनुदान

अंग्रेजी राज्यकाल में गुरुकुल की नीतिसम्मत नीति यह रही कि न कोई सरकार से सम्बन्ध रखा जाय और न किसी प्रकार की सहायता ली जाय। इस नीति का इतनी कठोरता से पालन किया कि स्वयं वायसराय द्वारा गुरुकुल को आर्थिक सहायता पेश किये जाने पर भी उसे अस्वीकार कर दिया गया। स्वाधीनता प्राप्त होने पर परिस्थिति में परिवर्तन आ गया। यह समझ कर कि राष्ट्रीय सरकार से आर्थिक सहायता लेने में कोई हर्ज नहीं है उस समय के राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद जी के परामर्श से केन्द्रीय सरकार के शिक्षा मंत्री को इस आशय का पत्र लिखा गया कि गुरुकुल विश्वविद्यालय एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्था है इस कारण उसे राष्ट्रीय सरकार से आर्थिक सहायता प्राप्त होनी चाहिये। उत्तर में शिक्षा मन्त्रालय ने २५०००) की राशि अनावर्तक अनुदान (अनरकरिंग ग्रान्ट) के रूप में देना स्वीकार किया। उस राशि को गुरुकुल के गौरव के प्रतिकूल समझ कर अस्वीकार कर दिया गया। विशेष बात यह थी कि अस्वीकृति का पत्र शिक्षा मंत्री का स्वयं डा० राजेन्द्रप्रसाद जी ने लिखा १९५० में डा० राजेन्द्रप्रसाद राष्ट्रपति चुने गये। राष्ट्रपति बनने

के पश्चात् उन्होंने जो पहला सार्वजनिक भाषण दिया । वह गुरुकुल का दीक्षान्त भाषण था । भाषण के अन्त में राष्ट्रपति जी ने गुरुकुल के लिये एक लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की । उसके पश्चात् केन्द्रीय सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार से अनुदान के रूप में विविध राशियां प्राप्त होती रही है, उन में से कुछ अनावर्तक राशियां है और कुछ आवर्तक राशियां । गत वर्ष एक लाख रुपयेकी एक अनावर्तक राशि केन्द्रीय सरकार से विज्ञान भवन के लिये प्राप्त हुई थी जिससे विज्ञान भवन लगभग तैयार हो गया है । उसके पश्चात् ६५०००) की राशि विज्ञान के उपकरणों व अन्य सामान के लिये और ५००००) की राशि पुस्तकालय भवन के विकास के लिये प्राप्त हुई है । आवर्तक राशियों में से केन्द्रीय सरकार से प्राप्त होने वाली सब से बड़ी राशि है । गत वर्ष शिक्षा अनुदान के रूप में ८००००) प्राप्त हुए थे, इस वर्ष ९००००) प्राप्त होने की आशा है उत्तर प्रदेश से आयुर्वेद महाविद्यालय और चिकित्सालय को अब तक जो आवर्तक अनुदान तथा अनावर्तक अनुदान प्राप्त हुए है । उनका योग ३२२४२५) है । सम्वत् २०१४ में ८६८२५) प्राप्त हुआ ।

अनुदान के सम्बन्ध में यह बात बतला देना अत्यन्त आवश्यक है कि उन में से किसी भी अनुदान के साथ सिवाय इसके कोई शर्त नहीं लगी हुई है कि यह राशि उसी काम में व्यय की जाय जिसके लिये दी गई है । वे सब कार्य जिनके लिये सहायता प्राप्त हुई है, गुरुकुल के अपने शिक्षा क्रम के भाग है । अनुदान का व्यय किस तरह हुआ, इसकी जांच करने के लिये सरकारी निरीक्षक आता है और उन्हें देख कर चला जाता है । इसके अतिरिक्त न कोई शर्त है न कोई अवबन्ध जैसा गुरुकुल विश्वविद्यालय आप लोग चला रहे है, उसी को मान्यता प्राप्त है, और उसी को अनुदान मिलते है ।

वेद महाविद्यालय

वेद वेदागो की पढाई को मुख्यता देने के कारण यह गुरुकुल का मौलिक महाविद्यालय ही था, ज्यो ज्यो विषयो की विभिन्नता और कार्य का विस्तार बढता गया, महाविद्यालयो की सख्या बढती गई। अन्य शाखा प्रशाखाओ के बन जाने पर भी मुख्यता वेद महाविद्यालय की ही रही जो अब तक भी विद्यमान है। गुरुकुल के आचार्य वेद महाविद्यालय के अध्यक्ष है। अधिकतर छात्रवृत्तिया वेद महाविद्यालय के छात्रो को दी जाती है। उसकी यही विशेषता है कि उसकी पाठ विधि मे वैदिक तथा अर्वाचीन सस्कृत साहित्य तथा ससार के धर्मो के अनशीलन पर अधिक बल दिया जाता है।

गुरुकुल महाविद्यालय

इस महाविद्यालय म प्राचीन तथा अर्वाचीन भारतीय साहित्य के साथ साथ इतिहास राजनीति विज्ञान आदि विषयो की विशेष शिक्षा की व्यवस्था है। इतिहास म भारतीय इतिहास पर अधिक जोर दिया जाता है, विज्ञान मे एफ० एस० सी० के स्तर की पढाई होती है। इतिहास की शिक्षा म सम्बद्ध और उसके पूरक के रूप म एक सग्रहालय है जिसके अध्यक्ष इतिहास के उपन्यास हरिदत्त वेदालकार एम०ए० है। भविष्य की योजनाओ मे एक यह भी है कि भारतीय राजनीति पर विशेष ध्यान रखते हुए राजनीति की ऊची शिक्षा का व्यवस्था की जाय।

इस महाविद्यालय के अध्यक्ष प० सुदेव विद्यालकार है।

आयुर्वेद महाविद्यालय

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के अन्तगत आयुर्वेद महाविद्यालय

की स्थापना सन् १९२२ में हुई थी। गुरुकुल के इस नवीन भूमि में स्थानान्तरित होने पर अन्य विभागों के समान इस महाविद्यालय की मुख्य इमारत भी यहाँ इस नवीन भूमि में बनाई गई थी, और गत स्वर्ण जयन्ती तक आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्ययन कक्षाओं के अतिरिक्त निदान प्रयोगशाला, शवच्छेद भवन, शल्य क्रिया भवन, प्रकृतिविज्ञान संग्रहालय, ऐक्सरे भवन तथा अन्तरंग आतुरालय के रोगिगृहों का निर्माण हो चुका था।

उसके बाद से अब तक विगत ९ वर्षों में आयुर्वेद महाविद्यालय का और अधिक विकास हुआ है। इस अवधि में यहाँ निम्नलिखित विभागों तथा इमारतों की वृद्धि हुई है।

बिड़ला नेत्र आतुरालय यह गुरुकुल के प्रेमी और विख्यात दानी श्री जगल किशोर जी बिड़ला द्वारा बनवाया हुआ १० रोगी शय्याओं से युक्त रोगिगृह है, जिसमें नेत्र रोगियों के उपचार निवास और भोजनादि की सब व्यवस्था की जाती है।

मातृमन्दिर यह गुरुकुल के यशस्वी, कर्मठ और तपस्वी स्नातक श्री पण्डित सत्यपाल जी सिद्धान्तालंकार अफ्रीका प्रवासी के द्वारा भेजी गई धनराशि से उनकी इच्छानुसार महिलाओं के निमित्त बनवाया गया है। इसमें प्रसव कार्य के लिये डिलीवरी बैड आदि की व्यवस्था है।

जीवविज्ञान प्रयोगशाला—यह उत्तर प्रदेशीय सरकार तथा गुरुकुल से प्रदत्त धन द्वारा लगभग १९ सहस्र की राशि से बनाई गई है। इसमें जीवन विज्ञान के क्रियात्मक शिक्षण के लिये दर्जनों माइक्रोस्कोप आदि यन्त्रों और उपकरणों की व्यवस्था है।

धन्वन्तरि सभा भवन- यह नवीन भवन भी उत्तर प्रदेशीय सरकार के और गुरुकुल के सम्मिलित धन द्वारा लगभग १८ सहस्र की राशि

मे बना है। इसमे आयुर्वेद महाविद्यालय की प्रात कालीन प्रार्थना के अतिरिक्त उपयोगी व्याख्यानो का आयोजन होता है, और समय पर सभाये—उत्सव आदि भी किये जाते है। इस इमारत के साथ 'अध्यक्ष भवन' तथा 'लेखक कक्ष' भी नये बनाये गये है।

द्रव्य विज्ञान सग्रहालय --यह छोटा सा सग्रहालय सर्वथा नवीन उद्योग है। स्थानाभाव के कारण इसे अभी तक एक छोटे से स्थान मे ही स्थापित किया जा सका है, परन्तु इसमे सुरक्षित हरी वनस्पतिया, शुष्क मूल-कन्द, त्वचा, काष्ठ, फल, बीज, निर्यास, प्राणिज, द्रव्य, धातु, उदधातु, रत्न, उपरत्न, क्षार लवण आदि के अतिरिक्त दुर्लभ वनस्पतियो के बहुमूल्य रगीन चित्र तथा बहुसख्यक फोटोग्राफ सकलित है। यह छात्रो और अध्यापको के लिए भी विशेष उपयोगी है।

इसके अतिरिक्त इन ८-१० वर्षों मे यहा पचकर्म भवन का कार्य भी आरम्भ हो चुका है। छात्रो के शिक्षण के लिये "श्रद्धानन्द चिकित्सालय शाखा नं० २ मे भी इस महाविद्यालय के छात्र-छात्रा के निरीक्षण मे चिकित्सा कार्य सम्पन्न होता है, अर्थात श्रद्धानन्द चिकित्सालय का विस्तार होकर उसकी अब दो डिस्पेंसरिया हो गई है।

इस प्रकार स्वर्णजयन्ती से हीरक जयन्ती तक की अवधि मे गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय का भी पर्याप्त विकास हुआ है।

कृषि विद्यालय

गुरुकुल के सस्थापको के मन मे पहले से ही यह भाव था कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश मे समृद्धि के लिये कृषि तथा गोशाला आदि विषयक शिक्षा गुरुकुल मे प्रचलित की जाय। इसलिये आधुनिक अन्यविषयो के साथ कागडी की गुरुकुल भूमि मे एग्रीकल्चर की शिक्षा

की स्थापना सन् १९२२ में हुई थी। गुरुकुल के इस नवीन भूमि में स्थानान्तरित होने पर अन्य विभागों के समान इस महाविद्यालय की मुख्य इमारत भी यहाँ इस नवीन भूमि में बनाई गई थी, और गत स्वर्ण जयन्ती तक आयुर्वेद महाविद्यालय में अध्ययन कक्षाओं के अतिरिक्त निदान प्रयोगशाला, शवच्छेद भवन, शल्य क्रिया भवन, प्रकृतिविज्ञान संग्रहालय, ऐक्सरे भवन तथा अन्तरंग आतुरालय के रोगिगृहों का निर्माण हो चुका था।

उसके बाद से अब तक विगत ९ वर्षों में आयुर्वेद महाविद्यालय का और अधिक विकास हुआ है। इस अवधि में यहाँ निम्नलिखित विभागों तथा इमारतों की वृद्धि हुई है।

बिड़ला नेत्र आतुरालय यह गुरुकुल के प्रेमी और विख्यात दानी श्री जुगल किशोर जी बिड़ला द्वारा बनवाया हुआ १० रोगी शय्याओं से युक्त रोगिगृह है, जिसमें नेत्र रोगियों के उपचार निवास और भोजनादि की सब व्यवस्था की जाती है।

मातृमन्दिर यह गुरुकुल के यशस्वी, कर्मठ और तपस्वी स्नातक श्री पण्डित सत्यपाल जी सिद्धान्तालंकार अफ्रीका प्रवासी के द्वारा भेजी गई धनराशि से उनकी इच्छानुसार महिलाओं के निमित्त बनवाया गया है। इसमें प्रसव कार्य के लिये डिलीवरी बैड आदि की व्यवस्था है।

जीवविज्ञान प्रयोगशाला—यह उत्तर प्रदेशीय सरकार तथा गुरुकुल से प्रदत्त धन द्वारा लगभग १९ सहस्र की राशि से बनाई गई है। इसमें जीवन विज्ञान के क्रियात्मक शिक्षण के लिये दर्जनों माइक्रोस्कोप आदि यन्त्रों और उपकरणों की व्यवस्था है।

धन्वन्तरि सभा भवन यह नवीन भवन भी उत्तर प्रदेशीय सरकार के और गुरुकुल के सम्मिलित धन द्वारा लगभग १८ सहस्र की राशि

से बना है। इसमें आयुर्वेद महाविद्यालय की प्रातःकालीन प्रार्थना के अतिरिक्त उपयोगी व्याख्यानों का आयोजन होता है, और समय पर सभाये—उत्सव आदि भी किये जाते है। इस इमारत के साथ 'अध्यक्ष भवन' तथा 'लेखक कक्ष' भी नये बनाये गये है।

द्रव्य विज्ञान संग्रहालय - यह छोटा सा संग्रहालय सर्वथा नवीन उद्योग है। स्थानाभाव के कारण इसे अभी तक एक छोटे से स्थान में ही स्थापित किया जा सका है, परन्तु इसमें सुरक्षित हरी वनस्पतियां, शुष्क मूल-कन्द, त्वचा, काष्ठ, फल, बीज, निर्यास, प्राणिज, द्रव्य, धातु, उपधातु, रत्न, उपरत्न, क्षार, लवण आदि के अतिरिक्त दुर्लभ वनस्पतियों के बहुमूल्य रंगीन चित्र तथा बहुसंख्यक फोटोग्राफ संकलित है। यह छात्रों और अध्यापकों के लिए भी विशेष उपयोगी है।

इसके अतिरिक्त इन दिनों में यहां पंचम भवन का कार्य भी आरम्भ हो चुका है। छात्रों के शिक्षण के लिये "श्रद्धानन्द चिकित्सालय शाखा नं० २" में भी इस महाविद्यालय के छात्र-छात्रा के निरीक्षण में चिकित्सा कार्य सम्पन्न होता है, अर्थात् श्रद्धानन्द चिकित्सालय का विस्तार होकर उसकी अब दो डिस्पेंसरियां हो गई है।

इस प्रकार स्वर्णजयन्ती से हीरक जयन्ती तक की अवधि में गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय का भी पर्याप्त विकास हुआ है।

कृषि विद्यालय

गुरुकुल के संस्थापकों के मन में पहले से ही यह भाव था कि भारत जैसे कृषि प्रधान देश में समृद्धि के लिये कृषि तथा गौशाला आदि विषयक शिक्षा गुरुकुल में प्रचलित की जाय। इसलिये आधुनिक अन्यविषयों के साथ कांगड़ी की गुरुकुल भूमि में एग्रीकल्चर की शिक्षा

के लिये प्रो० महेशचरण सिन्हा एम०एससी० के अधीन कार्य प्रारम्भ किया गया।

२२ मार्च १९२१ को आर्य प्रतिनिधि सभा ने कृषि को ऐच्छिक रूप में महाविद्यालय के पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर दिया जो सन् १९२४ की बाढ़ के कारण गुरुकुल के नवीन भूमि में आ जाने के कारण बन्द हो गया।

कृषि गोशाला की प्राचीन परम्परा को स्थापित करने के लिये नवीन गुरुकुल भूमि में ५२०००) रु० की लागत से गौशाला भवन निर्माण किया गया। और उसमें साहीवाल नसल की गौवें मगवाई गई। ७०००) रु० की लागत से ट्यूबवैल का निर्माण किया गया सम्प्रति गुरुकुल में ४०० बीघा भूमि कृषि के लिये उपलब्ध है। इस भूमि के अतिरिक्त ३०० बीघा भूमि पुराने गुरुकुल की भूमि में भी कृषि के लिये है।

१९४७ में भारतीय स्वतन्त्रता के पश्चात् पचवर्षीय योजना के अधीन कृषि श्रम से उपेक्षा को हटा कर सम्मान उत्पन्न करने के लिये विशेष प्रयत्न किया जा रहा है।

इन सब बातो का ध्यान रख कर विद्यासभा ने १६ सितम्बर १९५१ ई० को गुरुकुल में कृषि विद्यालय खोलने का निश्चय किया। इस कार्य में उत्तर प्रदेश सरकार के उपमत्री श्री जगनप्रसाद जी रावत ने विशेष रुचि ली और जुलाई सन् १९५५ ई० में भारत सरकार के कृषि मत्री पजाबराव देशमुख के करकमलो द्वारा कृषि विद्यालय का उद्घाटन किया गया।

कृषि विद्यालय में उत्तर प्रदेशीय सरकार द्वारा स्वीकृत और नियत 'डीप्लोमा कोर्स' की शिक्षा दी जाती है। सम्प्रति दो श्रेणियो की

पाठविधि है विचार यह है कि इसका विकसित करके 'कृषिमहाविद्यालय' के रूप मे उन्नत किया जावे। एतदर्थ गवर्नमेन्ट से पत्र व्यवहार चल रहा है और यह भी आवश्यक है कि उपयुक्त साधन उपकरण, आश्रम विद्यालय भवन आदि की व्यवस्था की जाव।

कृषि विद्यालय की प्रबन्ध व्यवस्था एक समिति द्वारा सचालित होती है।

ग्राम प्रशिक्षण केन्द्र

सन् १९५६ ई० म [illegible] के साथ ही गुरुकुल म उत्तर प्रदेशीय सरकार न अपनी द्वितीय पचवर्षीय योजना के आधीन ग्राम प्रशिक्षण केन्द्र (ट्रेनिंग-एक्सटेन्शन प्राजक्ट) का भी गुरुकुल मे स्थापित कर दिया है। इस विभाग मे विद्यार्थियो का चुनाव उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किया जाता है। ८० हजार रुपया वार्षिक का सपूर्ण व्यय उत्तर प्रदेश की सरकार करती है।

सम्प्रति इस विभाग मे ११० विद्यार्थी है। स्टाफ म १ प्रिंसिपल, ६ प्रोफेसर, ४ लेखक, २ चौकीदार, १ मैकेनिक, १ कारपेन्टर, १ लोहार, १ माली, १ लैब असिस्टेन्ट १ दफ्तरी, १ ड्राइवर आदि दिये हुए है जिनका ३०० रु० मासिक व्यय गवनमेन्ट द्वारा किया जाता है।

इस केन्द्र के प्रत्यक विद्यार्थी को २० रु० सरकार द्वारा मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है।

उत्तर प्रदेशीय सरकार की ओर म श्री देवकीनन्दन जी वैष्णव बी० एस-सी०, ए० जी०, यू० पी० ए० एस० का जो भारतीय एव विदेशी शिक्षण सस्थाओ मे शिक्षा प्राप्त किये हुए हैं तथा जिनको अनेक वर्षों का व्यवहारिक अनुभव है, दोनो विभागों के निरीक्षण एव सचालन के लिये प्रिन्सिपल नियुक्त किया गया है। उनकी देख रख मे उनके

योग्य सहायक प्रोफेसरों द्वारा कृषि, बागबानी तथा फलउद्योग, पशुपालन तथा पशु सेवा चिकित्सा, कृषि इंजीनियरिंग, सहकारिता, समाज शिक्षा प्रसार एवं प्रशिक्षण, जन स्वास्थ्य निर्माण कार्य तथा पंचायत आदि का प्रशिक्षण कार्य सम्पन्न हो रहा है।

इस कार्य का उन्नत करने के लिए अधिक व उचित स्थान, पुस्तकालय, सूचनालय, सांस्कृतिक स्थल, पशु चिकित्सालय, लेक्चर तथा स्टाफ रूम तथा कृषि उपकरणों के आदि के लिये पृथक् स्थानों की व्यवस्था हो रही है।

विज्ञान महाविद्यालय

पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा उद्घाटन

गुरुकुल कांगड़ी की प्रारम्भिक योजना के मन्तव्यों के अनुसार विज्ञान की विशिष्ट शिक्षा देने के लिये विद्या सभा ने १६ दिसम्बर १९५१ के अधिवेशन में निश्चय किया कि गुरुकुल में विज्ञान की उच्चकोटि शिक्षा देने के लिये विज्ञान महाविद्यालय की नींव डाली जाय तदनुसार विद्याधिकारी परीक्षोत्तीर्ण छात्रों के लिए विज्ञान की श्रेणियां जारी कर दी गयी जिनमें उत्तर प्रदेश के इन्टरमीडिएट द्वारा निर्धारित एफ०एस-सी० की पढ़ाई होने लगी। इन श्रेणियों में अन्य विश्वविद्यालयों के मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण छात्र भी प्रविष्ट हो सकते हैं।

विज्ञान महाविद्यालय की पहली और दूसरी श्रेणियां आरम्भ करने के साथ ही यह निश्चय कर लिया गया था कि दो साल पश्चात् अगली दो श्रेणियों की भी पढ़ाई की व्यवस्था की जाय। अगली दो श्रेणियों का स्तर बी०एस-सी० के समान था। इसका यह भी निश्चय किया गया कि जब तक यूनीवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन द्वारा गुरुकुल कांगड़ी

को यूनिवर्सिटी नहीं माना जाता तब तक बी०एस-सी० श्रेणियों को आगरा यूनिवर्सिटी ही से सम्बद्ध कर दिया जाय। विज्ञान की ऊंची शिक्षा देने के लिये यह आवश्यक था कि उसके लिये अलग भवन बनाया जाता। प्रयत्न करके केन्द्रीय सरकार से एक लाखों रुपये का अनुदान विज्ञान भवन के लिए प्राप्त किया गया। जब भवन तैयार हो गया तब उसके उद्घाटन के लिये भारत के प्रथम मन्त्री श्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू से प्रार्थना की गयी कि वे गुरुकुल आकर अपने हाथ से उद्घाटन करने की कृपा करें। उन्होंने स्वीकार कर लिया। १ अगस्त १९५७ को वे गुरुकुल में पधारे। यज्ञ के पश्चात् उन्होंने विज्ञान भवन का उद्घाटन किया। बी० एस० सी० कक्षायें चल रही हैं। अभी तक केवल फिजिक्स (भौतिक) केमिस्ट्री (रसायन) की ही उच्च शिक्षा दी जाती है। आशा है अगले वर्ष से बायोलोजी (प्राणीशास्त्र) और बाटनी (वनस्पतिशास्त्र) की शिक्षा भी बी० एस० सी० तक आरम्भ हो जायगी।

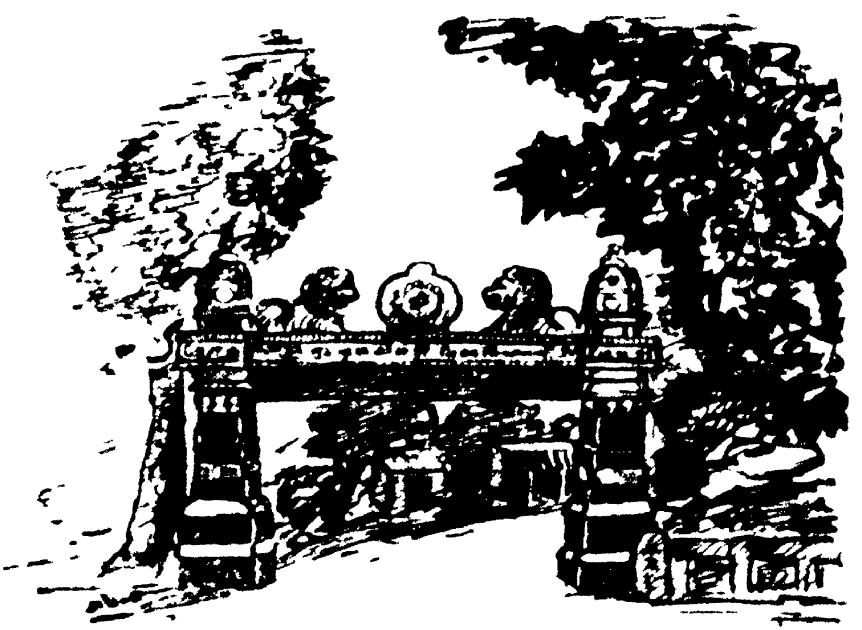

सिंह द्वार

* * *

११ :

अन्य विभाग

गुरुकुल काँगड़ी फार्मेसी

गुरुकुल मे आयुर्वेद की शिक्षा का सचालन सवत् १९७६ से प्रारम्भ हो गया था और विद्यार्थियो को आयुर्वेद का व्यवहारिक ज्ञान देने के लिये शास्त्रोक्त औषधियो का निर्माण प्रारम्भ हो गया था । सन् १९३० ई० मे भारत सरकार द्वारा एक ड्रग इन्क्वायरी कमेटी बनाई गई थी, जिसकी सिफारिशो के अनुसार १९४०-४५ मे ड्रग एक्ट भी बनाये गये थे । और इन्ही दिनो गुरुकुल कागड़ी फार्मेसी का विस्तार भी हुआ । गुरुकुल की औषधिया प्रमाणिकता तथा शुद्धता के कारण अधिक जन-प्रिय होने लगी और देश मे शास्त्रोक्त औषधियो की माग बढने लगी ।

फार्मेसी मे गुरुकुल का लगभग ६ लाख से ऊपर धन लगा हुआ है और फार्मेसी के बढते हुए कार्यों के कारण अब फार्मेसी की नवीन विशाल इमारत का दो लाख रुपये के मूल्य की कनखल–ज्वालापुर रोड पर निर्माण हो गया है और आधुनिक ढग की नवीन नवीन मशीनो द्वारा कार्य होने लगा है । फार्मेसी के लाभ के धन के बटवारे के सबन्ध मे विद्या सभा ने २१-७-४० को निश्चय किया कि सोलह हजार रुपये तक की आय का ६० प्रतिशत भाग गुरुकुल आयुर्वेद महाविद्यालय

का दिया जाय और ४० प्रतिशत गुरुकुल महानिधि को, परन्तु इस आयु में से कम से कम आठ हजार रुपया प्रतिवर्ष गुरुकुल महाविद्यालय को आवश्य दिया जाय। (ख) २० हजार रुपयो तक की आय की दशा मे यह राशि गुरुकुल आयुर्वेद महा विद्यालय तथा गुरुकुल महानिधि को आधी आधी बाट दी जाय। (ग) आय का अनपात बढने की दशा मे आयुर्वेद महाविद्यालय को पिछले अनुपात द्वारा प्राप्त अधिकतम राशि किसी भी दशा मे घटाई नही जायगी। चौबीस हजार रुपयो से अधिक आय होने की दशा मे उस अधिक राशि के विभाजन पर विद्यासभा पुन विचार करेगी।

गुरुकुल फामसी तथा रसायन विभाग के कार्य सचालन के लिय मे स्वामिनी सभा ने एक व्यवसायपटल की स्थापना की जिसकी देखरेख मे गुरुकुल के व्यवसाय सम्बन्धी कार्यों का सचालन होने लगा। उसका एक व्यवसायाध्यक्ष नियत किया गया जो मुख्याधिष्ठाता के निर्देशानुसार प्रबन्ध का कार्य करता था। श्री दीनदयालु जी शास्त्री १४ वर्ष ६ मास तक व्यवसायाध्यक्ष का कार्य बडी सफलता से करते रहे उनके सन् १९५९ मे उत्तर प्रदेश की सरकार के उपशिक्षा मत्री नियत हो जाने के पश्चात् श्री अर्जुनदेव विद्यालकार व्यवसायाध्यक्ष नियत हुए।

कार्य की मात्रा बहुत अधिक बढ जाने से विद्यासभा ने यह आवश्यक समझा कि प्रबन्ध व्यवस्था को और भी दृढ किया जाय। अपने ३१ दिसम्बर १९५५ के अधिवेशन मे दिल्ली के प्रसिद्ध उद्योगपति तथा व्यापारी श्री ला० हमराज गुप्त को गुरुकुल उद्योग शिक्षापटल का व्यवस्थापक नियत किया। इस समय प्रबन्ध की व्यवस्था यह है कि गुरुकुल की स्वामिनी सभा का गुरुकुलीय उपप्रधान व्यवसायपटल का निज अधिकार से प्रधान होता है। तदनन्तर मुख्याधिष्ठाता के सारे प्रबन्ध का मुख्य अधिकारी होने के कारण व्यवसाय शिक्षा विभाग का आन्तरिक

सब प्रबन्ध व्यवस्थापक के निर्देशानुसार व्यवसायाध्यक्ष के हाथ में है।

उद्योग शिक्षा विभाग ने कितनी उन्नति की है इसका अनुमान अन्त में परिशिष्ट संख्या २ में दिये आँकड़ों में विदित हो जायगा।

वैदिक अनुसंधान विभाग

वैदिक अनुसन्धान विभाग का कार्य श्री भगवद्दत्त वेदालंकार एम०ए० करते हैं। यह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का द्वारा प्रदत्त धन से संचालित है। संवत् २०११ में "अयास्य" ऋषि पर एक खोजपूर्ण निबन्ध लिखा गया है। उपनिषदों व ब्राह्मणग्रन्थों की परिभाषाओं और कथानकों का स्पष्टीकरण तथा वेद के रुद्र देवता, बृहस्पति देवता अश्विनौ व कण्व पर हस्तलेख तयार किया गया है। वैदिक ऋषि नृषद कण्व, मेधातिथि, अयास्य पर लेखादि संगृहीत किए गये।

संम्वत् २०१२ में वैदिक आधार पर सामान्य ऋषि का स्वरूप उसकी शक्ति, ऋषित्व की प्राप्ति आदि विषयों पर ऋषि भूमिका का स्वरूप लिखा गया। अग्नि, इन्द्र, सोम, अश्विनौ आदि देवताओं में ऋषि के सम्बन्ध में प्रकाश डाला गया।

संम्वत् २०१३ में विद्वान् कार्यकर्ता ने वेद के निम्नलिखित विषयों पर कार्य किया –

१. वेदों के ऋषि—पूर्व पक्ष के विविध पक्षों का निरूपण, अपौरुषेयपक्ष ऋषि अग्नि, ऋषि इन्द्र, ऋषि सोम।

२ पुरुषार्थ, चतुष्टय अर्थात् धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, का साधक वेद।

३ सामाजिक जीवन में धर्म का स्थान।

श्रद्धानन्द प्रतिष्ठान-कोष निर्माण

सवत् २०११ मे श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति मुख्याधिष्ठाता की योजना पर हिन्दी भाषा के कोष निर्माण का काय प्रारम्भ हुआ यह विभाग इतिहास उपाध्याय श्री प्रो० हरिदत्त जी के निरीक्षण म काय कर रहा है। कोष के प्रमुख कायकर्ता श्री धर्मदत्त जी विद्यावाचस्पति विद्यामार्तण्ड इस कोष का सपादन करते है। और प० शकरदेव जी विद्यालकार, एम०ए०भी उनकी सहायता के लिये विशेष रूप से नियुक्त किय गय थे। इस कोष मे ५० हजार समानार्थक शब्दो के सग्रह करन की योजना है। सवत् २०११ म ५ हजार शब्द तथा सवत् २०१५ मे विज्ञान, गणित, खनिज, कृषि, दशन, भूगोल, इतिहास आदि के १५ हजार प्रमाणिक शब्दो का सकलन किया जा चका था।

सवत् २०१६ तक हिन्दी कोष के लिए ४० हजार शब्दो का सकलन किया जा चका था। विभिन्न विज्ञान के शब्दो का इस वर्ष विशेष सग्रह किया है। जिन्ह यथास्थान कोष मे स्थान दिया जायेगा। इस कोष की यह मुख्य विशेषता है कि अग्रजी शब्दो के समानार्थक सस्कृत तथा हिन्दी शब्दो का और अनेक स्थानो पर बगला गुजराती मराठी, कन्नड, तेलुगु, मलयालम आदि प्रादेशिक भाषाओ मे विद्यमान उत्तम सस्कृत तत्सम तद्भव शब्दो का भी निदश किया जारहा है। अग्रेजी के पर्यायवाची समझ जाने वाले शब्दो के सूक्ष्म भदो के अनुसार उचित समानार्थक सस्कृत और हिन्दी शब्दो का सकलन किया जा रहा है। एतद्विषयक लेख माला कोष सपादक महोदय की ओर से गुरुकुल पत्रिका मे मुद्रित कराई जा रही है। कोष के नमूने के तौर पर लगभग ४० पृष्ठ की एक पुस्तिका छपवाई गई है जिसका भारत के प्रसिद्ध विद्वानो मे वितरण किया गया है ताकि उनके परामर्शों

से लाभ उठाया जा सके । इस पुस्तिका की भूमिका मान्य कुलपति श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति ने लिखी है और श्री डॉ० अविनाशचन्द्र बोस, श्री पी० के० गोडे, प्रिन्सिपल महेन्द्रप्रताप शास्त्री, आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री आदि विद्वानो की सम्मतिया भी उसमे प्रकाशित की गई है । आर्थिक कारणो से कुछ समय के लिये कोष निर्माण का कार्य स्थगित करना पडा है । आशा है कि शीघ्र ही फिर आरम्भ हो जायगा ।

अतिथि भवन

प्राचीनकाल के आश्रमो के समान गुरुकुल मे प्रारम्भ से ही अतिथियो के आदर सत्कार और निवास की प्रथा प्रचलित हो गई थी । अतिथि दो प्रकार के होते थे । एक तो गुरुकुल के ब्रह्मचारियो के सरक्षक दूसरे दर्शनार्थी । इन दोनो श्रेणियो के लिये अलग अलग निवास भोजन आदि की व्यवस्था रहती थी । पुण्य भूमि (गुरुकुल की पुरानी भूमि) मे परिवार गृहो मे एक सर्वमान्य धर्मशाला के अतिरिक्त दिल्ली के एक दानी महोदय की ओर से एक पक्की धर्मशाला भी बन गई थी जो अपने देश के अथवा विदेश के आए हुए विशेष अतिथियो के ठहरने के काम मे आती थी । अमरीका के मि० फेल्प्स, इगलैण्ड के मिस्टर एन्ड्रूज, मिस्टर मैकडोनल, मिस्टर नेवनसन आदि प्रसिद्ध पुरुषो के अतिरिक्त अन्य अनेक दर्शक और शिक्षार्थी विदेशी महानुभाव भी गुरुकुल के आतिथ्य का अनुभव करते थे ।

अब १९२४ ई० मे बाढ के कारण पुरानी भूमि छोड देनी पडी और नई भूमि मे सब कुछ नये सिरे से बनाना पडा, तब पुरानी अतिथि सेवा की व्यवस्था टूट गयी धीरे धीरे नई भूमि मे भी दानियो की सहायता से धर्मशालाओ का निर्माण हो गया । जिनमे अतिथियो

के रहने का सुविधा हो जाती थी परन्तु विशेष प्रतिथियो के लिये आतिथ्य का कोई उचित प्रबन्ध नही था। यह सोच कर गुरुकुल के अधिकारियो ने विद्यासभा से एक अच्छा अतिथि भवन बनाने की स्वीकृति प्राप्त कर ली और उसके लिये अनेक प्रयत्न करके लगभग ७२ हजार रुपया प्राप्त किया। परिवारगृहो के बाहर एक छोटी सी वाटिका के मध्य मे वह अतिथि भवन बहुत शोभायमान होता है। देश और विदेश के दर्जनो प्रतिष्ठित अतिथि भी उसमे निवास करके गुरुकुल को अतिथि सत्कार करने का अवसर दे चुके है। हमारे अतिथि भवन म आए हुए अतिथियो की सूची मे डा० राधाकृष्णन, प० जवाहरलाल नेहरू, श्री अनन्तशयनम, श्री के० एम० मुन्शी आदि अनेक आयगर महानुभावो के नाम है। अमरिका की फोड फाउण्डेशन के सदस्य, रूस के सास्कृतिक प्रतिनिधि श्री कोदिनोव भी गुरुकुल के अतिथि भवन मे निवास कर चुके है। आजकल जापान के समुद्र परिवार के कोसीनागा नाम के छात्र उसम रहकर हिन्दी और सस्कृत की शिक्षा पा रहे है। इस प्रकार जहा नया अतिथि भवन देश के बाह्य वातावरण से गुरुकुल का सम्पर्क स्थापित करने का सुन्दर साधन बन गया है वहा उसने अन्य देशो म गुरुकुल के सम्बन्धो को जोडने म भी सहायता की है।

शारीरिक व्यायाम तथा क्रीड़ा

गुरुकुल कागडी मे ब्रह्मचारियो की शारीरिक योग्यता को बढ़ाने का प्रारम्भ से यत्न किया जाता रहा है। जब अभी बालक झोपडियो मे रहते थे तभी से डण्ड, बैठक, कुश्ती कबड्डी आदि दैनिक व्यायाम तथा खेलो का क्रम जारी हो गया था। शारीरिक व्यायाम प्रत्येक छात्र के लिये अनिवार्य था। सन् १९०८ मे ही क्रिकेट और कुछ समय

फुटबाल का भी व्यायाम के कार्यक्रम म सम्मिलित कर लिया गया। दो वर्ष पश्चात् गतका, फरी तथा लाठी प्रहार आदि के अच्छे शिक्षक मिल जाने पर उनकी भी व्यवस्था की गयी। धनुष-बाण और घुड़सवारी शारीरिक शिक्षण के आवश्यक भाग बना दिये गये।

सन् १९०८ के लगभग हाकी की क्रीडा भी व्यायाम मे सम्मिलित हो गयी धीरे धीरे उसमे गुरुकुल के छात्रो ने इतनी कुशलता प्राप्त की - कि उन्होने कई आल इण्डिया हाकी टूर्नामेटो मे विजयी हो कर ट्राफिया जीती।

उन्ही दिनो मे देश मे प्रो० राममूर्ति के प्राणायाम और शारीरिक शक्ति के शारीरिक प्रयोगो की धूम मच गयी थी। ब्रह्मचारियो ने भी उन सब प्रयोगो का अभ्यास आरम्भ कर दिया जिन्ह दिखा कर प्रोफेसर राममूर्ति सरकस का आयोजन किया करते थे।

छाती पर पत्थर तोडना, बहुत से आदमियो से भरी गाडी छाती पर से निकालना, चलती मोटर को कमर मे रस्सा बाध कर रोक देना। इत्यादि प्रदर्शनो का अभ्यास करके कई ब्रह्मचारियो ने लोगो को चकित कर दिया। गुरुकुल के कई स्नातक और छात्र इस समय भी धनुष - बाण और बल प्रयोग के प्रदर्शनो को सफलता पूर्वक कर सकते हैं। श्रद्धानन्द सप्ताह के अवसर पर गुरुकुल कागडी मे एक "अखिल भारतीय श्रद्धानन्द हाकी टूर्नामेट" होता है – जो गुरुकुल के क्रीडा प्रेम का प्रमाण है। शिक्षा का यह सर्व सम्मत सिद्धान्त है कि पुस्तक विद्या के साथ साथ शारीरिक उन्नति की ओर भी ध्यान देना आवश्यक है। गुरुकुल मे उस की कभी उपेक्षा नही की गयी।

—दयानन्द द्वार

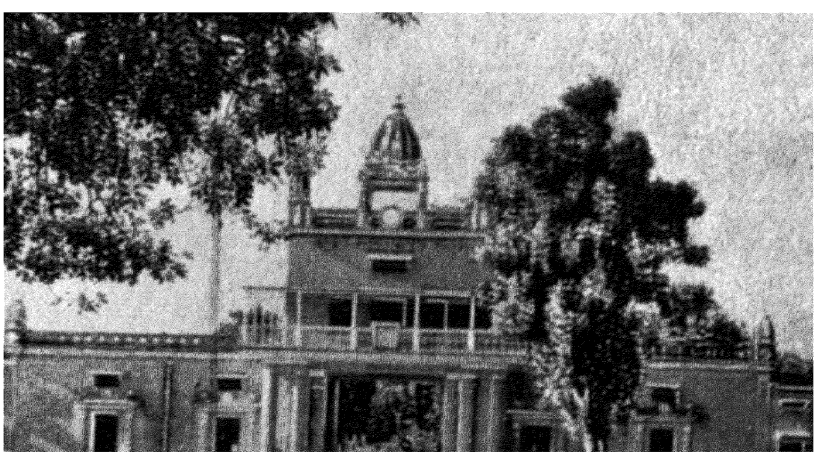

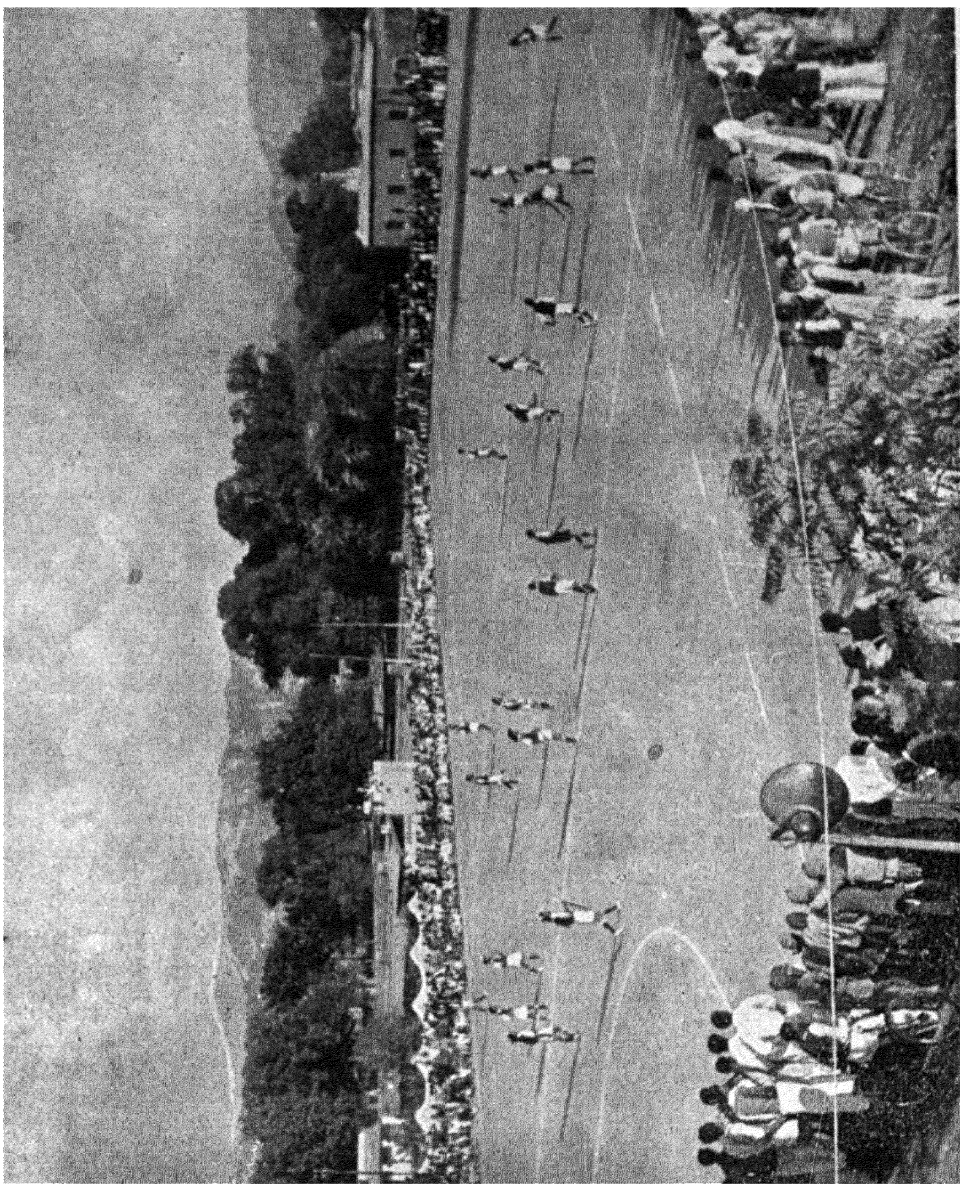

गुरुकुल का क्रीडा क्षेत्र

सिंह द्वार

जापानी विद्यार्थी कोकोनागा हिन्दी का अध्ययन करते हुए

सैनिक शिक्षा

स्वतन्त्र देश के नवयुवको के लिए सैनिक शिक्षा का प्राप्त करना अत्यन्त आवश्यक समझा जाता है ताकि देश के सकटकाल मे वे रक्षा के लिये सर्वथा तैयार रहे। इस विचार से सन् १९५६ मे विद्यालय मे ए०सी०सी० तथा महाविद्यालय मे एन०सी०सी० का शिक्षण प्रारम्भ कर दिया गया था। प्रोफेसर हरगोपालसिंह जी एम० ए० जो कि विधि पूर्वक एन०सी०सी० के शिक्षक की शिक्षा प्राप्त करके द्वितीय लेफ्टिनेन्ट का पद प्राप्त कर चुके है निरीक्षक नियुक्त किये गये। प्रतिवर्ष यह विभाग उन्नति करता गया। भिन्न भिन्न केन्द्रो मे जो शिविर लगते गये उनमे गुरुकुल के केडिटो ने भी भाग लिया। १९५७ के नवम्बर मास मे एन०सी०सी का ट्रेनिंग कैम्प लच्छीवाला मे लगा था। कैडिट्स को लच्छीवाला के बीहड जगलो म हमला करने तथा बचने की क्रियाओ का अभ्यास कराया गया। इसी वर्ष रानीखेत मे भी कैम्प हुआ जिसमे गुरुकुल के सैनिक छात्रो ने सफल भाग लिया। स्वतन्त्रता दिवस प्रतिवर्ष सैनिक प्रशिक्षण केन्द्र की ओर से समारोह के साथ मनाया जाता है। १९५८ ई० मे गुरुकुल कांगडी के एन० सी० सी० के छात्रो ने ३ शिवरो मे और उत्तर प्रदेश की रैली मे भाग लिया। लच्छीवाला के कैम्प मे प्रशिक्षण के बाद जो परीक्षा हुई उसमे गुरुकुल के छात्रो ने बहुत सम्मान और कई पदक प्राप्त किये। कैडिट दयानन्द के शारीरिक व्यायामो के प्रदर्शन से सब अधिकारी प्रसन्न हुए।

गुरुकुल के प्रशिक्षण कार्य से सन्तुष्ट हो कर उत्तरप्रदेश सरकार की ओर से एन० सी० सी० के भवन निर्माण के लिये ७१००) रु० का अनुदान प्राप्त हुआ है। गुरुकुल ने अपनी ओर से ८ हजार रु० व्यय करके उस भवन को पूरा करा दिया है। इस प्रकार गुरुकुल का एन० सी० सी० विभाग बहुत शीघ्र पहिले दर्जे के केन्द्रो मे आ जायगा।

गुरुकुल पत्रिका

गुरुकुल पत्रिका को प्रकाशित होते १२ वर्ष हो गये है। इसमे सास्कृतिक, धार्मिक और शिक्षा सबन्धी लेखो के अतिरिक्त गुरुकुल विश्व-विद्यालय की महीने भर की वृत्तियो का भी विवरण दिया जाता है। इसकी व्यवस्था उप-कुलपति के आधीन है और इसके वर्तमान सम्पादक प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड है। उससे पूर्व इसका सम्पादन श्री रामेशवेदी और प० शकरदेव विद्यालकार किया करते थे। जिन विद्वानो के लेख इस पत्रिका मे समय समय पर निकलते रहे है। उन मे से कुछ के नाम यह है—

आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री एम० ए०, प० आत्मानन्द विद्यालकार, डा० इन्द्रसेन एम० ए०, पी० एच० डी०, डा० शारदारानी साहित्य-रत्न एम० ए०, श्री समसुद्दीन एम० ए०, प० कर्णवीर साहित्य चक्रवर्ती, कविरत्न डा० हरिशकर शर्मा, डा० सूर्यदेव एम० ए०, प० वशीधर विद्यामार्तण्ड, आदि कवि अपनी कविताओ से पत्रिका को अलकृत करते रहते है। यह पत्रिका जहा एक ओर 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आदर्श' के प्रचार और व्याख्या का साधन है वहा वह गुरुकुल मे पढने वाले छात्रो के साथ उनके सरक्षको के सम्पर्क को भी जीवित रखती है। गुरुकुल की स्वर्ण जयन्ती के अवसर पर इसका जो विशेषाक निकला था उस मे गुरुकुल का लगभग पूरा इतिहास और विवरण आ गया था। सचालको की इच्छा है कि गुरुकुल पत्रिका को और भी अधिक उन्नत करके सर्व साधारण तथा विद्वानो के लिये अधिक उपयोगी बनाया जाय।

: १२

संस्कृत सेवा

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सन् १९०० में जिन पवित्र और उदात्त उद्देश्यों से हुई थी उनमें वेदादि सत्य शास्त्रों की शिक्षा और संस्कृत विद्या का प्रचार भी था जिस की उस समय के विद्यालयों में नितान्त उपेक्षा थी। गुरुकुल ने अपनी समस्त शाखाओं में संस्कृत शिक्षा को सब विद्यार्थियों के लिये अनिवार्य कर दिया और इसकी उच्चतम शिक्षा का प्रबन्ध किया। इस का परिणाम यह हुआ कि यहां के विद्याधिकारी परीक्षोत्तीर्ण विद्यार्थियों की संस्कृत की योग्यता बाहर के शास्त्री परीक्षोत्तीर्ण छात्र से भी अधिक रही। यहां के जो स्नातक विद्यालङ्कार, सिद्धान्तालङ्कार, वेदालङ्कार इत्यादि उपाधि लेकर निकले उन में से बहुतों की वेद, वैदिक साहित्य, संस्कृत साहित्य, दर्शनशास्त्र इत्यादि की योग्यता बाहर की आचार्य इत्यादि संस्कृत की उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण व्यक्तियों से कम नहीं, बल्कि विषय और ज्ञान की विशालता की दृष्टि से अधिक ही रही यदि ऐसा कहा जाय तो इस में कोई अत्युक्ति न होगी। गुरुकुल विश्वविद्यालय ने न केवल संस्कृत के विद्वान अपितु संस्कृत में धारा प्रवाह भाषण करने वाले, ग्रन्थ निर्माण करने वाले और उत्कृष्ट कविता करने वाले कवि भी अच्छी संख्या में उत्पन्न किये।

सस्कृत ग्रन्थ निर्माण

गुरुकुल का ध्यान सस्कृत के उत्तम ग्रन्थो के निर्माण की ओर स्थापना काल से ही रहा । प्रारम्भिक कक्षाओ मे लेकर महाविद्यालय की उच्च कक्षाओ तक के लिये व्याकरण, साहित्य, दर्शन, धर्मशास्त्र तथा वेद व्याख्या विषयक ग्रन्थ गुरुकुल के आचार्य तथा उपाध्याय वर्ग की ओर से बडी सख्या मे लिखित और प्रकाशित किये गये । इस बात को अनुभव करते हुए कि सस्कृत साहित्य के अनेक ग्रन्थ जो विशारद, शास्त्री, आचार्य, काव्य तीर्थ आदि परीक्षाओ मे पाठ्य पुस्तक के रूप मे पढ़ाये जाते हैं, उन मे अनेक अश्लील, कामोत्तेजक स्थल है जो ब्रह्मचर्य की दृष्टि से अत्यन्त हानिकारक है, गुरुकुल ने इन पुस्तको के सशोधित सस्करण प्रकाशित किये जिस से इन काव्य नाटकादि के उत्तम भागो से छात्र लाभ उठा सके ।

व्याकरण के ग्रन्थ

प्राचीन व्याकरण मे सबसे प्रमुख स्थान पाणिनिमुनि कृत अष्टाध्यायी और पतञ्जलिमुनि कृत महाभाष्य का है । गुरुकुल के प्रथम आचार्य प गगादत्त जी व्याकरण के धुरन्धर विद्वान थे उन्होने 'पाणिनीयाष्टकम्' इस नाम से दो भागो मे अष्टाध्यायी के सम्पूर्ण सूत्रो की व्याख्या मे अद्भुत ग्रन्थ लिखा जो गुरुकुल की ओर से प्रकाशित किया गया । यह ग्रन्थ अत्यधिक उपयोगी है । इस के दो भागो का मूल्य आजकल १४०० अर्थात् ७०० प्रति भाग है ।

अष्टाध्यायी मूल को भी गुरुकुल की ओर से प्रकाशित किया गया और सन्धि विषय, नामिक, आख्यातिक, स्त्रैणताद्धित आदि उसके भागो को पृथक् सस्कृत टीका तथा टिप्पणियो सहित प्रकाशित किया गया जिन

से सब विद्यार्थी लाभ उठा सकते है। प० धर्मदेव जी वेदवाचस्पति द्वारा लिखित सरल शब्द रूपावली भी प्रकाशित की गई। महाभाष्य के पस्पशान्हिक, अगाधिकार आदि अनेक प्रकरणो को पृथक् प्रकाशित किया गया। गुरुकुल के व्याकरण विषयक ये प्रकाशन छात्रो के लिये अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुए है।

सस्कृत की प्रारम्भिक पुस्तकें

गुरुकुल ने सस्कृत पाठशालाओ मे साधारणतया प्रचलित पाठ्य पुस्तको को अनेक अशो मे पर्याप्त उपयोगी तथा शैली की दृष्टि से उत्तम न पाकर अपनी ओर से सुयोग्य पण्डितो द्वारा पुस्तके तैयार कराई जिन मे निम्न विशेष उल्लेख योग्य है।

१, गुरुकुल के प्रथम सुयोग्य स्नातक, सस्थापक महात्मा मुन्शीराम जी के ज्येष्ठ पुत्र श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यालकार कृत सस्कृत प्रवेशिका प्रथम भाग जिस के १६ सस्करण प्रकाशित हो चुके है। इस से इसकी उपयोगिता और लोकप्रियता का अनुमान किया जा सकता है।

२ सस्कृत प्रवेशिका २ य भाग श्री आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

३ बालनीति कथामाला जिस मे हितोपदेश पञ्चतन्त्र आदि ग्र मे नीति विषयक अनेक कथाओ को सरल भाषा मे सकलित किया गया।

४ हितोपदेश का सशोधित गुरुकुलीय सस्करण।

५ पञ्चतन्त्र का सशोधित गुरुकुलीय सस्करण २ भागो मे।

६ सस्कृताङ्कुर।

७ काव्य लतिका--इस मे रघुवश, भट्टिकाव्य आदि मे कुछ उत्तम

भागो को सगृहीत किया गया। यह छात्रो के लिये बडा उपयोगी ग्रन्थ है।

८ सस्कृत साहित्य पाठावली।

९ आर्य सक्ति सुधा।

१० नीतिशतक (भर्तृहरी कृत) का सशोधित सस्करण।

११. कविराज श्री जगन्नाथ कृत 'अन्योक्ति शतकम्' का सशोधित सस्करण।

१२ साहित्य पुष्पाञ्जली गुरुकुल के ब्रह्मचारियो तथा स्नातको द्वारा निर्मित गीतियो का सग्रह।

उच्च कक्षाओं के लिये संस्कृत ग्रन्थ

साहित्यसुधा सग्रह के तीन भाग

यह सग्रह वेद, उपनिषद्, रघुवश, कुमारसभव, कादम्बरी, हर्षचरित, वासवदत्ता, अभिज्ञानशाकुन्तल, प्रबोधचन्द्रोदय, उत्तर रामचरित, मुद्राराक्षस, अनर्घराघव इत्यादि प्रसिद्ध सस्कृत ग्रन्थो मे साहित्याचार्य प वागीश्वर जी विद्यालकार और प भवानीप्रसाद जी ने किया जो विद्यार्थियो के लिये अत्यधिक उपयोगी है। इस के द्वारा विद्यार्थी प्राचीन और मध्य-कालीन कवियो तथा लेखको की रचनाओ के अच्छे उपयोगी भागो का बडी अच्छी तरह से रसास्वादन कर सकते है। श्री विश्वनाथ जी कृत साहित्यदर्पण सस्कृत का सुप्रसिद्ध ग्रन्थ है। गुरुकुल की ओर से उसका सशोधित सस्करण प्रकाशित किया गया जिससे सब छात्र भली भाति लाभ उठा सकते है। गुरुकुल के आचार्य महात्मा मुन्शीराम जी ने स्वय सुप्रसिद्ध मनुस्मृति का एक सशोधित सक्षिप्त सस्करण (जिस मे से प्रक्षिप्त श्लोक पृथक् कर दिये गये) 'वेदानुकूल सक्षिप्त मनुस्मृतिः' के नाम

से गुरुकुल की ओर से प्रकाशित कराया जिस से मनुस्मृति का शुद्ध रूप से विद्यार्थी अच्छा परिचय प्राप्त कर सके। इसी प्रकार अन्य भी संस्कृत साहित्य विषयक कुछ ग्रन्थ और गुरुकुलीय साहित्य परिषद् की ओर से उत्तम संस्कृत निबन्ध प्रकाशित किये गये।

योग दर्शन

योग दर्शन की भोजवृत्ति भी गुरुकुल विश्वविद्यालय की ओर से प्रकाशित की गई जो एक अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ है।

वेद और उपनिषद् विषयक साहित्य

वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो धर्म और विज्ञान के मूल है। वेदों की अनिवार्य शिक्षा का गुरुकुल में सब ब्रह्मचारियों के लिये बिना किसी प्रकार के भेद भाव के प्रबन्ध किया गया। वेदों की शिक्षाओं को विद्वन्मण्डली और सर्व साधारण तक पहुंचने के लिये गुरुकुल की ओर से स्वाध्याय मंजरी के नाम पुस्तकें प्रकाशित होती रही है। जिन में से विशेष उल्लेख योग्य निम्नलिखित है।

१ वैदिक विनय –३ खण्ड - आचार्य देवशर्मा जी विद्यालंकार (स्वा अभयदेव जी) कृत।

२ वरुण की नौका २ भाग -आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

३ वेदोद्यान के चुने हुए फूल –आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

४ वेद का राष्ट्रीय गीत – आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

५ मेरा धर्म––आचार्य प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति कृत।

६ वैदिक कर्त्तव्य शास्त्र––श्री प धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत।

७ वेदों का यथार्थ स्वरूप—श्री पण्डित धर्मदेव जी विद्यामार्तण्ड कृत।

८ वैदिक ब्रह्मचर्य गीत —आचार्य अभयदेव जी कृत।

९ ब्राह्मण की गौ —आचार्य अभयदेव जी कृत।

१० वैदिक आध्यात्म विद्या —श्री प भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।

११ वैदिक स्वप्न विज्ञान श्री प भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।

१२ आत्म समर्पण श्री प भगवद्दत्त जी वेदालंकार कृत।

१३ वैदिक सक्तिया —श्री प रामनाथ जी वेदालंकार कृत।

१४ वेदगीताञ्जली —श्री प वेदव्रत जी वेदालंकार आदि द्वारा सकलित।

१५ सोम सरोवर - श्री प चमपति जी एम ए कृत।

१६ सन्ध्या रहस्य श्री प विश्वनाथ जी विद्यालंकार कृत।

१७ सन्ध्या सुमन - श्री प नित्यानन्द जी वेदालंकार कृत।

१८ ईशोपनिषद् भाष्य -- श्री प इन्द्र जी विद्यावाचस्पति कृत इत्यादि।

इन पुस्तको मे वेदो के अनेक सूक्तो अथवा अध्यायो तथा विविध विषयो की अत्युत्तम व्याख्या की गई है जो विद्वानो और सर्व साधारण सब के लिये उपयोगी है। इस प्रकार वेदो और उपनिषदो की शिक्षाओ को लोक प्रिय बनाने के लिये गुरुकुल का यह कार्य अत्यधिक अभिनन्दनीय है।

सस्कृत सभा तथा पत्रिका

इन के अतिरिक्त सस्कृत भाषण के अभ्यास के लिये भी गुरुकुल मे सस्कृतोत्साहिनी, देव गोष्ठी इत्यादि सभाओ का आयोजन सदा

किया जाता रहा जिसकी ओर से कवि सम्मेलन, संस्कृत साहित्य सम्मेलन आदि विविध सम्मेलनों का आयोजन होता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि गुरुकुल ने बहुत संख्या में संस्कृत भाषा के धुरन्धर धाराप्रवाही वक्ता उत्पन्न किये संस्कृत की उषा नाम की पत्रिका भी गुरुकुल की ओर से कई वर्षों तक निकलती रही।

इस प्रकार संस्कृत के प्रचार विषयक गुरुकुल के कार्य का संक्षेप में दिग्दर्शन कराया गया है।

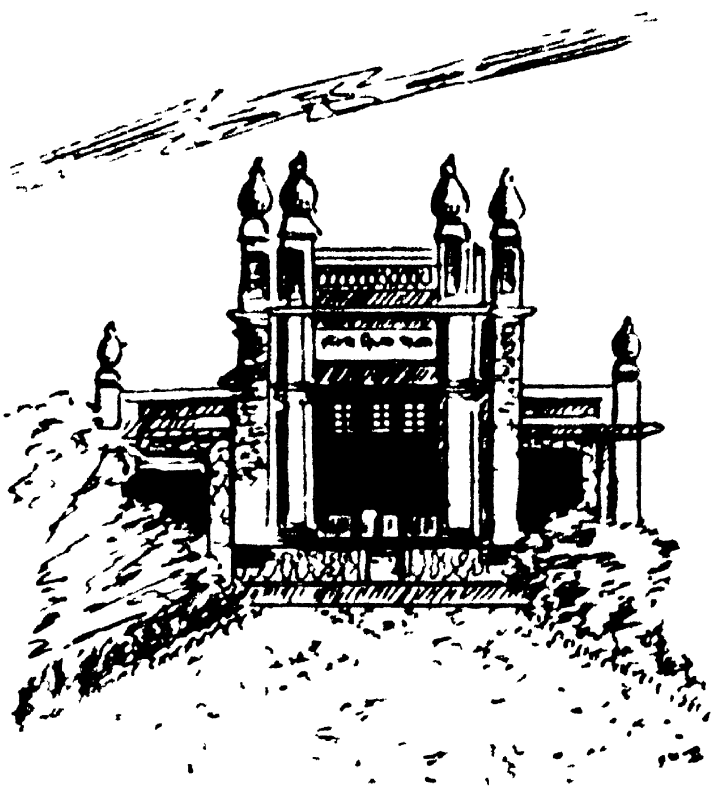

शल्य क्रिया भवन

* * *

: १३ :

सिंहावलोकन

गुरुकुल की स्थापना एक ऊचे आदर्श को लेकर हुई थी। बीसवी शताब्दी के सर्वोच्च सुधारक महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थो मे जिस शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया था, वह भारत की प्राचीन परम्परा पर आश्रित थी। महर्षि के निर्वाण के पश्चात् उनके शिष्यो ने उनकी बताई शिक्षा प्रणाली को मूर्त रूप देने के लिये डी०ए०वी० सस्था के रूप मे जो प्रयत्न किया उस से आर्य जनता पूरी तरह सन्तुष्ट न हुई। तब महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) और उनके कुछ साथियो ने प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिये गुरुकुल की स्थापना का प्रस्ताव आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के सामने रखा।

गुरुकुल की स्थापना के लिये दो वस्तुए अनिवार्य रूप से आवश्यक थी। एक पर्याप्त धन राशि और दूसरी सस्था के लिये स्थान। जो बोले सो कुण्डा खोले की लोकोक्ति के अनुसार यह दोनो कार्य महात्मा मुन्शीराम जी के सुपुर्द किये गये। सभा ने गुरुकुल के सचालन के लिये उस समय ३० हजार रुपये की मात्रा पर्याप्त समझी। महात्माजी ने लगभग ६ मास तक सारे देश का भ्रमण कर के निश्चित राशि से कुछ अधिक राशि एकत्र कर दी। यह १९वी सदी के अन्तिम दिनो की बात है उस समय किसी सार्वजनिक काम के लिये

३० हजार की राशि एकत्रित करना अत्यन्त कठिन ही नही असभव सा समझा जाता था। वह कार्य हो गया तब उचित स्थान की तलाश हुई। उस समय प्रभु की उस प्रेरणा शक्ति का चमत्कार हुआ जो प्रत्येक शुभ कार्य की पूर्ति के लिये हुआ करता है। नजीबाबाद के धर्मपरायण मुन्शी अमनसिह जी के मन मे प्रेरणा हुई और उन्होने हरिद्वार के सामने, गगा के पूर्वी तट पर बसा हुआ अपना कागडी नाम का ग्राम अपनी सारी भूमि के साथ गुरुकुल के लिये दे दिया।

उधर गगा तट पर गुरुकुल के लिये भूमि साफ होने लगी और छप्पर छाये जाने लगे और इधर पजाब के गुजरानवाला नगर मे पहले से बनी हुई वैदिक पाठशाला के कुछ छात्रो को लेकर गुरुकुल की स्थापना करदी गई। गुरुकुल का यह बीजोरोपण सन् १९०० ई० मे हुआ।

सस्कृत लोकोक्ति है—"स्वल्पारम्भा क्षेमकरा" जो कार्य छोटे रूप मे प्रारम्भ किये जाते है, वह अन्त मे कल्याणकारी होते है, क्योकि उन की पूर्ति के लिये जो प्रयत्न और स्वार्थत्याग किया जाता है, वह उन के भविष्य को बहुत उज्वल और शानदार बनादेता है। दो वर्ष तक गुरुकुल की श्रेणिया गुजरावाला मे चलती रही। १९०२ के प्रारम्भ मे गगा तट पर प्रारम्भिक श्रेणियो के योग्य छप्पर बन जाने पर लगभग दो दर्जन बालको को लेकर महात्मा मुन्शीराम जी और आचार्य प० गगादत्त जी कागडी की भूमि मे पहुच गये। इस प्रकार गुरुकुल का पौधा गुजरावाला की ऊसर भूमि से उठाकर कागडी की उपजाऊ भूमि मे रोपा गया।

कांगडी की उपजाऊ भूमि मे आकर गुरुकुल का अकुर वृद्धि पाने लगा और धीरे धीरे बढता हुआ वृक्ष रूप मे परिणत हो गया

१९०० मे जो शिक्षणालय प्रारम्भिक श्रेणी से आरम्भ हुआ था। वह नई भूमि मे विद्यालय के रूप में आकर १९०८ मे महाविद्यालय मे और १९१२ मे विश्वविद्यालय के रूप मे परिणित हो गया। उस समय तक आश्रम, विद्यालय, महाविद्यालय, चिकित्सालय आदि के लिये आवश्यक भवन तैयार हो चुके थे। पुस्तकालय तथा रसायनशाला आदि शिक्षा के लिये उपयोगी शालाए तैयार हो चुकी थीं। गुरुकुल की स्वाधीन स्थिति और उत्कृष्ट शिक्षा प्रणाली से आकृष्ट होकर देश विदेश के अनेक विद्वान् तथा नेता गुरुकुल मे आकर उसकी प्रणाली का अनुशीलन करते थे। गुरुकुल का आकर्षण इतना बढा कि भारत के वाइसराय और गवर्नर, अमेरिका, इगलैन्ड के पत्रकार तथा राजनैतिक दलो के नेता वास्तविक भारत को समझने के लिये गुरुकुल को देखना आवश्यक समझकर वहा आते और कई दिनो तक ठहरते।

गुरुकुल की इस निरन्तर उन्नति पर दैव का एक आकस्मिक वज्रपात हुआ। सन् १९२४ मे गगा मे जो भयकर बाढ आई उस ने एक प्रकार मे गुरुकुल मे खण्ड-प्रलय मचा दी। आश्रम, भोजनभडार, चिकित्सालय, वस्तुभडार, प्रैस, आदि की सब इमारते सर्वथा नष्ट हो गई। विज्ञान का समान टूट फूट गया या बह गया। पुस्तकालय को भयानक क्षति पहुचो। इस प्रकार २२ वर्षों के घोर परिश्रम, दृढ पयत्न और तपश्चर्या से बनाया हुआ उद्यान देव के प्रकोप से उजड गया। आघात तो बडा भारी था परन्तु गुरुकुल के संचालको ने हिम्मत नही हारी। गगा के पूर्वी तट पर सकट का अनुभव करके पश्चिमी तट पर नहर के किनारे नई भूमि खरीदी गई और फिर से भवनो का निर्माण किया गया। इस पुनर्निर्माण के पहले पर्व का श्रेय गुरुकुल के उस समय के आचार्य श्री प्रो० रामदेव जी को है। कुछ ही वर्षों के परिश्रम से गुरुकुल की वर्तमान भूमि पर फिर वही उद्यान लहलहाता दिखाई देने लगा जिसे दुर्दैव ने कुछ वर्ष

पूर्व उजाड दिया था। इस प्रकार गुरुकुल के जीवन का दूसरा अध्याय आरम्भ हुआ।

जीवन के व्यतीत ६० वर्षों मे जन विप्लव की दैवी आपत्ति के अतिरिक्त अन्य अनेक मनुष्य कृत आपत्तिया भी आई। उन मे से मुख्य वह आपत्ति थी जो गुरुकुल की राष्ट्रीय प्रवृत्तियो के कारण सरकारी दमन के रूप मे प्रकट होती रही। गुरुकुल की प्रवृत्ति राष्ट्रीयता की ओर अवश्य थी परन्तु उस ने सस्था रूप मे राष्ट्रीय आन्दोलन मे कभी भाग नही लिया। यह सदा शिक्षण सस्था ही बनी रही इस कारण सरकारी कोप के बादल आये और कुछ समय बाद ठहर कर उड गये।

सस्थाओ मे बाह्य तथा आतरिक सघर्षो का होना बिलकुल स्वाभाविक है। जहा दस आदमी भी रहेगे, परस्पर मतभेद होगे। फिर जहा सार्वजनिक क्षेत्र मे एक नवीन आदर्श को सम्मुख रख बहुत से महानुभाव काम कर रहे हो यह कैसे सभव है कि परस्पर मतभेद व सघर्ष न हो इन सघर्षों का भी उपयोग है। जबतक आदर्श सिद्धान्त और क्रिया-विधि के सम्बन्ध मे लोगो मे मतभेद न हो, और उनकी क्रिया प्रतिक्रिया से समन्वय न हो उन्नति असम्भव है। गुरुकुल के विषय मे भी विविध महानुभावो मे बहुत से मतभेद रहे, अनेक बार सघर्ष हुए। पर इस मे सन्देह नही कि सबका लक्ष्य गुरुकुल की उन्नति रहा। इसी का परिणाम है कि गुरुकुल आज इस उन्नत दशा को पहुच सका है।

जिन महानुभावो के प्रयत्न से गुरुकुल अपनी वर्तमान दशा को पहुचा है, उन सब का उल्लेख करना असभव था। हमने केवल उन महानुभावों का नाम दिया है, जो प्रमुख रूप से जनता के सामने

रहे पर उनके अतिरिक्त कितने ही महानुभाव है जिन्होने गुरुकुल के लिये अपना तन, मन, धन और सबकुछ अर्पण कर दिया। मुन्शी रामसिह जी गुरुकुल खुलने के कुछ वर्ष बाद यहा आये, उनके पास जो धन-सम्पत्ति थी सब गुरुकुल के लिये दान कर दी और भोजन मात्र पर गुरुकुल की सेवा प्रारम्भ की। उन्होने कोई चालीस वर्ष तक गुरुकुल की सेवा की। लाला बीरबल जी लाला चिरजीलाल जी पटवारी ने भडारी के रूप मे और गुरू रामजीलाल जी ने गोशालाध्यक्ष के रूप मे गुरुकुल की जो सेवा की उसे कौन आँखो से ओझल कर सकता है। लाला लब्भूराम जी नैय्यड ने गुरुकुल के लिये धन एकत्रित करने मे जो कार्य किया, वस्तुत अद्भुत है। यदि उन जैसे दस महानुभाव और निकल आवे तो गुरुकुल अर्थिक चिता से सदा के लिए मुक्त हो जावे। भाई टेकचन्द नागिया ने ५० हजार रुपया दान देकर गुरुकुल की इमारत निधि को जहा बडी सहायता पहुचाई, वहा प्रतिवर्ष एक विद्यार्थी सर्वथा मुफ्त खाने पीने का व्यय भी न लेकर दाखिल करने की व्यवस्था की, उसे रघुमल के बाद गुरुकुल के दानियो मे भाई जी का ही सर्वोच्च स्थान है। ला० नन्दलाल, श्रीयुत ज्ञानचन्द महता, डिप्टी रघुवरदयाल, प० महानन्द सिद्धान्तालकार, श्री देवराज जी सेठी, प० दीनदयालु जी शास्त्री और प० वागीश्वर जी आदि महानुभाव ने गुरुकुल के आन्तरिक प्रबन्ध को सभालने मे बडा भारी कार्य किया। गुरुकुल के कार्यालय को उन्नत करने, सुव्यवस्थित रूप मे लाने, और उसके जन्मदाता ला० नन्दलाल जी थे। उसे उन्नत करने का श्रेय ला० मुरारीलाल जी और प० अमरनाथ जी सप्रू को है हम कहा तक नाम लिखे। गुरुकुल कार्यकर्त्ताओं की दृष्टि से बडा सौभाग्यशाली रहा है उसके प्रत्येक अग पर किसी न किसी स्वार्थत्यागी कर्मचारी के अनथक परिश्रम और लगन की छाप है।

गुरुकुल को स्थापित हुए आज ६० वर्ष हो चुके है। ३४ विद्यार्थियो

की छोटी सी पाठशाला से शुरु हो कर अब वह एक विश्वविद्यालय बन चुका है, जिस मे एक हजार के लगभग विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे है । उस के अन्तर्गत चार महाविद्यालय और दस विद्यालय है। गुरुकुल की उन्नति सचमुच आश्चर्यजनक है । सरकार से न केवल किसी प्रकार की सहायता न लेकर, अपितु सरकारी शिक्षा से किसी प्रकार का सम्बन्ध न रख राष्ट्रीय शिक्षणालय के रूप मे गुरुकुल कॉगडी को जितनी सफलता मिली है, उतनी अन्य किसी सस्था को नही मिली । गुरुकुल को स्थापना आर्य समाज ने की थी। आर्यसमाज के शिक्षा के क्षेत्र मे जो विशेष आदर्श और सिद्धान्त है उन्हे क्रिया मे परिणत कर गुरुकुल ने बडा भारी कार्य किया है। वैदिक-धर्म भारतीय सभ्यता और आर्य सस्कृति के रग मे रगे हुए उच्च शिक्षित नागरिक उत्पन्न कर गुरुकुल ने जहा आर्यसमाज की बडी सेवा की है वहा सच्ची राष्ट्रीय शिक्षा का विचार भी देश के सम्मुख रखा है।

गुरुकुल स्थापित करने मे आर्य प्रतिनिधि सभा का एक मुख्य उद्देश्य वैदिक साहित्य का अनुशीलन तथा वैदिकधर्म का पुनरुज्जीवन था । इस के लिये जो कार्य गुरुकुल ने किया है, वह ध्यान देने योग्य है। प्रारम्भ मे गुरुकुल मे इन विषयो को पढाने के लिये जब अध्यापको की आवश्यकता हुई तो सनातनी पडित रखे गये । श्री गुरु काशीनाथ जी, प० सूर्यदेव शर्मा और प० योगेन्द्रनाथ भट्टाचार्य जी गुरुकुल मे सब से पहले वेद वेदाग के अध्यापक थे। ये लोग कट्टर सनातनी थे और गुरुकुल मे रहते हुए भी मूर्तिपूजा करते थे। ढूढने से भी आर्य समाज मे कोई भी ऐसा प० उस समय मे नही मिलता था, जो वेद, ब्राह्मणग्रन्थ व दर्शनो का उच्च कोटि का अध्यापन करा सके । कुछ दिनो के लिये प० शिवशकर काव्यतीर्थ गुरुकुल रहे, पर भयकर रोग से पीडित होने के कारण वे देर तक न टिक सके। पर

गुरुकुल की स्थापना से मिली प्रेरणा और उसके अपने प्रयत्न से आज वेद वेदाग के पडितो की कमी नही रही है। आज न केवल गुरुकुल कागडी मे, अपितु बहुत सी आर्य सस्थाओ मे भी इन विषयो के पढाने का कार्य गुरुकुल के स्नातक कर रहे है। प० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर गुरुकुल के स्नातक नही है पर उन्होने प्राय सम्पूर्ण वैदिक ज्ञान गुरुकुल मे रहकर प्राप्त किया है। गुरुकुल के स्नातको मे प० जयदेव जी विद्यालकार ने चारो वेदो का भाष्य कर आर्यसमाज की महान् सेवा की है उसे कौन भूल सकता है।

गुरुकुल के वेदोपाध्याय प० विश्वनाथ विद्यालकार आर्यसमाज के बहुत गम्भीर वैदिक विद्वान है वेदो का जितना विस्तृत और विवेचनात्मक अध्ययन उन्होने किया है उतना और शायद किसी ने न किया हो। प० देवशर्मा विद्यालङ्कार की "वैदिक विनय" जिस ने पढी है उसने उसकी मुक्त कठ से प्रशसा की। प० इन्द्र विद्यावाचस्पति प० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार, प० धर्म देव जी विद्यावाचस्पति, प० भगवद्दत्त जी वेदालकार, प० देवराज जी आदि कितने ही स्नातको की वेद विषयक पुस्तके आर्य समाज के सम्मुख आ चुकी है। अनेक स्नातक वेद विषयक ग्रन्थ लिखने मे व्यस्त है। गुरुकुल का प्रत्येक विद्यार्थी लगभग २००० मन्त्र गुरुकुल मे पढ लेता है। इससे उनमे वेदो को समझने की अच्छी योग्यता उत्पन्न हो जाती है जो विद्यार्थी वेद महाविद्यालय मे पढते है, उनकी वैदिक योग्यता तो और भी हो जाती है। आधुनिक ज्ञान विज्ञानो तथा नवीन विवेचनात्मक शैली से परिचित होने के कारण गुरुकुल के स्नातक वैदिक अनुसधान का कार्य बडी उत्तमता के साथ कर सकते है।

आर्यसमाज के प्रचार के लिए भी गुरुकुल के स्नातको ने बहुत

कार्य किया है। प्रतिनिधि सभा के अनेक प्रसिद्ध उपदेशक गुरुकुल के स्नातक रहे है। प० बुद्धदेव जी, प० प्रियव्रत जी, प० यश पाल जी आदि स्नातक प्रचार कार्य जिस सफलता के साथ करते रहे है उस से पजाब के आर्य बन्धु भली भाति परिचित है। दक्षिण भारत मे वैदिक धर्म का सन्देश प० धर्मदेव जी, प० केशवदेव जी, प० देवेश्वर जी आदि स्नातक ही ले गये है। दक्षिण अफ्रीका फिजी आदि विदेशो मे प० सत्यपाल जी, प० ईश्वरदत्त जी, प० अमीचन्द जी आदि कितने ही स्नातक वैदिक धर्म का प्रचार कर चुके है और कर रहे है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की जो सेवा गुरुकल के स्नातको ने की है उस की सर्वत्र प्रशसा हुई है। इतिहास, अर्थशास्त्र, राजनीति आदि विविध विषयो पर गुरुकुल के स्नातको ने मौलिक ग्रन्थ लिखे है। गुरुकुल के दो स्नातको को हिन्दी साहित्य की ओर से १२००) का मगलाप्रसाद पारितोषिक भी प्राप्त हो चुका है। ।प० सत्यकेतु विद्यालकार ने "मौर्य साम्राज्य का इतिहास" पर और प० जयचन्द्र जी विद्यालकार ने "भारतीय इतिहास की रूप रेखा" पर यह पुरस्कार प्राप्त किया है। पण्डित सत्यव्रत जी को उपनिषदो के अनुवाद पर पुष्कल पुरस्कार प्राप्त हुआ। डा० प्राणनाथ विद्यालकार के ग्रन्थ हिन्दी जगत् मे अच्छी ख्याति प्राप्त कर चुके है। श्री हरिदत्त जी वेदालकार ने "हिन्दू परिवार का इतिहास" तथा "हिन्दू विवाह का विकास' नामक दो पस्तके लिखी है, जिन पर बगाल हिन्दी मण्डल द्वारा बारह बारह सौ के दो पारितोषिक मिले है। प० चन्द्रगुप्त वेदालकार का "बृहत्तर भारत" ग्रन्थ अपने विषय का अनुपम व प्रामाणिक ग्रन्थ है। प० चन्द्रमणि विद्यालकार ने निरुक्त का जो विस्तृत भाष्य किया है, उसकी भारत भर के विद्वानो ने मुक्त कण्ठ से प्रशसा की है। निरुक्त पर सभवत वह सब से उत्तम ग्रन्थ है। प० चन्द्रगुप्त विद्यालकार हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यक है। उनकी रचनाये बहुत उच्चकोटी की मानी जाती है। पण्डित वागीश्वर जी,

प० वर्शाधर विद्यालकार, प० निरजनदेव और प० सत्यपाल 'उन्मुख' अच्छे कवि है, और हिन्दी के कवि समाज मे अच्छी स्थिति रखते है। आयुर्वेद सम्बन्धी ग्रन्थो को लिखने मे श्री जयदेव विद्यालकार, श्री विद्याधर विद्यालकार श्री अत्रिदेव विद्यालकार और श्री रमेश बेदी आयुर्वेदालकार ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। इस के अतिरिक्त अन्य भी बहुत से स्नातको ने हिन्दी साहित्यिक क्षेत्र मे बहुमूल्य सेवा की है। गुरुकुल के कम से कम २५ फी सदी स्नातक अच्छे लेखक है ओर अपने लेखो व ग्रन्थो द्वारा हिन्दी साहित्य की सेवा कर रहे है।

सस्कृत साहित्य के निर्माण कार्य मे भी स्नातको को यश मिला है प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड तथा प० जनमेजय विद्यालकार सस्कृत कविताओ पर सरकार से पुरस्कृत हुए है।

पत्र सम्पादन के क्षेत्र मे भी गुरुकुल के स्नातको ने अच्छी ख्याति प्राप्त की है। सर्व श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, सत्यदेव विद्यालकार, रामगोपाल विद्यालकार, भीमसेन विद्यालकार, चन्द्रगुप्त विद्यालकार, अवनीन्द्र कुमार विद्यालकार, कृष्णचन्द्र विद्यालकार, सत्यकाम विद्यालकार, पडित वेदव्रत विद्यालकार, परम विद्यालकार, क्षितीश विद्यालकार, सतीश विद्यालकार कृष्णचन्द्र मेहता विद्यालकार, शिवकुमार विद्यालकार, अशोक कुमार विद्यालकार, आनन्द विद्यालकार, ब्रह्मदत्त विद्यालकार, अशोककुमार विद्यालकार, आदि कितने ही स्नातक विविध समाचार पत्रो के सम्पादन कार्य मे प्रसिद्धि प्राप्त कर चुके है। अभिप्राय यह है कि कि हिन्दी के सभी साहित्यिक क्षेत्रो मे स्नातक लोग सफलता प्राप्त कर रहे है।

राष्ट्रीय सेवा

राष्ट्रसेवा के क्षेत्र मे भी गुरुकुल ने प्रशसनीय भाग लिया है। १९१९ ईस्वी से आरम्भ होकर १९४७ ईस्वी तक राष्ट्र ने जो सत्याग्रह का सफल

सग्राम किया उस मे गुरुकुल के छात्र तथा उपाध्याय पर्याप्त भाग लेते रहे। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् जब स्वनामधन्य सरदार बल्लभ भाई पटेल की प्रेरणा से गुरुकुल की उपाधियो को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हो गई और उस के स्नातको को राजनैतिक क्षेत्र मे कार्य करने का खुला अवसर मिला, तब से अनेक स्नातक शासन मे सम्बन्ध रखने वाले तथा उनके अतिरिक्त अन्य ऊचे पदो पर प्रतिष्ठित होकर सफलता प्राप्त कर चुके है और अब भी कर रहे है। श्री विनायकराव विद्यालकार, श्री अमरनाथ विद्यालकार, श्री दीनदयालु शास्त्री आदि स्नातक ऊँचे राजकीय पदो पर कार्य कर रहे है। और अनेक स्नातक धारा सभाओ के सदस्य चुने जाकर राष्ट्रीय सेवा कर रहे है।

भावी योजनाएं

यह तो हुआ गुरुकुल ६० वर्षो का सिहावलोकन। अब हम उस के भविष्य की ओर दृष्टि डालते है तो हमे बहुत विस्तृत क्षेत्र दिखाई देता है। सब से पहला काम तो यह है कि इस समय जो गुरुकुल विश्वविद्यालय का ढाचा तैयार हुआ है, उसे पूर्णता तक पहुचाया जाय। प्रत्येक विभाग मे उन्नति की गु जाइश है। विद्यालय की शिशु श्रेणियो की व्यवस्था बडी श्रेणियो से अलग करना आवश्यक है ताकि उन्हे माता की गोद सा विश्राम मिल सके। शेष श्रेणियो का प्रबन्ध तथा शिक्षा को उन्नत करके गुरुकुल विद्यालय को अन्य गुरुकुलो तथा स्कूलो के लिये आदर्श बनाने का यत्न होना चाहिये। वेद, कला, विज्ञान, तथा कृषि के महाविद्यालयो की शिक्षा को उन्नत करना चाहिये वे शिक्षार्थियो के लिये आकर्षण के केन्द्र बन जाये भवन बहुत बन चुके है, अब भी बन रहे है और आगे भी बनते रहेगे परन्तु वास्तविक कर्त्तव्य यह है कि गुरुकुल के मूल सिद्धान्तो की रक्षा करते हुए शिक्षा के स्तर को तथा उपयोगिता को अधिकाधिक

बढाया जाय। इस लक्ष्य की पूर्ति के लिये ऊंची योग्यता वाले गुरुओं का सग्रह आवश्यक है। हमे उस का भी प्रयत्न जारी रखना चाहिये।

एक विभाग खुलना शेष है। गुरुकुल की प्रारम्भिक नियमावली मे उस की चर्चा थी। विद्यासभा ने १९४३ मे शिक्षा की जो योजना स्वीकार की थी उसमे शिल्प तथा उद्योग शिक्षा को भी स्थान दिया था। गुरुकुल के सस्थापक श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने पुरानी भूमि मे कला भवन की स्थापना करके शिल्प शिक्षा का आरम्भ भी कर दिया था। परन्तु बाढ से इमारतो के साथ कला भवन भी बह गया। नई भूमि मे अभी तक शिल्प की शिक्षा आरम्भ करने के लिये कोई पग नही उठाया जा सका। आशा है कि अवसर अनुकूल होने पर विद्यासभा की स्वीकृति से गुरुकुल के कार्यकर्त्ता कुछ समय पश्चात् शिल्प शिक्षा की भी व्यवस्था कर सकेंगे।

राष्ट्रीय सैनिक शिक्षा

* * *

परिशिष्ट संख्या १

स्नातकों की प्रान्तवार सूची

क्रम सं०	प्रान्त	स्नातक संख्या
१	मध्यभारत	१०
२	बंगाल	६
३.	उड़ीसा	१
४	आंध्र	४
५	मद्रास	२
६	मैसूर	२
७	बम्बई	६३
८	राजस्थान	२६
९.	सौराष्ट्र	१०
१०	हिमाचल प्रदेश	२
११	पंजाब	१३६
१२.	दिल्ली	१०२
१३	बिहार	२३
१४	यू० पी०	२३२
१५.	स्याम	१
१६.	अमेरिका	३
१७.	अफ्रीका	१७
१८.	नेपाल	१
१९.	फ्रेंच इंडिया	१
	कुल स्नातक संख्या संवत् २०१५ के अन्त तक—	६७७

: १५ :

परिशिष्ट २

गुरुकुल के आय व्यय का तुलनात्मक विवरण

सवत्	आय	व्यय
१९७०	१,००,५४४)	१,२२,५९०)
१९८०	१,४८,७०८)	१,४०,०२३)
१९९०	१,५०,१७९)	१,४९,५५०)
२०००	२,२९,२३७)	२,४२,९९४)
२०१०	५,१५,१८४)	४,५४,५९४)
२०१६ कार्तिक तक	२,९४,६०१)	३,००,७४५)

फार्मेसी के लाभ का तुलनात्मक विवरण

सवत्	
१९९१	२६६५१)८६
२००१	४७७९९)२१
२०११	७७११६)५४

परिशिष्ट ३

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय

प्राध्यापक तथा अध्यापक

२०१६ (१९६०)

वेद महाविद्यालय

१ श्री प० प्रियव्रत जी वेदवाचस्पति–आचार्य
२ श्री सुखदेव जी विद्यावाचस्पति, दर्शन भूषण–अध्यक्ष
३ श्री हरिदत्त जी वेदालङ्कार, एम ए.
४ श्री रामनाथ जी वेदालङ्कार, एम ए –प्रस्तोता
५ श्री गंगाराम जी गर्ग एम ए
६ श्री धर्मदेव जी विद्यावाचस्पति एम ए
७. श्री हरगोपालसिंह जी एम ए (मनोविज्ञान)

आयुर्वेद महाविद्यालय

१ श्री निरंजनदेव जी आयुर्वेदालङ्कार–अध्यक्ष
२ श्री बेलीराम जी एम बी बी एस
३ श्री अनन्तानन्द जी आयुर्वेदालङ्कार
४ श्री रामराज जी आयुर्वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य एम. ए.
५ श्री चम्पत स्वरूप जी एम एस. सी., एल एल. बी.
६. श्री आनन्द मोहन जी एम. बी. बी. एस
८. रामनाथ जी आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेद वाचस्पति ।

९ श्री क्रान्ति कृष्ण जी आयुर्वेदालङ्कार
१०. श्री सत्यपाल आयुर्वेदालङ्कार
११ श्री सत्यदेव जी विद्यालङ्कार आयुर्वेद भूषण
१२ श्री दिनेश कुमार जी बी एस सी
१३ श्री महेशचन्द्र जी आयुर्वेदालङ्कार, ए.एम बी.एस
१४ श्री मदनगोपाल जी आयुर्वेदालकार, एम ए बी एस

विज्ञान महाविद्यालय

१ श्री फकीरचन्द जी एम एस.सी -अध्यक्ष
२ श्री सुरेशचन्द्र जी एम एस.सी (गणित)
३ श्री भूदेव जी एम एस सी (फिजिक्स)
४. श्री ओ पी सिन्हा एम एस.सी. (कैमिस्ट्री)
५, श्री सुरेश कुमार जी विद्यालङ्कार–एम ए ।
६ श्री वेद प्रकाश जी–एम ए सी (मैथमैटिक्स)
७ श्री विष्णुदत्त जी-एम ए (इगलिश)
८ श्री हमराज जी बी ए ,एफ.एस सी
९ श्री ठाकुर सिंह जी बी एस.सी.

माध्यमिक शिक्षा

१. श्री दयालु जी एम ए., ए टी. सी -मुख्याध्यापक
२ श्री विष्णुदत्त जी विद्यालङ्कार, एम ए ।
३ श्री राजेन्द्र कुमार जी वेदालङ्कार, एम ए ।
४. श्री वासुदेव जी विद्यालङ्कार ।
५ श्री नृसिंहदेव जी शास्त्री, सर्वदर्शनाचार्य ।
६ श्री कृष्णराव जी वेदालङ्कार ।
७. श्री नन्दकुमार जी बी एस सी ।

८. श्री शिवस्वरूप जी बी ए बी टी ।

९. श्री झलसिंह जी बी ए बी टी ।

१०. श्री आनन्द प्रकाश जी बी ए बी टी ।

प्रारम्भिक विद्यालय

११ श्री चन्द्रकेतु जी आयुर्वेदशास्त्री

१२. श्री प्रकाशचन्द्र जी वेदालङ्कार ।

१३. मोखासिंह जी ।

१४. श्री पुरुषोत्तमदेव जी आयुर्वेदालङ्कार ।

१५. श्री रत्नाकर जी शास्त्री, साहित्यरत्न ।

१६ श्री ओम्प्रकाश जी

१७. श्री महीधर जी शास्त्री, साहित्यरत्न ।

कृषि विद्यालय

१. श्री देवकीनन्दन वैष्णव बी एस सी ए जी ,यू पी ए एस –अध्यक्ष

२ श्री देवदत्त तोमर एल ए जी –सयुक्त अध्यक्ष

३ श्री बिहारीलाल जी बी.एस सी ए जी

४ श्री सुरेशचन्द्र जी एम. ए , बी एस सी.

५ श्री नन्हेसिंह जी बी. एम. सी. ए. जी.

६. श्री जसवीरसिंह जी बी. एस सी. ए जी.

७. श्री विक्रम सिंह मैट्रिक ए. जी. डिप्लोमा

८. श्री विजयपाल मैट्रिक ए जी डिप्लोमा

* * *

१७

परिशिष्ट ४

पुरातत्व संग्रहालय (म्यूजियम)

श्री हरिदत्त जी वेदालकार इतिहास उपाध्याय के आधीन यह कार्य चल रहा है। इस मे भारतवर्ष के अत्यन्त प्राचीन सिक्के सगृहीत है। प्राचीन भारत मे प्रचलित विविध प्रदेशीय स्त्री-पुरुषो की वेश-भूषा तथा आभूषण आदि के चार्टो द्वारा समय-समय के चित्र है। जिन मे मथुरा सग्रहालय की कुषाण कालीन मूर्तियो के आधार पर प्रथम तथा द्वितीय शताब्दी ईस्वी मे प्रचलित कण्ठाभरण, ग्रैवेयक कण्ठश्री, एकावली, गुच्छक, हार आदि आभूषण प्रदर्शित किये गये है। भारत सरकार के मानव शास्त्र विभाग द्वारा कलकत्ता मे बनाए हुए भारत की प्रमुख जातियो के विभिन्न प्रकार के सिरो की प्रतिकृति मगवा कर रखी गई है। यत जौनसारी, नागा, आवोर ओगी, गुजराती, मालवीय, सन्थाल, उडिया, बगाली, कडर, मराठा, ऐन्डेमन आदि निवासियो की प्रतिकृति है।

वनस्पतियाँ—वनस्पतियो के लिये नये शो-केस बनवाए गये जिनमे अशोक कुरवक, जपा, चम्पा, यूथिका, प्रियाल, आम्र, मावी, कुटज, जाति, कम्पिल, कुन्द के पुष्प आदि कालिदास के ग्रन्थो मे पाये जाने वाले सस्कृत श्लोको के साथ दिखाये गये है।

उत्तराखंड की झांकी—इस प्रदर्शन कक्ष मे एक घूमने वाले अष्टभुज शोकेस मे बद्रीनाथ, केदारनाथ, ऋषिकेश आदि स्थानो के धार्मिक महत्वपूर्ण चित्रो की झाकी दिखलाई गई है।

इस वर्ष सग्रहालय मे ५० नई भारत की प्राचीनतम आहत मुद्राओ की तथा कुमारपाल के एक सोने के सिक्के की वृद्धि हुई। ३८ प्राचीन मुद्राओ की अनुकृतिया तैयार कराई गयी। मुद्राओ को सुरक्षित रखने के लिये गोदरेज की अलमारी मगवाई गयी। राजस्थानी शैली के ८ नये प्राचीन रगीन चित्र उपलब्ध किये गये। २१ नई पाषाण मूर्तिया सग्रहालय मे आई। ३० मृण्मयी नई मूर्तिया सग्रहालय मे उपलब्ध की गयी जिन से प्राचीन भारत की वेष भूषा, आमोद प्रमोद, केश विन्यास, आदि का परिचय प्राप्त होता है। तीन ऐसे रगीन चार्ट बनाये गये जिनमे प्राचीन सस्कृत साहित्य विशेषतया कालिदास के ग्रन्थो मे वर्णित पक्षियो के रगीन चित्र है इन से राजहस चक्रवाक आदि पक्षियो के यथार्थ रूप का ज्ञान हो जाता है। इनके हिन्दी अग्रेजी नाम भी लिख दिये गये है। इस वर्ष भी गत वर्ष की भाति प्राचीन भारत की वेष भूषा मे सम्बन्धित ८ नये चार्ट तैयार करवाये गये और चित्र उपलब्ध किये गये।

यूनेस्को द्वारा निर्धारित तिथियो मे अन्तर्राष्ट्रीय सग्रहालय सप्ताह बडी धूमधाम से मनाया गया। इस का विशेष कार्यक्रम ज्ञान विज्ञान के विभिन्न विषयो पर अधिकारी विद्वानो द्वारा चित्रो की सहायता से करवाये जाने वाले विशेष व्याख्यान थे। इन व्याख्यानो मे विद्यार्थियो तथा जनता ने बडे उत्साह से भाग लिया और इससे सग्रहालय द्वारा लोक शिक्षण और ज्ञान प्रसार का कार्य भली भाति सम्पन्न हुआ। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जन्म शताब्दी समारोह (अप्रैल १९५४) के उपलक्ष्य मे एक सप्ताह तक श्रद्धानन्द जन्म शताब्दी प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिस मे स्वामी जी द्वारा रचित पुस्तको सम्पादित समाचार पत्रो उन के हस्तलिखित पत्रो और उनकी जीवनी से सबन्ध रखने वाले चित्रो आदि का प्रदर्शन किया गया।

प्राचीन मूर्तियो को समुचित रूप से रखने के लिये ३० फुट लम्बा, १५ फुट चौडा टीन की छत का एक भवन तैयार किया गया है। सग्रहालय को

देखने के लिये ५२२०० दर्शक पधारे। इस वर्ष दर्शकों मे श्री मदनमोहन जी नागर, श्री कृष्णदत्त जी वाजपेयी और चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख के नाम विशेष उल्लेखनीय है। डॉ० राधाकृष्णन् उपराष्ट्रपति, श्री मदनमोहन नागर सग्रहालय सचालक उत्तर प्रदेश, श्री गणेश मखाराम महाजन कुलपति दिल्ली विश्वविद्यालय, श्री विश्वेश्वरप्रसाद प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियो ने इसका अवलोकन किया।

गुरुकुल सग्रहालय—गुरुकुल काँगड़ी—(हरिद्वार)

(भारत सरकार द्वारा १९५९ मे प्रकाशित "डायरेक्टरी आफ म्यूजियम्ज इन इन्डिया" मे छपे अग्रेजी विवरण का हिन्दी अनुवाद)

इतिहास —इस सग्रहालय को आरम्भ करने का श्रेय अमरहुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी को है। १९०७—८ मे इसकी स्थापना इस दृष्टि से की गयी थी कि यह विद्यार्थियो के अध्ययन मे सहायक हो सके तथा विविध विषयो के सम्बन्ध मे छात्रो मे तथा साधारण जनता मे अनुराग उत्पन्न कर सके। स्वामी जी की यात्राओ से तथा उन के भारतीय और विदेशी मित्रो की सहायता से इस सग्रहालय की वस्तुओ मे वृद्धि होने लगी। इस के आरम्भिक सग्रह मे प्रथम विश्वयुद्ध मे मद्रास के तट पर जर्मन युद्धपोत एमडन द्वारा की गयी गोलाबारी के कुछ अश थे। इसी समय श्री एफ० टी० ब्रुक्स तथा श्री सी० एफ० एन्ड्रूज ने समुद्री वस्तुओ के नमूने भेट किये तथा १९११ मे उपाध्याय श्री महेशचरण जी सिन्हा के निरीक्षण मे विद्यार्थियो ने टेलीफोन के माडल तैयार किये। १९२४ मे गगा की भीषण बाढ मे सग्रहालय की सब वस्तुऐ नष्ट हो गयी। इसके बाद आयुर्वेद महाविद्यालय मे आयुर्वेद एव चिकित्सा शास्त्र से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओ का सग्रह किया जाने लगा। तदनन्तर इसमे जीव शास्त्रीय वस्तुओ को एकत्र किया गया। १९४५ मे सग्रहालय का नव सगठन किया गया, ऐतिहासिक वस्तुओ के सग्रह की ओर ध्यान दिया

जाने लगा। तथा मार्च १९५० मे गुरुकुल की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर वेद मन्दिर मे वर्तमान संग्रहालय का उद्घाटन किया गया। श्री प० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति की प्रबल प्रेरणा से इसके विकास मे बडा सहयोग मिला डॉ० शिवनाथराय जी के अनथक उद्योग और भगीरथ परिश्रम से तथा इसके अध्यक्ष श्री हरिदत्त वेदालङ्कार के प्रयत्न से इसकी श्री वृद्धि हुई।

इसमे पुरातत्वीय वैज्ञानिक और उद्योग विभाग है।

पुरातत्वविभाग—मे इस प्रदेश मे सग्रहालय द्वारा उपलब्ध की गयी मूर्तिया है, उनमे चतुर्मुख ब्रह्मा, समुद्रमन्थन का फलक, बुद्ध की अभिलेखाकित प्रतिमा उल्लेखनीय है, ये मूर्तिया गुप्तकाल से मध्यकाल तक की है। मोहेन्जोदडो की खुदाई से निकली वस्तुओ का एक छोटा सा सग्रह है। विभिन्न युगो की मृणमूर्तियो को भी सगृहीत किया गया है। यहा आहत, (Punchmarked) हिन्दयूनानी (Indogreek) गणीयो, (Tribal) कुशाण, गुप्त, मध्यकालीन और मुगल मुद्राओ का तथा देशी राज्यो के तथा विदेशो के सिक्को और नोटो का सग्रह है। कागडा शैली के चित्र तथा १९वी शताब्दी के आरम्भ मे बने कनखल के भित्ति चित्रो की प्रति चित्रो की प्रतिकृतिया भी सगृहीत है।

अशोक के कालसी अभिलेख, समुद्रगुप्त के प्रयाग स्तम्भ लेख आदि महत्वपूर्ण शिलालेखो की प्रतिकृतिया भी यहा प्रदर्शित की गई है। १०० से अधिक चार्टों की सहायता से तीसरी शताब्दी ई० पू० से अब तक भारतीय लिपियो के विकास को भली भाति दिखाया गया है।

यहा इस प्रदेश मे मिले कुछ प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ भी है। इनमे ताडपत्र पर लिखे ग्रन्थ और काश्मीरी कागज पर लिखा एक सचित्र भागवतपुराण भी है।

इसके एक विभाग मे पर्वतीय प्रदेशो—विशेषकर गढवाल और जौनसार बाबर के प्रदेशो के लोक जीवन को प्रदर्शित करने वाली वस्तुओ का सग्रह है।

वैज्ञानिक विभाग—मे जीवशास्त्र, भूगर्भशास्त्र, कृषिशास्त्र, शरीर विकृति विज्ञान, शरीर रचनाशास्त्र, शरीर क्रिया शास्त्र तथा द्रव्यगुण शास्त्र से सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओ का सग्रह है। इसके सर्पशास्त्रीय विभाग मे १८ फीठ लम्बे अजगर से ७ इन्च के लम्बे छोटे साप तक प्राय सभी प्रकार के भारतीय सर्पो को दिखाया गया है।

उद्योग-धन्धों के विभाग मे—स्थानीय उद्योग धन्धो की वस्तुओ के साथ काश्मीरी कला कारीगरी के कुछ नमूने है। इस शिक्षा विभाग मे उपयोगी चार्टो, चित्रो तथा विशेष रूप से तैयार किये गये मान चित्रो की सहायता मे राजनैतिक अधिकारो कर्त्तव्यो आर्थिक और सामाजिक तथ्यो के सम्बन्ध मे बहुमूल्य सूचनाये दी गई है।

शिक्षा सबन्धी कार्य—सग्रहालय गुरुकुल विश्वविद्यालय के पुस्तकालय का उपयोग करता है और सग्रहालय शास्त्र तथा पुरातत्व विज्ञान पर इसके पास थोडी सी अपनी पुस्तके भी है। सग्रहालयाध्यक्ष निकटवर्ती विद्यालयो तथा महाविद्यालयो के छात्रो को सग्रहालय मे आमन्त्रित करता है। कभी कभी इस मे विशेष प्रदर्शनियो की व्यवस्था की जाती है। दूसरे सग्रहालयो के प्रकाशनो के साथ यह सग्रहालय अपने प्रकाशनो का विनमय करता है। इसमे प्रदर्शित वस्तुओ का स्वरूप बताने वाले लेबल मुख्य रूप से हिन्दी मे है। पारिभाषिक शब्दावली वाले लेबल अग्रेजी मे हैं। गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय के तथा हरिद्वार की अन्य शिक्षण सस्थाओ के विद्यार्थी सग्रहालय मे पूरी दिलचस्पी लेते है। गर्मियो तथा दूर्गापूजा की छुट्टियो मे अन्य विश्वविद्यालयो तथा महाविद्यालयो के विद्यार्थी इस सग्रहालय को देखने के लिये अनेक बडी पार्टिया बनाकर आते रहते है।

प्रकाशन—(क) वार्षिक विवरण (ख) डॉ० वासुदेशरण अग्रवाल द्वारा लिखित समुन्द्रमन्थन का एक दृश्य (ग) डॉ० यज्ञदत्त शर्मा द्वारा लिखित-आरम्भिक भारतीय पुरातत्व की समस्याये ।

खुलने का समय—सग्रहालय सप्ताह के सभी दिनो मे खुला रहता है । सर्दियो मे खुलने का समय ८ बजे प्रात से १२ बजे तक तथा मध्यान्ह मे १ बजे से ५ बजे तक है । गर्मियो मे यह समय सबेरे ७ बजे से १२ बजे तक तथा शाम को ४ बजे मे ७ बजे तक है ।

इसमे कोई प्रवेश शुल्क नही है ।

प्रबन्ध कारिणी सभा—सग्रहालय का प्रशासन गुरुकुल कागडी विश्व विद्यालय एक सग्रहालय समिति द्वारा करता है ।

कार्यकर्त्ता मण्डल—अध्यक्ष श्री हरिदत्त वेदालकार एम. ए. (पुरातत्व विभाग), श्री चम्पत स्वरूप गुप्त एम. एस. सी. (प्राणी शास्त्रीय विभाग), सग्रहालय सहायक, लेखक और चपरासी ।

इसका वार्षिक बजट १६०००) का है ।

अन्य टिप्पणियाँ—सँग्रहालय एक ऐसे शहर मे अवस्थित है, जो भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ है । यहा पावन पर्वों के तथा कुम्भ मेलो के अवसरो पर हजारो व्यक्ति आते है । सग्रहालय मे आने वाले दर्शको की दैनिक सख्या की औसत २७६ तथा वर्ष मे १ लाख के लगभग है । दर्शक शीत ऋतु की अपेक्षा ग्रीष्म ऋतु मे अधिक सख्या में आते है । यहा कुम्भ मेले के अवसर पर तथा अन्य पर्वों पर सब से अधिक यात्री आते है । सग्रहालय का भवन बहुत अच्छा बना हुआ है, प्रकाश तथा वायु की उत्तम व्यवस्था होने से यह वस्तुओ के प्रदर्शन के लिये बडा उपयोगी है किन्तु वस्तुओ के सग्रह मे वृद्धि होने से प्रदर्शन के स्थान की बहुत कमी है । वस्तुओ को सुरक्षित रूप से रखने के लिये भी जगह नही है । सग्रहालय की वस्तुओ के

फोटोग्राफ दाम देकर प्राप्त किये जा सकते है। सग्रह के प्रधान स्रोत ये है—आसपास के प्रदेशो का निरीक्षण, खुदाई, विनिमय, दान तथा अत्यल्प मात्रा मे वस्तुओ का क्रय करना। यह सग्रहालय अन्य सग्रहालयो के साथ प्रकाशनो का विनिमय करने के लिये सहर्ष उद्यत है। यह भारत के सग्रहालय सम्मेलन का सस्था के रूप मे सदस्य है। अपने सीमित साधनो के साथ सग्रहालय ने पाण्डुवाला तथा झीवरहेडी का पुरातत्व की दृष्टि से सूक्ष्म निरीक्षण किया है, किन्तु इस विषय मे अभी बहुत कार्य किया जाना शेष है। सग्रहालय मे भारत की प्रमुख नस्लो के जाति शास्त्रीय नमूने है। इस ने कनखल के भित्तिचित्रों को सुरक्षित रखने की दृष्टि से इसके सादे फोटो लिये है। और अब इसका विचार उनके रगीन चित्र लेने का भी है। वित्त की व्यवस्था होने पर हिमालय और उत्तराखण्ड के पशु पक्षियो और वनस्पतियो के सग्रह करने का विचार है। प्राकृतिक विज्ञान विभाग के साथ एक छोटा सा वानस्पतिक उद्यान भी है।

वेद महाविद्यालय

परिशिष्ट ५

गुरुकुल की सम्पत्ति

२०१६ के आय व्यय के विवरण के अनुसार

१	भूमि तथा शाला विनियोग	८९२०१३	४
२	विविध व्यवसाय	७०८४९०	७९२४२८
३	ऋण अगाऊ	७४६८५	८६१२८
४	महानिधि से व्यय		३८८४०४
५	चलित खाते	१९९८३	१७८२१
६	जमानतें	३४२९३	३४२९३
७	सभा धरोहर	१८०८७८	१७४२९६
८	हस्तगत माल	१७३९२९	१३८१६४
	योग	२०८४२७१	१६३१५३४
९	क. दान तथा महानिधि से भूमि विनियोग		३८४७८७
	ख दान तथा महानिधि से भवन विनियोग	११००३६६	१७६३७५३
	ग. पुस्तकालय की पुस्तकें व उपकरण	३७०९९६	३६४३५०
	योग	१४७१३६२	२५१२८९०
	सर्वयोग	३५५५६३३	४१४४४२४

: १६ :

परिशिष्ट ६

कृषि विद्यालय का प्रगति विवरण

(अध्यक्ष कृषि विद्यालय द्वारा)

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद सबसे बडी समस्या देश मे गरीबी, अज्ञानता तथा रोगो को दूर करने की उपस्थित हो गई है। हमारी सरकार का तथा प्रत्येक विचारशील व्यक्ति का ध्यान इस ओर है कि किस प्रकार हमारा जीवन स्तर ऊचा हो और सारे देश मे खुशहाली फैले। राष्ट्रीय सरकार ने उपरोक्त लक्ष्य प्राप्त करने के लिये पचवर्षीय योजनाओ का आयोजन किया। इस वर्ष हम द्वितीय पचवर्षीय योजना के चौथे वर्ष मे चल रहे है। इन योजनाओ के अनुसार हमारी आमदनी प्रतिवर्ष ५-६ प्रतिशत बढनी चाहिए यो तो देश की आमदनी बढाने के लिये उद्योग-धन्धे, व्यापार, आयात, निर्यात, आदि अन्य बहुत से उपाय है, परन्तु भारत के लिये एक कृषि प्रधान देश होने के कारण यह बहुत आवश्यक है कि कृषि मे विशेष उन्नति की जाए, जिससे इस व्यवसाय मे लगी हुई ८० प्रतिशत से अधिक जनता लाभ प्राप्त करे। इसके लिये यह आवश्यक है कि वैज्ञानिक कृषि की शिक्षा का अधिक से अधिक प्रसार हो।

इसको ध्यान मे रखते हुए जुलाई १६५५ मे गुरुकुल कागडी मे कृषि विद्यालय की स्थापना की गई। यो तो सन् १६०२ मे स्वर्गीय स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जब हरिद्वार से पाच मील दूर गगा के तट पर कागड़ी ग्राम मे गुरुकुल कागडी शिक्षा केन्द्र की स्थापना की थी, उस समय ही उनके ध्यान

मे यह बात आ गई थी, और गुरुकुल की शिक्षा मे और विषयो के समान कृषि विषय भी था। किन्तु यह लक्ष्य जुलाई १९५५ से पहले पूर्ण न हो सका।

गुरुकुल मे कृषि की उच्च से उच्च शिक्षा देने का लक्ष्य सन्मुख रखा गया है, परन्तु अभी कृषि एव प्रसार डिप्लोमा और प्रसार की कक्षाए खोलने से ही कार्य प्रारम्भ किया गया है। इसके लिये गुरुकुल के पास इस समय पर्याप्त साधन उपलब्ध है। लगभग १५० एकड कृषि भूमि तथा २० एकड़ बाग व नर्सरी है तथा आधुनिक ढग की सुन्दर गोशाला भी है। इसके अतिरिक्त लगभग ६० एकड भूमि पुराने गुरुकुल (पुण्य भूमि) मे भी है। कृषि, अभियन्त्रिकी, पशुपालन, पशु चिकित्सा, ग्रामीण अर्थशास्त्र, सहकारिता, ग्रामीण उद्योग धन्धे, प्रारम्भिक विज्ञान, पचायत, प्रसार, ग्राम स्वच्छता तथा जनस्वास्थ्य आदि विषयो की शिक्षा डिप्लोमा कोर्स के अन्तर्गत दी जाती है। प्रत्येक विद्यार्थी को फार्म पर १/२० एकड भूमि कृषि की क्रियात्मक शिक्षा के लिये दी जाती है। उपरोक्त सभी विषयो की क्रियात्मक शिक्षा के लिये वर्कशाप, पशुशाला, उद्यान, नर्सरी आदि का उचित प्रबन्ध है। विद्यालय का अपना भवन है, तथा प्रत्येक विभाग के लिये अलग अलग स्थान नियत है। सग्रहालय, पुस्तकालय तथा वाचनालय का पूरा प्रबन्ध है। इसके अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय के विस्तृत साधन भी सदैव विद्यार्थियो की उन्नति के लिये उपलब्ध हैं।

राज्यसरकार के मन्त्रीगण तथा अधिकारी कृषि विद्यालय के खुल जाने के पश्चात जब यहा समय ससय पर पधारे तो वे यहा के विस्तृत फार्म, उद्यान गोशाला आदि देख कर बहुत प्रभावित हुए। उन्होने यहा के सुन्दर, शान्त तथा प्रेरणापूर्ण वातावरण को देश के चतुर्मुखी-विकास के लिये नवयुवको को ट्रेनिङ्ग देने हेतु अत्यन्त उपयुक्त पाया। इस प्रकार जनवरी १९५६ मे ग्राम सेवक शिक्षा केन्द्र कृषि विद्यालय के साथ साथ राज्यसरकार की ओर से प्रारम्भ हुआ है।

इस समय यहा एक ब्लौक भी खुल गया है, जिसके अन्तर्गत लगभग एक सौ ग्राम हैं। प्रशिक्षार्थियो को प्रशिक्षण काल मे तथा उसकी समाप्ति पर ग्रामसेवा सम्बन्धित व्यवहारिक शिक्षा का अवसर प्राप्त होता है।

गुरुकुल तथा राज्य के घनिष्ठ सहयोग एव आत्मीय मेल से एक आह्लादक वातावरण का जन्म हुआ है। और हम लोग क्रमश रचनात्मक कार्य, नव निर्माण एव लाभप्रद प्रशिक्षण की ओर अग्रसर हो रहे है।

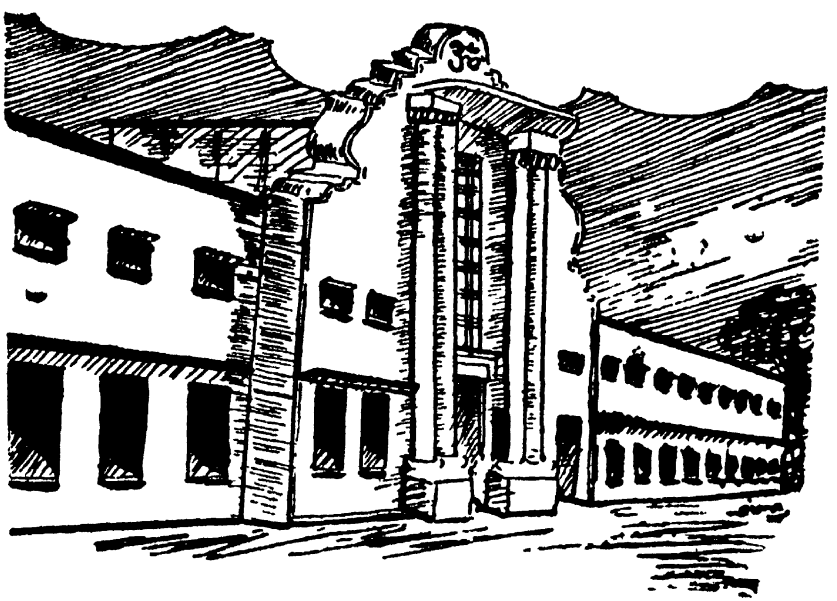

राजेन्द्र छात्रावास

* * *

: २० :

गुरुकुल के सम्बन्ध में लोकमत

श्री महात्मा गान्धी का आशीर्वाद

१९२७ मे रजत जयन्ती के अवसर पर आशीर्वाद देते हुये महात्मा गान्धी ने निम्न शब्द कहे—

"आज तो मेरे मन मे ऐसा प्रतीत होता है कि साधु बास्वानी के जैसे मैं भी प्रणाम करके बैठ जाऊ । पर यो तो हर किसी की नकल नही कर सकता । अनुकरण भी स्वाभाविक होना चाहिये । इससे मुझे जो कहना है, वह कह ही दू गा ।

"स्वामी जी का देहान्त तो तब होगा, जब हम उनकी सच्ची देह को मिटाने की कोशिश करेंगे, अगर्चे कि सच्ची बात तो यह है कि हमारी कोशिश से भी उनकी देह का नाश होने को नही है—जब तक यह गुरुकुल कायम है जबतक एक भी स्नातक गुरुकुल की सेवा करता है, तब तक स्वामी जी जीते है । स्वामी जी का शरीर किसी दिन गिरने को था ही । पर स्वामी जी का सबसे बडा काम गुरुकुल है, उन्होने अपनी सारी शक्ति इसमे लगा दी थी, इसे पैदा करने में उन्होने अधिक से अधिक तपश्चर्या की थी । तुमने सत्य की प्रतिज्ञा ली है । अगर तुम अपने वचन का पालन करोगे तो किसी की हिम्मत नही कि वह गुरुकुल को मिटा देवे" ।

"पर गुरुकुल को चिरस्थाई रखने के लिये उस वीरता की, ब्रह्मचर्य और क्षमा की जरूरत है, जो हमने उनके जीवन मे देखी । वीरता का लक्षण क्षमा और ब्रह्मचर्य, और वीर्य का सयम है । वीरता और वीर्य की रक्षा से तुम

देश और धर्म की पूरी पूरी रक्षा कर सकोगे। मै जानता हू कि यह काम मुश्किल है। तुम्हारे यहा के बहुत से विद्यार्थियो के पत्र मेरे पास पडे हुए हैं कोई मेरी स्तुति करते है तो कोई गाली देते है। स्तुति तो नाकाम चीज है। उसका असर मेरे ऊपर नही होता। परन्तु जब विद्यार्थी चिढ कर गाली देते है तो मुझे चिन्ता होती है क्योकि क्रोध से वीर्य का नाश होता है। स्वामी जी के सामने मैंने ब्रह्मचर्य की अपनी व्याख्या रक्खी थी और वे मेरे साथ सम्मत थे। किसी स्त्री का मलिन स्पर्श न करने मे ही ब्रह्मचर्य नही होता। हा ब्रह्मचर्य वहा से शुरू जरूर होता है। पर क्षमा की पराकाष्ठा ब्रह्मचर्य का लक्षण है। पिछले साल स्वामी जी जब टकारा मे पीछे लौटते समय मुझसे मिलने गये थे तो उन्होने मुझे कहा कि 'हिन्दू धर्म की रक्षा नीति मे ही सम्भव है।' अगर तुम वैदिक आचार और विचार की रक्षा करना चाहते हो तो तुम यह बात याद रक्खो कि तुम्हे पग २ पर रुपये मिल जायगे, मगर ब्रह्मचर्य का नीति का पाया यहा पर न होगा तो तुम्हारा गुरुकुल मिट्टी मे मिल जायगा। इस भूमि के तो आत्मा नही है। इसकी आत्मा तुम्ही हो। अगर तुम आत्मबल खो दोगे और 'उदरनिमित्त बहुकृतवेश, जैसे बन जाओगे तो तुम्हारी सारी शिक्षा बेकार हो जायगी।

"मै आज तुम्हारे आगे चर्खा और खादी की बात करने नही आया हू। तुम्हारा पहला काम ब्रह्मचर्य और वीरता का-- क्षमा का है। उसे भूल जाओगे तो स्वामी जी का काम कायम नही रहेगा। अब्दुलरशीद की गोली से स्वामी जी का क्या हुआ! वे तो उस गोली से ही अमर हुए।

"स्वामी जी का दूसरा काम अछूतोद्धार था। जिन शब्दो मे मालवीय जी ने खादी की वकालत की, मै नही कर सकता। पर इतना जरूर कहूगा कि अगर हम हमेशा गरीबो और अछूतो की फिक्र रक्खेगे तो खादी से अलग नही रह सकते। अगर किसी अमली काम मे वीर्य की रक्षा का उपयोग करना हो तो खादी से बढकर दूसरा कोई काम नही है। खादी के कार्य के साथ

मैं स्वामी जी का नाम नही जोडना चाहता, क्योकि यह उनका मुख्य काम नही था। पर तुम स्नातक विदेशी कपडे से अपना शरीर सजाने का विचार न करोगे पर अपने गरीबो और अछूतो की रक्षा के लिये केवल खादी ही धारण करोगे।

"ईश्वर तुम सबके ब्रह्मचर्य का, सत्य और तुम्हारी प्रतिज्ञाओ की रक्षा करे, और स्वामी जी का हर एक काम परमात्मा चालू रक्खे।"

गाँधी जी की अपील

दीक्षान्त-सस्कार के दिन सायकाल अपील हुई। आचार्य रामदेव जी के अपील के बाद महात्मा गाँधी भाषण देने के लिए उठे। उन्होने कहा —

"आर्यसमाज की मै टीका करता हू, पर स्तुति भी करता हू। और जो हार्दिक स्तुति करता है, उसे टीका करने का अधिकार होता है। मै मानता हू कि ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के बाद शिक्षितो का जनता के साथ आध्यात्मिक सबन्ध नही रहा और उस सबन्ध का पुनरुद्धार करने वाला आर्यसमाज है।

"आज जो दृश्य यहा दिखलाई पडता है, वैसे दृश्य भाग्य से ही कही दूसरी जगह देखने मे आते है। मै आपका कुछ अनुकरण करता हू पर मुझे बालटियो मे पैसे नही मिलते। मै तो रुमालो मे पैसा इक्कठा करता हू। मुझे तो पैसा मिलता है, और अपको रुपये मिलते है। सभी के सभी पजाबी कुछ धनिक नही है। आप मे भी गरीब लोग तो हैं ही, पर आपका दिल उदार है। मैं आर्यसमाज की टीका करता हू, आपको झगडालू कहता हू। पर आज आपका काम करने आया हू। उदार पजाबियो को कहता हू कि जो दो पैसा दे चुके है, वे फिर से देवे, क्योकि मैं यह स्वीकार करना चाहता हू कि गुरुकुल की मार्फत हिन्दुस्तान की सेवा हो रही है। मैं ऐसा नही मानता कि आपकी टीका करते हुए मैं आपका त्याग न समझता होऊगा। आपमे

त्याग तो भरा हुआ है ही, पर इस त्याग पर सन्तुष्ट न हो जाओ। जो त्याग आगे दिखलाना है, उसके मुकाबले मे, यह त्याग कुछ भी नही है पर आपके त्याग की स्तुति करता हू, क्योकि आपके बराबर दूसरे मे त्याग शक्ति नही है। काम तो वही है जो त्यागवृत्ति से किया जाय। बाकी तो स्वच्छन्द है।

आपकी स्तुति करता हू। तो इस से सतुष्ट न हो जाना। आपने दिया तो इस से यह न समझना कि पूरा दे दिया। दान का अर्थ ही है कि अधिक से अधिक दिया जाय। जिस सस्था के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी के सर्वस्व का त्याग था, उसके लिये जितना दे सको, दो। और कुछ परिणाम न भी निकले तो भी गुरुकुल ने सस्कृत के अभ्यास को स्थान दिया है, यह क्या कुछ छोटी बात है? जब किसी पजाबी को मै देवनागरी पढ़ते देखता हू तो अटकल करता हू कि वह गुरुकुल का पढा होगा। दोष किस सस्था मे नही होते? पर दोषो के होते हुए भी गुरुकुल सस्था की सेवा बहुत बडी है। इस गुरुकुल की आप सेवा करो और इसे जीवन्त रखो। स्वामी श्रद्धानन्द का कहना है कि इस सस्था के लिये उन्होने ब्रह्मचर्य और तपश्चर्या के दो दान दिये थे। आप कहो कि इस सस्था को जीती रखने के लिए हमसे जितना हो सकेगा हम दान करेगे।"

Mr. Ramsay Mscdonald

Once the Premier of England, sojourned in the Gurukula for some time and expressed the following opinion about the institution—

'Gurukula is the most monentous thing in Indian Education that has been done since Macualay sat down to put his opinions into minute in 1835. Every one here in India is unhappy regarding results of that minute but no one, so far as I have yet seen, save the founders of the Gurukula has translated his unhappiness into a new experiment'

Mr. Myran H. Phelps

The well-know Amrican educationist, contributed a series of articales to the Anglo-Indian paper, the 'Pioneer of Allahabad' on the basis of his impressions regarding the Gurukula, formed during his three months stay in it. The following is an exteract from one of his articles—

'I can not conceive of any institution which could make a stronger appeal to Hindu sentiment regardless of all sectarian feeling, it brings back and makes living best period of Indian life, It reverences and realises the loftiest ideals of Hindu thought It promises, indeed gives a trustworthy assurance of restoring to the people of India their ancient virtues No man can live for a time in the atmosphere of this institution without feeling full confidence that the men who receive its training will be of genuine worth and integrity, whose work in the world is certain to advance the welfare of their countrymen and of mankind. My observations long ago convinced me that in training of that sort which this institution is per-eminently qualified to give, lies for the present the only hope, so far as the human pre-science can determine, for the development in Indian of that manly and elevated character which alone can achieve a future for the country, commensurate with its glorious past

डॉ० राजेन्द्र प्रसाद

राष्ट्रपति भारतीय गणराज्य
राष्ट्रपति भवन
नई देहली

हमारी आज की आवश्यकताओ की पूर्ति के लिये सर्वोत्तम शिक्षा प्रणाली का क्या रूप हो, इस सम्बन्ध मे अभी तक निश्चय पूर्वक कुछ कहना सम्भव नही है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली भारतीय शिक्षापद्धति पर आधारित है, किन्तु आधुनिक शिक्षा विज्ञान से भी यह प्रणाली प्रभावित हुई है। सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र मे जो भी परीक्षण हमारे देश मे अभी तक हुए है उन मे गुरुकुल शिक्षा सस्थाओ का महत्वपूर्ण स्थान है।

डॉ० राधाकृष्णन्

उपराष्ट्रपति

स्वतन्त्रता से पूर्व सन् १९४२ मे मै यहा आया था। उन दिनो यह सस्था उन कुछ एक सस्थाओ मे से एक थी जिस ने प्रकाश को उस समय भी स्थिर रखा जबकि चारो ओर अधकार था। आज वह प्रकाश पूर्व से भी अधिक प्रकाशित हो रहा है। कई एक सिद्धान्तो का जिन को शिक्षण सस्थाऐ अब अगीकार कर रही है, सर्व प्रथम निर्माण इसी गुरुकुल मे हुआ था। आप एक ऐसा विश्वविद्यालय बनाना चाहते थे जहा पर छात्रनिवास करते हो। और भीड भाड से भी प्रथक् रहे। आप इस देश की प्राचीन सस्कृति से प्रोत्साहन प्राप्त करने मे विश्वास रखते है और आपने शिक्षा के माध्यम के रूप मे मातृभाषा को स्वीकार किया। यह वे सिद्धात है जिन को आज के शिक्षाविज्ञ व्यवहार मे लाना चाहते है।

पं० जवाहरलाल नेहरू
प्रधान मत्री भारतीय गणराज्य
नई देहली, २३ मई १९५९

गुरुकुल कागडी की हीरक जयन्ती के लिये मै अपनी शुभ कामनाए भेजता हू कुछ मास पूर्व मै इस सस्था मे गया था । और वहा की कार्य प्रणाली के विषय मे कुछ जानकारी प्राप्त की थी, मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह सस्था अच्छे ढग से कार्य कर रही है । मैने उस अवसर पर भाषण देते हुए इस बात पर बल दिया था कि देश के सास्कृतिक आदर्श के साथ साथ विज्ञान की प्रगति पर भी समान रूप से बल देने की आवश्यकता है जो कि आज के युग मे अत्यधिक महत्वपूर्ण है । एकमात्र इन दोनो के समन्वय से ही हम लक्ष्य का निर्माण कर सकते है ।

गोविन्द वल्लभ पंत
गृह मत्री, भारत सरकार
नई देहली

मुझे यह जानकर खुशी है कि इस साल गुरुकुल कागडी की हीरक जयन्ती मनाई जायेगी । इन ६० वर्षों मे इसने शिक्षा के क्षेत्र मे उत्साह वर्धक काम किया है । भविष्य मे इसकी उन्नति और द्रुतगति से होगी यह मेरा विश्वास है । मेरी शुभकामना आप लोगो के साथ है ।

श्रीप्रकाश
बम्बई गवर्नरस कैम्प
महाबालेश्वर

बडे ही सन्तोष और प्रसन्नता का विषय है कि हर प्रकार की विषम स्थितियो का साहस से सामना करते हुए यह उपयोगी सस्था ६० वर्ष तक लगातार देश का सेवा करती रही और राष्ट्रीय शिक्षा के नये प्रयोगो मे सफल होती रही। स्वामी श्रद्धानन्द जी की यह अमर कीर्ति है और उसके सचालको, कार्यकर्त्ताओ, अध्यापको, स्नातको और विद्यार्थियो को मैं हृदय से बधाई देता हू कि उनका हम से निकट सम्पर्क रहा है। और उनके आत्मत्याग की मै प्रशसा करता हू। कि वे प्रतिकूल स्थितियो के होते हुए भी अपने आत्मनिर्धारित पथ से कभी भी विचलित नही हुए और अपने आदर्शों का पालन सदा दृढता से करते रहे।

मुझे १९०९ अर्थात ५० वर्ष पहले का वह दिन स्मरण आ रहा है। जब अपने प्रिय मित्र श्री शिवप्रसाद गुप्त जी के साथ हरिद्वार से गगा को पार कर मै गुरुकुल के आदि स्थान पर गया था। स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रथम दर्शन मैने वही किये थे। उस समय वे गुरुकुल की स्थापना मे लगे हुये थे। पीछे प्राकृतिक असुविधाओ के कारण गुरुकुल को वहा से हटाकर उसके नये स्थान पर लाया गया जहा पर भी मुझे जाने का कई बार सुअवसर मिला, स्वामी श्रद्धानन्द जी के भक्त की हैसियत से और भारत वासी होने के नाते मैं भी आज प्रसन्न हो रहा हू कि इस सस्था की इतनी वृद्धि और उन्नति हुई, इसने ज्ञान के विवध शाखाओ के अध्ययन अध्यापन के लिये कितने ही विभाग खोले, पुराने धर्मशास्त्रो के मनन के साथ साथ नये विज्ञान की तरफ भी ध्यान दिया। चिकित्सा के प्रकारो का अनुसधान किया और पूर्ण रूप से स्वतन्त्र रहकर शिक्षा की नई प्रथाओ का सफल

प्रयोग किया। गुरुकुल हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति है इसको सुदृढ बनाना और समुचित रूप से इसका पोषण करना हमारा कर्त्तव्य है आशा है हम ऐसा ही करते रहे गे।

जाकिर हुसेन
बिहार गवर्नरस कैम्प, पटना
ता० २ फरवरी १९६०

प्रिय श्री इन्द्र जी,

मुझे आपका पत्र दिनाक २५ जनवरी, १९६० का मिला। इस के लिये मै आपको धन्यवाद देता हू। यह जानकर बडी खुशी हुई कि आप गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय की हीरक जयन्ती महोत्सव के अवसर पर एक सदेश पुस्तिका प्रकाशित करने जा रहे है। इस सस्था ने पिछले ६० वर्षों से बडा ही सराहनीय काम किया है और मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य मे भी आपके देख रेख मे इस सस्था की प्रतिष्ठा बढेगी तथा उत्तरोत्तर इस के काम मे वृद्धि होगी। राष्ट्रीय शिक्षा के सब काम करने वालो पर गुरुकुल कागडी का बडा अहसान है। जब लोग आगे बढने मे झिझकते थे उस समय इसने रास्ता दिखाया।

मैं अपनी शुभ कामनाये इस के लिये प्रस्तुत करता हू।

श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति,
उपकुलपति,
गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय,
हरिद्वार

श्री अनन्त शयनम अय्यगर
स्पीकर लोकसभा

यह अत्यन्त सतोषजनक है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय शिक्षा के वैदिक आदर्शों मे आस्था रखता है और मानवता की निस्वार्थ सेवा को प्रोत्साहित करता है ।

जब मै इस स्थान के चारो ओर देखता हू तब मै प्रकृति के उस सुकोमल और श्रेष्ठ प्रभाव से जो कि इस देश के विचारो और सस्कृति पर पडता है प्रभावित होता हू । गुरुकुल पद्धति इसलिये प्रशसा के योग्य है । कि वह यह पद्धति है जो कि बालको के चरित्र निर्माण पर सबसे अधिक बल देती है । वह शहरो के कालेजो तथा शिक्षण सस्थाओ से भिन्न है जो समाज के दूषित वातावरण मे से फसे हुए है । छात्रो के मस्तिष्क को उन्नत करने के लिये गुरुकुल के पास पर्याप्त सामग्री है ।

श्रीमती लक्ष्मी मैनन
डिप्टी मिनिस्टर
विदेश मत्रालय

मनुष्य को अपनी प्राकृतिक आध्यात्मिक पृष्ठभूमि मे सर्वा ग रुपेण उन्नत करने के लिये एक भिन्न युग और भिन्न वातावरण मे शिक्षा पद्धति के ढ ग को पुन अपनाने के लिये गुरुकुल मे यत्न किया जाता है । इस मशीन के युग मे अपने भौतिक ध्येय और विभिन्न स्वत्वो के होते हुये एक आदर्श एकान्त और प्राकृतिक वातावरण मे गुरु शिष्य के निकट सम्बन्ध बाकी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का एक बडे पैमाने पर विस्तार होना सम्भव नही है जब तक कि उसकी भावना को पुनर्जीवित करने के लिये विशेष प्रयत्न न किया जावे जो कि इस गुरुकुल द्वारा हो रहा है ।

यह सस्था गत ६० वर्ष से स्थित है और गुरुकुल के आदर्शों को मूर्तिमान करती रही है, जो कि इस बात का प्रमाण है कि इसने शिक्षा के क्षेत्र मे उत्तम कार्य किया है ।

केशवदेव मालवीय
खनिज व तेल मत्री
भारत सरकार, नई दिल्ली

मुझे यह जान कर अति प्रसन्नता हुई कि गुरुकुल कागडी अपना हीरक जयन्ती महोत्सव अप्रेल १९६० मे मनाने जा रहा है। इस शुभ अवसर पर मै अपनी शुभ कामनाये भेजता हू।

यह बात किसी से छिपी नही है कि भारत मे आश्रम प्रणाली के आधार पर शिक्षा प्रदान करने का जो कार्य गुरुकुल कागडी ने किया है वह अद्वितीय है, राष्ट्रभाषा के प्रचार मे भी यह सस्था सदैव ही आगे रही है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि भविष्य मे भी शिक्षा जगत मे यह विश्वविद्यालय इसी प्रकार अपनी सेवाये करता रहेगा।

श्री डां० सम्पूर्णानन्द
मुख्य मत्री, उत्तर प्रदेश

गुरुकुल उन महान और श्रेष्ठ सस्थाओ मे से है जिन का जन्म और पालन आर्य समाज द्वारा इस देश मे हुआ है। यद्यपि कई सस्थाऐ इस देश मे इन्ही लाईनो पर काम कर रही है परन्तु मैं समझता हू कि यह गुरुकुल उन सब मे अधिक पुराना है, और हम सब ही इस प्रयोग को बड़े चाव के साथ देखते रहते है।

गुरुकुल के अन्दर आप पुराने और नये प्रयोगो का मिश्रण कर रहे है। अं इस युग की वर्तमान परिस्थिति मे प्राचीन ढग से इस गुरुकुल का सचालन कर रहे है। आप यहा केवल हिन्दी मे ही ऊची शिक्षा देने का यत्न नही करते परन्तु आप इस बात का भी यत्न करते है कि आप के यहा छात्र उस प्रकार से निवास करें जिस प्रकार पुराने गुरुकुलो मे निबास किया करते थे।

श्री अमरनाथ झा

गुरुकुल भारतवर्ष के पुराने विश्वविद्यालयो के स्तर पर आधारित है। गुरुकुल ने अपने जन्म काल से ही शिक्षा का माध्यम हिन्दी रक्खा है।

डॉ० चिन्तामणि द्वारकानाथ देशमुख

प्राचीन गुरुकुल प्रणाली को पुनर्जीवित करने का स्वर्ग स्वप्न महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देखा था। स्वतन्त्रता के आगमन के साथ साथ गुरुकुल ने भारत के शिक्षा जगत मे वह सम्मान का स्थान प्राप्त कर लिया है।

श्री के० एम० मुन्शी

गुरुकुल वह वस्तु देता है जो अन्य विश्वविद्यालयो से शायद ही प्राप्त हो सके, अर्थात् भारत और उसकी सस्कृति मे विश्वास।

सत्यनारायण सिह
मिनिस्टर पार्लियामेण्टरी अफेयर्स

मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि अप्रैल १९६० मे गुरुकुल कागडी का हीरक जयन्ती महोत्सव मनाया जायगा। इस सस्था ने शिक्षा जगत मे अभी तक जो किया है, वह प्रत्येक हिन्दु सस्कृति प्रेमी के लिये गौरव का विषय है आशा है कि भविष्य मे भी वह सस्था आप लोगो के प्रयत्न से उन्नति करती जायगी। महोत्सव की सफलता के लिये मैं अपनी शुभ कामनाये भेजता हू।

सतीशचन्द्र

डिप्टी मिनिस्टर आफ कामर्स एण्ड इंडस्ट्रीज

नई देहली

गुरुकुल ने हमारे राष्ट्रीय जीवन मे उच्च आदर्शो का समावेश किया है। त्याग और सयम की जिस भावना को गुरुकुल ने पुन जागृत किया, वह हमारे नवयुवको के लिये विशेष महत्व रखती है। मेरा विश्वास है कि अतीत की भाति आप का यह गुरुकुल भविष्य मे भी नवयुवको को राष्ट्र निर्माण के कठिन पथ पर बढते रहने की प्रेरणा प्रदान करता रहेगा।

क्षितीशचन्द्र चौधरी

उपाचार्य (वाइस चान्सलर)

विश्वभारती

गुरुकुल कॉगडी ने अपने जीवन के पिछले ६० वर्षों मे शिक्षा और सस्कृति के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कार्य किया है और उसने गौरव पूर्ण परम्पराए तथा इतिहास बना लिया है।

डॉ० बि ही. कापडिया एम.ए ,पी एच डी
रीडर इन सस्कृत
सरदार बल्लभ भाई विद्यापीठ
बल्लभ विद्यानगर, गुजरात

गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने गत ६० वर्षो मे शिक्षा वितरणादि के उज्वल शुभ कार्य मे अपना नाम रोशन किया है इस मे सब की श्रद्धा है । प्राचीन भारतीय सस्कृति को सदैव सन्मख रखकर गुरुकुल कागडी विश्व-विद्यालय ने गीता के सिद्धान्त कर्मयोग को कृतकृत्य करके दिखाया है । गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय का नाम भारत मे एक सीमा चिन्ह के रूप मे है । इस विश्वविद्यालय ने जो कुछ समीचीन स्वरूप मे किया है वह अत्यन्त आदरणीय और अनुकरणीय है । गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय ने अपने जीवन के यशस्वी ६० वर्ष व्यतीत किय है । मै ईश्ववर मे ऐसी प्रार्थना करता ह कि इस विद्यालय की कीर्तिपताका ७५, १०० और उस से आगे फहरती रहे और इस विश्वविद्यालय अन्य सस्थाओ को पथप्रदर्शन किया करे ऐसी मेरी शुभ निष्ठा है ।

डॉ कालीदास नाग

ससार के विभिन्न क्षेत्रों से महान शिक्षाविज्ञो ने इस अद्भुत सस्था को देखा है और उन्होने इस सस्था की अत्यन्त ऊ ची प्रशसा की है ।

बाबूराम सक्सेना एम० ए०, डी० लिट०
इलाहाबाद यूनिवर्सिटी

महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपदेश के अनुसार शिक्षा प्रणाली को ढालने का जो प्रयत्न आर्य समाज ने किया उस का सर्वोत्तम नमूना गुरुकुल कागडी है। गुरू के साथ प्राय सर्वथा रहकर और अपने जन्मकुल से कम से कम सम्बन्ध रखकर भारतीय बालक आर्य ग्रन्थो का अध्ययन करता हुआ, वर्तमान युग की लौकिक विद्याओ को भी पढता हुआ ब्रह्मचर्यव्रत का पालन सर्वथा पूरा करता हुआ, देश और समाज का आदर्श सभेय युवा बनेगा-- यह गुरुकुल ने करके दिखा दिया। भले ही गौतम, कणाद न पैदा हो सके पर सरकारी नौकरियो और कृपाकटाक्षो को ठुकरा देने वाले सच्चे राष्ट्र सेवक इस कुल ने भारत को दिये है। जिस राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली की योजना महात्मा गाधी ने १९२० मे देश के सामने रखी उस के सारे श्रेष्ठ गुण गुरुकुल प्रणाली मे कार्य रूप मे आ चुके थे। आर्य भाषा के द्वारा विज्ञान की पढाई सुगम और सफल हो सकती है यह गुरुकुल ने पहले ही सिद्ध कर दिया था।

श्री एस० सत्यमूर्ति

आप के विश्वविद्यालय का महान गुण जिसपर मै आप को विशेष रूप से बधाई देना चाहता हू वह ब्रह्मचर्य की भावना है जिसे आप व्यवहार मे लाते है। यह वास्तव मे गुरुकुल है। सस्कृत के एक तुच्छ विद्यार्थी के रूप मे मै आप के विद्यालय को इस महान महत्व पर और सस्कृत की शिक्षा पर बधाई देता हू।

कुंजीलाल दुबे
उप–कुलपति,
दिनांक–फरवरी १९६०
जबलपुर विश्वविद्यालय, जबलपर

सदेश

मुझे यह जानकर हर्ष हुआ कि अप्रैल १९६० मे गुरुकुल कागडी विश्व-विद्यालय, हरिद्वार अपनी हीरक जयन्ती का महोत्सव मना रहा है ।

भारत की उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे गुरुकुल कागडी का एक विशेष स्थान रहा है । गत लगभग ६० वर्षो से गुरुकुल कागडी भारतीय पद्धति से और हिन्दी भाषा मे भारत के नवयुवको को उच्चशिक्षा दे रहा है । यह उसके लिये और सारे भारत के लिये विशेष गौरव की बात है ।

उसके उज्वल भविष्य के लिये मै अपनी शुभ कामनाऐ प्रेषित करता हू ।

नहर का स्नान